पेताम्, (१) (ङ) अवशीर्णाङ्ग-भस्म-धूसर-वल्कल-शयनीय-सनाथैकदेशाम्, (च) इन्दुमण्डलेनेव टङ्कोत्कीर्णेन शङ्खमयेन भिक्षाकपालेनाधिष्ठिताम्, (छ) सन्निहित-भस्मालाबुकां गुहामद्राक्षीत्। (ज)

तस्याश्च द्वारि शिलातले समुपविष्टो वल्कल-शयन-शिरोभाग-विन्यस्तवीणां ततः पर्णपुटेन निर्झरादागृहीतमर्घ्यसलिलं (२) आदाय तां कन्यकां समुपस्थितां "अलमलमतियन्त्रणया, (३) कृतमतिप्रसादेन, भगवति! प्रसीद, विमुच्यतामय-मत्यादरः, त्वदीयमालोकनमपि सर्वपापप्रशमनमघमर्षणमिव पवित्रीकरणायालम्,

(च) अवेति। अवशीर्णे पार्श्वपरिवर्त्तनादौ गलितं यदङ्गभस्म तेन धूसरं यत् वल्कलशयनीयं तद्-वल्कमयी शय्या तेन सनाथः संयुक्तः एकदेशो यस्यास्ताम्।

(छ) इन्द्विति। इन्दुमण्डलेनेव चन्द्रबिम्बेनेव स्थितेन, टङ्केन पाषाणदारणास्त्रेण उत्कीर्णं सम्यक् निर्मितं तेन, शङ्खमयेन भिक्षायाः कपालेन पात्रेण अधिष्ठितामाश्रिताम्। अत्रोपमालङ्कारः।

(ज) सन्नीति। सन्निहिता संस्थापिता भस्मनः भस्मरक्षणार्थां अलाबुः शून्यान्तरा तुम्बी यस्यां ताम्।

(झ) तस्या इति। किञ्च, तस्या गुहाया द्वारि शिलातले समुपविष्टश्चन्द्रापीडस्तां कन्यकामित्य-ब्रवीदिति सम्बन्धः। वल्कलशयनस्य वल्कलमयशय्यायाः शिरोभागे विन्यस्ता वीणा यया ताम्। अतियन्त्रणया मदर्थमत्यन्तक्लेशकरणेन। अतिप्रसादेन कृतं अत्यन्तानुग्रहेणालम्। अघं पापं मृष्यते प्रोञ्छ्यतेऽनेनेति अघमर्षणं "ऋतञ्च सत्यञ्चाभिध्या"दित्यादि सूक्तम्। अलं समर्थम्। अत्रोपमालङ्कारः। आस्यतामुप-विश्यताम्।

ফলের বল্কলদ্বারা নির্ম্মিত পরিষ্কৃত দুইখানা পাদুকা, শিকার উপরে বাঁধা ছিল। (চ) এক-দিকে বল্কলময় একখানি শয্যা ছিল, সে শয্যাখানি, গাত্র হইতে নিপতিত ভস্মে ধূসরবর্ণ হইয়া গিয়াছিল। (ছ) টঙ্ক-(সাবল) দ্বারা নির্ম্মিত শঙ্খময় একটি ভিক্ষা-পাত্র ছিল, সেই ভিক্ষাপাত্রটিকে চন্দ্রমণ্ডলের ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (জ) আর, ভস্ম রাখিবার জন্য একটি অলাবু-পাত্রও সেই গুহার ভিতরে ছিল।

(ঝ) তাহার পর চন্দ্রাপীড় সেই গুহার দ্বারদেশে একখানি পাষাণের উপরে উপবেশন করিলেন; এদিকে সেই কন্যাটিও সেই বল্কলময় শয্যার শিয়রে বীণাটি রাখিয়া পত্রপুটকে করিয়া সেই নির্ঝর হইতে অর্ঘ্যের জল লইয়া উপস্থিত হইল; তখন চন্দ্রাপীড় বলিলেন,— "থা'ক থা'ক, আপনি আমার নিমিত্ত অধিক কষ্ট করিবেন না, অত্যন্ত অনুগ্রহ করিবার প্রয়োজন নাই, দেবি! আপনি প্রসন্ন হউন, এই অতিরিক্ত আদর পরিত্যাগ করুন, আপনার দর্শনও সকল পাপ বিনষ্ট করে এবং অঘমর্ষণ সূক্তের ন্যায় পবিত্র করিতে সমর্থ; অতএব

(१)...युगोपेतां। (२) अर्घजलं। (३) अलमतियन्त्रणया।

आस्यताम्" इत्यब्रवीत् (झ)। अनुरुध्यमानश्च (१) तया तां सर्वामतिथिसपर्य्यामतिदूरावनतेन शिरसा सप्रश्रयं प्रतिजग्राह। (ञ)

कृतातिथ्यया च तया द्वितीयशिलातलोपविष्टया क्षणमिव तूष्णीं स्थित्वा क्रमेण परिपृष्टो दिग्विजयादारभ्य किन्नरमिथुनानुसरण-प्रसङ्गेनागमनमात्मनः सर्वमाचचक्षे (ट)। विदितसकलवृत्तान्ता चोत्थाय सा कन्यका भिक्षाकपालमादाय तेषामायतनतरूणां तलेषु विचचार। अचिरेण च तस्याः स्वयं पतितैः फलैरपूर्य्यत भिक्षाभाजनम्। आगत्य च तेषां फलानामुपयोगाय नियुक्तवती चन्द्रापीड़म् (ठ)।

आसीच्च तस्य चेतसि—'नास्ति खल्वसाध्यं नाम तपसाम्। किमतः परमाश्चर्य्यम्, यदत्र (२) व्यपगतचेतना अपि (३) सचेतना इवास्यै भगवत्यै समति-

---

(ञ) अन्विति। किञ्च, तया कन्यकया अनुरुध्यमानश्चन्द्रापीड़ः। अतिदूरमत्यन्तमवनतं तेन। अतिथेः सपर्य्यां सत्कारं। सप्रश्रयं प्रणयसहितम्।

(ट) कृतेति। किञ्च, तया कन्यकया परिपृष्टश्चन्द्रापीड़ः। आचचक्षे उक्तवान्।

(ठ) विदितेति। किञ्च। तस्याः कन्यकाया भिक्षाभाजनमिति सम्बन्धः। उपयोगाय भक्षणाय।

(ड) आसीदिति। तस्य चन्द्रापीड़स्य। तपसां खल्वसाध्यं नाम नास्ति। तथा च तिथितत्त्वधृतं—"तपोभिः प्राप्यतेऽभीष्टं नासाध्यं हि तपस्यतः। दुर्भगत्वं वृथा लोको वहते सति साधने।" व्यपगतचेतनाश्चेतन्यहीना अपि। फलानि समतिसृजन्तः समर्पयन्तः। वनस्पतयो वृक्षाः। एतत् खलु तपस एव फलमिति भावः। अतएवात्र विशेषेण सामान्यसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

আপনি উপবেশন করুন।" (ঞ) তাহার পর সেই কন্যাটি অনুরোধ করিলে চন্দ্রাপীড় অত্যন্ত অবনত মস্তকে সেই সকল অতিথিসংকার প্রণয়ের সহিত গ্রহণ করিলেন।

(ট) তখন সেই কন্যাটি অতিথিসংকার সম্পন্ন করিয়া, দ্বিতীয় পাষাণখণ্ডের উপরে উপবেশন করিল এবং কিছু কাল নীরবে থাকিয়া, ক্রমে সমস্ত বিষয় জিজ্ঞাসা করিল; তখন চন্দ্রাপীড় দিগ্বিজয় হইতে আরম্ভ করিয়া, কিন্নরদ্বয়ের অনুসরণ-প্রসঙ্গে আগমন-পর্য্যন্ত আপনার সমস্ত বৃত্তান্ত বলিলেন। (ঠ) সমস্ত বৃত্তান্ত অবগত হইয়া সেই কন্যাটি, উঠিয়া ভিক্ষার পাত্রটি লইয়া আয়তনস্থ বৃক্ষের তলে বিচরণ করিতে লাগিল; অচির-কাল-মধ্যেই তাহার সেই ভিক্ষা-পাত্রটি, আপনা আপনি পতিত ফলে পরিপূর্ণ হইয়া গেল। তাহার পর সে আসিয়া, সেই সমস্ত ফল, ভক্ষণ করিবার নিমিত্ত চন্দ্রাপীড়কে অনুরোধ করিল।

(ড) তখন চন্দ্রাপীড়ের মনে হইতে লাগিল যে,—'এই জগতে তপস্যার অসাধ্য কার্য্য

---

(१) अनुबध्यमानश्च। (२) यत्र। (३) विगतचेतना अपि।

सृजन्तः फलान्यात्मानुग्रहमुपपादयन्ति वनस्पतयः (ड)। चित्रमिदमालोकित-मस्माभिरदृष्टपूर्वम्' इत्यधिकतरोपजातविस्मयश्चोत्थाय तमेव प्रदेशमिन्द्रायुध-मानीय व्यपनीतपर्य्याणं नातिदूरे संयम्य निर्झरजलनिर्वर्त्तित-(१) स्नानविधि-स्तान्यमृतस्वादूनि (२) उपयुज्य फलानि, पीत्वा च तुषारशिशिरं प्रस्रवणजल-मुपस्पृश्य चैकान्ते तावदवतस्थे, यावत्तयापि कन्यकया (३) कृतो जल-फल-मूल-मयेष्वाहारेषु प्रणयः। (ढ)

इति परिसमापिताहारां निर्वर्त्तितसन्ध्योचिताचारां शिलातले विश्रब्ध-मुपविष्टां निभृतमुपसृत्य नातिदूरे समुपविश्य चन्द्रापीडः सविनयमब्रवीत् (ण)। "भगवति! त्वत्प्रसाद-प्राप्ति-प्रोत्साहितेन कुतूहले-

(ढ) चित्रमिति। चित्रमाश्चर्य्यम्। व्यपनीतपर्य्याणं अपसारितपल्ययनम्। संयम्य बद्ध्वा। निर्झर-जलेन निर्वर्त्तितो निष्पादितः स्नानविधिर्येन स तादृशश्चन्द्रापीडः। अमृतस्वादूनि पीयूषवत् सुरसानि, तानि फलानि उपयुज्य भुक्त्वा, तुषारवत् शिशिरं शीतलं प्रस्रवणजलं पीत्वा च। अत्रापि तुषारशिशिरपदयोः पर्य्यायतया आपाततः पुनरुक्तताप्रतीतिः परन्तु तुषारवत् शिशिरं शीतलमिति पर्य्यवसानात् पुनरुक्तवदाभासो-ऽलङ्कारः। उपस्पृश्य आचम्य। प्रणय आदरः कृतः आहारः कृत इत्यर्थः।

(ण) इतीति। निर्वर्त्तितो निष्पादितः सन्ध्योचिताचारः सायंकालयोग्यो विधिः सन्ध्यावन्दनादिर्यया ताम्। विश्रब्धं सविश्वासं निश्चिन्तं यथा तथा। निभृतं निःशब्दं यथा तथा।

(त) भगवतीति। त्वत्प्रसादप्राप्त्या तवानुग्रहलाभेन प्रोत्साहितं प्रवर्त्तितं तेन, कुतूहलेन आकुली-

নাই। ইহা অপেক্ষা অধিক আর কি আশ্চর্য্য হইতে পারে? যে, চেতনাবিহীন বৃক্ষসমূহও আজ সচেতনের ন্যায় এই দেবীকে ফল সমর্পণ করিয়া আপনাদিগের প্রতি ইঁহার অনুগ্রহ জন্মাইল। (ঢ) আমি আজ এই আশ্চর্য্য বৃত্তান্ত দেখিলাম, এরূপ পূর্ব্বে কখনও দেখি নাই' এই ভাবে চন্দ্রাপীড়ের আরও অধিক বিস্ময় জন্মিল, তখন তিনি উঠিয়া, ইন্দ্রায়ুধকে সেই স্থানে আনয়ন করিয়া, পালানটি খুলিয়া রাখিয়া অনতিদূরে তাহাকে বন্ধন করিলেন; পরে সেই ঝরণার জলে স্নানকার্য্য সম্পাদন করিয়া, অমৃতের ন্যায় সুস্বাদু সেই সকল ফল ভক্ষণ করিয়া, হিমের ন্যায় শীতল সেই ঝরণার জল পান করিয়া এবং আচমন করিয়া এক দিকে তত কাল অবস্থান করিতে লাগিলেন, যত কাল সেই কন্যাটিও ফল, মূল ও জল আহার করিল।

(ণ) সেই কন্যাটি, এই ভাবে আহার শেষ করিয়া সন্ধ্যাকালের উপযুক্ত কার্য্যগুলি সম্পাদন করিয়া, একখানি পাষাণের উপরে নিশ্চিন্তভাবে উপবেশন করিল; তখন চন্দ্রাপীড় নিঃশব্দে তাহার নিকটে উপস্থিত হইয়া, অনতিদূরে উপবেশন করিয়া বিনয়ের

(१)...निवर्त्तित...। (२) अमृतरसस्वादूनि। (३) कन्यया।

नाकुलीक्रियमाणो मानुषतासुलभो लघिमा बलादनिच्छन्तमपि मां प्रश्नकर्म्मणि नियोजयति (त)। जनयति (१) हि प्रभुप्रसादलवोऽपि प्रागल्भ्यमधीरप्रकृतेः (थ)। स्वल्पाप्येकदेशावस्थाने कालकला (२) परिचयमुत्पादयति (द)। अणुरप्युपचारपरिग्रहः प्रणयमारोपयति (ध)। तद्यदि नातिखेदकरमिव ततः कथनेनात्मानमनुग्राह्यं (३) इच्छामि (न)। अतिमहत् खलु भवद्दर्शनात् प्रभृति मे कौतुकमस्मिन् विषये (प)। कतरन्मरुतामृषीणां गन्धर्वाणां गुह्यकानामप्स-

---

क्रियमाणः अधीरीक्रियमाणः, मानुषतासुलभो मादृशेषु मानुषेषु नितान्तसम्भवपर इत्यर्थः, लघिमा लघुत्वं चञ्चलस्वभाव इति तात्पर्य्यम्।

(थ) नन्वपरिचितस्य सहसा प्रश्ने प्रगल्भताप्रतीतिरिति चेत्तत्राह जनयतीति। हि तथाहि। प्रभुप्रसादलवोऽपि स्वाम्यनुग्रहलेशोऽपि, अधीरप्रकृतेर्जनस्य प्रागल्भ्यं धृष्टतां जनयति। तथा च तपस्विनया प्रभुरूपायास्तवातिथिसत्काराद्देवानुग्रहलाभो मनां प्रगल्भतां जनयतीति स्वीक्रियत एवेति भावः। अतएवात्र सामान्यादप्रस्तुतात् प्रस्तुतस्य विशेषस्य प्रतीतेरप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः।

(द) ननु तथाप्यपरिचितस्य प्रश्नो नोपपद्यत इत्याह स्वल्पापीति। कालकला समयांशः। तथा च इयन्तं कालमेकत्रावस्थानात्त्वं मे परिचितैवासीति भावः।

(ध) अथ तथापि प्रणयाभावेनेष्टानिष्टसम्बन्धाभावात् कथं प्रश्न इत्याह अणुरिति। अणुरपि स्वल्पोऽपि उपचारपरिग्रहः सद्व्यवहारस्वीकारः प्रणयं सौहार्द्दं आरोपयति उपस्थापयति। तथा च तवातिथिसत्कारस्वीकार एव प्रणयमारोपितवानिति भावः। अतएवात्रापि पूर्ववदप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः।

(न) तदिति। तत्तस्मात्। नातिखेदकरं न विशेषक्लेशजनकं, ततस्तदा, कथनेन मज्जिज्ञास्यविषयभाषणेन।

(प) अतीति। "सर्व्वनाम्नो वृत्तिमात्रे पुंवद्भाव" इति वचनात् भवदिति पुंवद्भावः।

সহিত বলিতে লাগিলেন। (ত) 'দেবি! আপনার অনুগ্রহ-লাভেই আমার কৌতুক জন্মাইয়াছে, সেই কৌতুকই আবার মনুষ্যোচিত চপল স্বভাবকে আকুল করিয়া তুলিয়াছে, তাই আমি ইচ্ছা না করিলেও সেই চপল স্বভাবই আমাকে বলপূর্ব্বক প্রশ্নকার্য্যে নিযুক্ত করিতেছে। (থ) কারণ, প্রভুর অনুগ্রহের লেশও, চপল-স্বভাব মনুষ্যের প্রগল্‌ভতা জন্মাইয়া থাকে। (দ) এবং এক জায়গায় অল্পকাল অবস্থান করাও, পরস্পরের পরিচয় জন্মাইয়া থাকে। (ধ) বিশেষতঃ পরস্পরের সদ্ব্যবহার অল্প হইলেও, সে প্রণয় জন্মায়। (ন) অতএব যদি আপনার বিশেষ-ক্লেশ-জনক না হয়, তাহা হইলে আপনার বৃত্তান্ত বলুন, তাহা শুনিয়া আমি আত্মাকে অনুগৃহীত মনে করিতে ইচ্ছা করি। (প) আপনার

---

(१) उपजनयति। (२) एकावस्थाने कालकला, एकदेशावस्थानकालकला। (३) अनुगृह्यमाणं,

रसां वा कुलमनुगृहीतं भगवत्या जन्मना ?। किमर्थं चास्मिन् कुसुमसुकुमारे नवे वयसि व्रतग्रहणम् ? (फ)। क्वेदं वयः, क्वेदं तपः; क्वेयमाकृतिः, क्व चायं लावण्यातिशयः, क्वेयमिन्द्रियाणामुपशान्तिः (ब)। तदद्भुतमिव मे प्रतिभाति। किं निमित्तं वा (१) अनेक-सिद्ध-साध्य-सम्बाधानि (२) सुरलोक-सुभगानि (३) अपहाय दिव्याश्रमपदानि एकाकिनी वनमिदममानुषमधिवससि ? (भ)। कथायं प्रकारः, यत्तैरेव पञ्चभिर्महाभूतैरारब्धमीदृशीं (४) धवलतां धत्ते शरीरम् ? नेदमस्माभिरन्यत्र दृष्टश्रुतपूर्वं

(फ) अथ कस्ते जिज्ञासाविषय इत्याह कतरदिति। बहूनां प्रकर्षेऽपि तर इति कलापटीकायां दुर्गसिंहाभिप्रायात् कतरदिति तरप्रत्ययः। मरुतां देवानाम्।

(ब) क्वेति। इदं वयो नवयौवनमिति भावः। इदं तपो वार्द्धक्य एवाचरणीयमिति भावः। इयमाकृतिरसाधारणसुन्दरीत्याशयः। उपशान्तिः इन्द्रियाणां निवृत्तिः। निरुपमसौन्दर्यवद्यौवनात्मकप्रवृत्तिकाले वार्द्धकात्मकनिवृत्तिकालावलम्बनीयव्रतावलम्बनदर्शनमिव मे प्रश्नकारणमिति भावः। अत्रोभयोरपि विरूपयोः संघटनया विषमालङ्कारः।

(भ) तदिति। प्रतिभाति प्रतीतिविषयो भवति। अनेकैः सिद्धैः साध्यैश्च देवयोनिविशेषैः सम्बाधानि सङ्कुलानि व्याप्तानि, सुरलोकैर्देवगणैस्तेषां विचरणैरित्यर्थः। सुभगानि मनोहराणि, दिव्याश्रमपदानि स्वर्गीयतपःस्थानानि।

(म) कथमिति। प्रकारो विशेषः। तैरेव सर्वेषां शरीरारम्भकाणि तैरेवेत्यर्थः। महाभूतैः क्षित्यप्तेजोमरुद्व्योमात्मकैः, आरब्धं जनितं, शरीरं तवेदं वपुः। इदं धवलवर्णं। दृष्टपूर्वं श्रुतपूर्वं वेत्यर्थः। अतएव महदाश्चर्यमिदमिति भावः।

দর্শন হইতে আরম্ভ করিয়া, এই বিষয়ে আমার অত্যন্ত কৌতুক জন্মিয়াছে। (ফ) আপনি জন্মগ্রহণ করিয়া কোন্ দেবতার বংশ, কোন্ ঋষিবংশ, কোন্ গন্ধর্ব্ববংশ, কোন্ গুহ্যকবংশ কিংবা কোন্ অপ্সরার বংশ অনুগৃহীত করিয়াছেন ? কি জন্যই বা কুসুমের ন্যায় কোমল এই নবীন বয়সে তপস্যা আরম্ভ করিয়াছেন ? (ব) এই বয়সই বা কোথায়, আর এই তপস্যাই বা কোথায়। এই আকৃতি বা কোথায় এবং এই অসাধারণ লাবণ্য বা কোথায়, আর এই ইন্দ্রিয়গণের ভোগ-নিবৃত্তিই বা কোথায়। (ভ) অতএব এই সকল, আমার নিকট অদ্ভুত বলিয়া বোধ হইতেছে। আর কি নিমিত্তই-বা আপনি, বহুতর সিদ্ধ ও সাধ্যগণে পরিপূর্ণ এবং দেবগণের বিচরণে মনোহর স্বর্গীয় আশ্রমসমূহ পরিত্যাগ করিয়া, একাকিনী এই মানুষবিহীন বনে বাস করিতেছেন ? (ম) আর, এই রকমটাই বা কি, যে, পৃথিবী প্রভৃতি সেই পঞ্চ মহাভূতেরই নির্ম্মিত আপনার এই শরীর, এইরূপ ধবলতা ধারণ করিতেছে ?

---

(१) किंवा। (२)...सम्बन्धानि। (३)...सुलभानि। (४) ईदृशं।

वा (१) (म)। अपनयतु नः कौतुकम्, आवेदयतु भवती सर्वमिदम् (य)। इत्येवमभिहिता सा किमप्यन्तर्ध्यायन्ती तूष्णीं मुहूर्त्तमिव स्थित्वा निःश्वस्य स्थूलस्थूलैरन्तर्गतां हृदयशुद्धिमिवादाय निर्गच्छद्भिः, इन्द्रियप्रसादमिव वर्षद्भिः, तपोरसनिस्यन्दमिव स्रवद्भिः लोचन-विषयं धवलिमानमिव द्रवीकृत्य पातयद्भिः, अच्छाच्छैः, अमलकपोलस्थलस्खलितैः, अवशीर्ण-हार-मुक्त-मुक्ताफल-तरलपातैः, अनुबद्धबिन्दुभिः, वल्कलावृत-कुच-शिखर-जर्जरित-शीकरैः, अश्रुभिरामीलित-लोचना निःशब्दं रोदितुमारेभे। (र)

ताञ्च प्ररुदितां दृष्ट्वा चन्द्रापीडस्तत्क्षणमचिन्तयत्—'अहो! दुर्निवारता

(य) अपेति। अपनयतु दूरीकरोतु।

(र) इतीति। स्थूलस्थूलैरित्यादिकं अनुबद्धबिन्दुभिरश्रुभिरित्यस्य विशेषणम्। हृदयशुद्धिं चित्तस्य पवित्रतामादायेव निर्गच्छद्भिः। सर्वेषामश्रूणां विशदत्वादिति भावः। इन्द्रियाणां नयनादीनां प्रसादं निर्मलतां सकामदृष्टिप्रभृतिदोषहीनतां वर्षद्भिरिव। तपांस्येव रसा द्रवास्तेषां निस्यन्दं धारां स्रवद्भिः क्षरद्भिरिव। अत्र निरङ्गकेवलरूपकयोगः। लोचनविषयं दृश्यमानं धवलिमानं श्वेतत्वं द्रवीकृत्य पातयद्भिरिव। अत्र प्रत्येकवाक्य एव क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। अच्छाच्छैरतीवनिर्मलैः। अवशीर्णात् छिन्नात् हारात् मुक्तानां स्खलितानां मुक्ताफलानामिव तरलपातश्चञ्चलभावेन पतनं येषां तैः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। अनुबद्धा अविच्छिन्नभावेनोत्पादिता बिन्दवो यैस्तैः। वल्कलावृतयोः कुचयोः स्तनयोः शिखराभ्यामुन्नताभ्यां जर्जरिताश्चूर्णीकृताः शीकराः कणा यैस्तैः। एतेन स्तनयोरत्यौन्नत्यं काठिन्यञ्च व्यज्यते। अश्रुभिरुपलक्षिता, आमीलितलोचना मुद्रितनयना।

(ल) तामिति। किञ्चेति चार्थः। प्ररुदितामतीवरुदतीं "ग्रन्थर्थे"त्यादिना कर्त्तरि क्तः। व्यसनोपनिपातानां विपदुपस्थितीनां, दुर्निवारता निवारयितुमशक्यता। यदयमाल, अनभिभवनीयां तपस्वितया

আমি পূর্ব্বে অন্য স্থানে এরূপ দেখি নাই, বা শুনিও নাই। (য) আপনি আমার কৌতুক-নিবৃত্তি করুন, এই সমস্ত বিষয় বলুন।" (র) চন্দ্রাপীড় এইরূপ বলিলে, সেই কন্যাটি মনে মনে কোন বিষয় চিন্তা করতঃ কিছু কাল নীরবে থাকিয়া, নিশ্বাস-পরিত্যাগপূর্ব্বক মুদ্রিত-নয়নে নিঃশব্দে রোদন করিতে লাগিল; তখন অত্যন্তনির্ম্মল বড় বড় অশ্রুবিন্দু, তাহার নির্ম্মল গণ্ডস্থল বাহিয়া পড়িতে লাগিল; সেই অশ্রুবিন্দুগুলি, যেন অন্তর্গত চিত্ত-শুদ্ধি লইয়া নির্গত হইতেছিল, ইন্দ্রিয়সমূহের নির্ম্মলতাই যেন বর্ষণ করিতেছিল, তপস্যা-রসের ধারাই যেন বৃষ্টি করিতেছিল এবং দৃষ্টিগোচর ধবলগুণকেই যেন তরল করিয়া নিপাতিত করিতেছিল, ছিন্ন হার হইতে বিগলিত মুক্তার ন্যায় চঞ্চল-ভাবে পড়িতেছিল আর বল্কলাবৃত স্তনযুগলের উপরে পড়িয়া ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র বিন্দুতে পরিণত হইয়া যাইতেছিল।

(ল) তখন চন্দ্রাপীড় তাহাকে রোদন করিতে দেখিয়া চিন্তা করিতে লাগিলেন,—

(१) क्वचित् "वा" शब्दो नास्ति।

व्यसनोपनिपातानाम्, यदीदृशीमप्याकृतिमनभिभवनीयामात्मीयां कुर्वन्ति (ल)। सर्वथा न न कञ्चन स्पृशन्ति शरीरधर्म्माणमुपतापाः (व)। बलवती हि द्वन्द्वानां प्रवृत्तिः (श)। इदमपरमधिकतरमुपजनितं (१) अतिमहन्मनसि मे कौतुकमस्या वाष्पसलिलपातेन (ष)। न ह्यल्पीयसा शोककारणेन चेत्रीक्रियन्त एवंविधा मूर्त्तयः। नहि क्षुद्रनिर्घातपाताभिहता चलति वसुधेति' (स)। संवर्द्धितकुतूहलश्च शोकस्मरणहेतुतामुपगतमपराधिनमिवात्मानमवगच्छन्नुत्थाय प्रस्रवणादञ्जलिना मुखप्रक्षालनोदकमुपनिन्ये (ह)। सा तु तदनुरोधादवि-

अभिभवितुमशक्यां ईदृशीमाकृतिमपि आत्मीयां स्ववशां कुर्वन्ति, ते व्यसनोपनिपाता इति शेषः। कयापि विपदा जनिताद्दुःखादियं रोदितीति भावः।

(व) ननु विषयेष्वनासक्तमीदृशं तपस्विजनं कथं नाम दुःखमाक्रमितुमर्हतीत्याह सर्वथेति। उपतापाः सांसारिकदुःखानि, कञ्चन कञ्चिदपि, शरीरं शरीरधारणमेव धर्म्मो यस्य तं देहिनमित्यर्थः सर्वथा न स्पृशन्ति नापयन्ति, इति न, अपि तु सर्वमेव देहिनमुपतापाः स्पृशन्तीत्यर्थः। सुतरां तपस्विनोऽपि सांसारिकदुःखसम्भव इति भावः।

(श) अथ तपस्वी तपोबलेन कथं नाम दुःखं न निवारयतीत्याह बलेति। हि यस्मात्, द्वन्द्वानां सुखदुःख-शीतोष्णादीनां प्रवृत्तिः शरीरिषूपस्थितिः बलवती। तपस्वित्वेऽपि शरीरिधर्म्मत्वादेव तव द्वन्द्वानां बलवती प्रवृत्तिर्दुर्निवारेति भावः।

(ष) इदमिति। अधिकतरं पूर्वस्मात् कौतुकादतिरिक्तं अतएवातिमहदित्यर्थः। अतो नार्थगतपुनरुक्ततादोषः।

(स) ननु अल्पेनापि शुष्कशोकेन स्त्रीणां वाष्पसलिलसम्भवात् कथं तवातिमहत् कौतुकमित्याह नहीति। चेत्रीक्रियन्ते आश्रयीक्रियन्ते आश्रयितुं शक्यन्त इत्यर्थः। हि तथाहि, क्षुद्रेण स्वल्पेन निर्घातपातेन निर्घातवायुस्पर्शेन अभिहता ताड़िता वसुधा न चलति न कम्पते। अत्र साधर्म्म्येण दृष्टान्तोऽलङ्कारः।

(ह) संवर्द्धितेति। शोकस्मरणस्य हेतुतां निमित्तत्वमुपगतं प्राप्तं, अतएव अपराधिनमिव। मुखप्रक्षालनाय उदकं जलं उपनिन्ये उपस्थापितवान् चन्द्रापीड इति शेषः।

'কি আশ্চর্য্য! বিপদ আসিয়া উপস্থিত হইতে লাগিলে, কেহই তাহা নিবারণ করিতে পারে না; যেহেতু, এইরূপ দুর্দ্ধর্ষ আকৃতিকেও, সেই বিপদ আসিয়া বশীভূত করিয়াছে। (ব) অতএব দুঃখ যে, সর্ব্বপ্রকারেই কোন প্রাণীকে স্পর্শ করিবে না, এ কথা বলা যায় না। (শ) কারণ—সুখ-দুঃখাদির উপস্থিতি অত্যন্ত প্রবল। (ষ) ইহার অশ্রুবর্ষণে, আমার মনে, এই আর একটি, পূর্ব্ব হইতেও অধিক গুরুতর কৌতুক জন্মাইল। (স) যেহেতু, অল্পমাত্র শোকের কারণ, এই জাতীয় মূর্ত্তিকে আশ্রয় করিতে পারে না; কারণ,—অল্পমাত্র নির্ঘাতবায়ুর আঘাতে আহত হইয়া পৃথিবী কম্পিত হয় না।' (হ) চন্দ্রাপীড়ের কৌতুক বৃদ্ধি পাইল বটে;

(१) जनितं।

छिन्न-वाष्पजलधारासन्तानापि किञ्चित्कषायितोदरे प्रक्षाल्य लोचने वल्कलो-पान्तेन वदनमपमृज्य दीर्घमुष्णञ्च निःश्वस्य शनैः शनैः (१) प्रत्यवादीत्। (च)

"राजपुत्र! किमनेनातिनिष्ठुर-(२) हृदयाया मम मन्दभाग्यायाः पापाया जन्मनः प्रभृति वैराग्यवृत्तान्तेनाश्रवणीयेन श्रुतेन (क)। तथापि यदि महत् कुतूहलम्, तत् कथयामि, श्रूयताम्। (ख)

एतत् प्रायेण कल्याणाभिनिवेशिनः श्रुतिविषयमापतितमेव, यथा विबुधसद्मनि अप्सरसो नाम कन्यकाः सन्तीति (३)। तासां चतुर्दश कुलानि, एकं भगवतः कमलयोनेर्मनसः समुत्पन्नम्, अन्यद्वेदेभ्यः सम्भूतम्, अन्यदग्नेरुद्भूतम्, अन्यत् पवनात् प्रसूतम्, अन्यदमृतान्मथ्यमानादुत्थितम्, अन्यज्जलाज्जातम्, अन्यदर्क-

(च) सेति। अविच्छिन्नो विच्छेदमप्राप्तः वाष्पजलधारायाः सन्तानः समूहो यस्याः सा। किञ्चित् कषायिते अश्रुपातेनाविलीकृते रक्ते वा उदरे अभ्यन्तरद्वयं ययोस्ते। वल्कलोपान्तेन परिहितवल्कलाग्रेण।

(क) राजेति। अतिनिष्ठुरं नितान्तनिर्दयं हृदयं यस्यास्तस्याः। अश्रवणीयेन अतीवनिष्ठुरतया श्रवणायोग्येन, श्रुतेन त्वया आकर्णितेन किं फलमिति शेषः।

(ख) तथापीति। तदित्यर्थे तदित्यवाचकमित्यवाचकत्वदोषः, स तु तदेति पाठेनैव समाधेयः।

(ग) एतदिति। कल्याणे मङ्गले अभिनिवेश आग्रहोऽस्यास्तीति तस्य भवतः, एतत् प्रायेण बाहुल्येन श्रुतिविषयं श्रवणगोचरतां आपतितमेव गतमेव, अतो नाधिकं मया वक्तव्यमिति भावः। विशेषेण बुध्यन्ते जानन्तीति विबुधा देवास्तेषां सद्मनि आलये स्वर्गे। कन्यका अविवाहिताः स्त्रियः। कमलयोनेर्ब्रह्मणः। पवनाद्वायोः प्रसूतं जातम्। निष्पतितं निर्गतम्। सौदामिनीभ्यो विद्युद्भ्यः प्रवृत्तं उत्पन्नम्।

কিন্তু তিনিই সেই কন্যাটির শোকস্মৃতির কারণ হইলেন, তাই আপনাকে অপরাধী বলিয়া মনে করিলেন, সুতরাং উঠিয়া, তাহার মুখ-প্রক্ষালনের নিমিত্ত, ঝরণা হইতে অঞ্জলিপূর্ণ করিয়া জল আনয়ন করিলেন। (ক) সেই কন্যাটি, নিজের অশ্রুজলের ধারাসমূহ অবিচ্ছিন্নভাবে পড়িতে লাগিলেও, চন্দ্রাপীড়ের অনুরোধে, ঈষৎ-রক্তবর্ণ নয়নযুগল প্রক্ষালন করিয়া বল্কল-প্রান্তদ্বারা মুখমণ্ডল মার্জ্জনা করিয়া, দীর্ঘ ও উষ্ণ নিশ্বাস-পরিত্যাগপূর্ব্বক ধীরে ধীরে বলিতে লাগিল।

(ক) "রাজপুত্র! আমি পাপিষ্ঠা, আমার হৃদয়ও অত্যন্ত নির্দ্দয়, ভাগ্যও মন্দ, সুতরাং শ্রবণের অযোগ্য আমার এই আজন্ম-বৈরাগ্য-বৃত্তান্ত শুনিয়া আপনার কি ফল হইবে। (খ) তথাপি, আপনার যদি গুরুতর কৌতুক জন্মিয়া থাকে, তবে বলিতেছি, শুনুন।

(গ) আপনি মঙ্গলাভিলাষী; সম্ভবতঃ এই বিষয় আপনার প্রায়ই কর্ণগোচর হইয়াছে যে, দেবলোকে অপ্সরা নামে কতকগুলি কন্যা আছে। তাহাদের চৌদ্দটি বংশ;—তন্মধ্যে

(१) क्वचित् विद्यतेऽन्तर्नास्ति। (२) अतिनिष्ठुर...। (३) क्वचित् इतिशब्दो नास्ति।

किरणेभ्यो निर्गतम्, अन्यत् सोमरश्मिभ्यो निष्पतितम्, (१) अन्यद्भूमेरुद्भूतम्, अन्यत् सौदामिनीभ्यः प्रवृत्तम्, अन्यत्स्वयम्भुवा निर्म्मितम्, अपरं मकरकेतुना समुत्पादितम्, अन्यत्तु दक्षस्य प्रजापतेरतिप्रभूतानां सुतानां (२) मध्ये द्वे सुते (३) मुनिररिष्टा च बभूवतुस्ताभ्यां गन्धर्वैः सह कुलद्वयं जातम्। एवमेतान्येकत्र चतुर्दश कुलानि (ग)। गन्धर्वाणान्तु दक्षात्मजाद्वितयसम्भवं तदेव कुलद्वयं जातम्, तत्र (४) मुनेस्तनयश्चित्रसेनादीनां (५) पञ्चदशानां भ्रातॄणामधिको गुणैः षोड़शश्चित्ररथो नाम समुत्पन्नः (घ)। स किल त्रिभुवन-(६) प्रख्यातपराक्रमो भगवता समस्त-सुर-मौलि-माला-लालित-चरण-नलिनेनाखण्डलेन सुहृच्छब्देनोपबृंहितप्रभावः

स्वयम्भुवा यमेन निर्म्मितं कृतं। मकरकेतुना मदनेन। अतिप्रभूतानामतिबहुलानाम्। गन्धर्वैः सह सङ्गमात् ताभ्यां मुन्यरिष्टाभ्यां सकाशात् कुलद्वयं। मुनेरेकं अरिष्टायाश्चैकं कुलं जातमित्यर्थः। एकत्र करणे समुदितानि इत्यर्थः।

(घ) गन्धर्वाणामिति। दक्षात्मजाद्वितयात् मुन्यरिष्टाख्यात् दक्षकन्याद्वयात् सम्भवं समुत्पन्नं तदेव कुलद्वयं गन्धर्वाणामपि जातं, सन्तानस्य मातापितृउभयनिमित्तकत्वादिति भावः। अत्र कुलद्वयमध्ये। गुणैरधिकः शौर्य्यादिभिर्गरीयान्। चित्ररथो नाम तनयः मुनेस्तदाख्याया दक्षकन्यायाः समुत्पन्नः।

(ङ) स इति। किलेति पुरावार्त्तायाम्। शैशव एव त्रिभुवनप्रख्यातपराक्रमः, समस्तानां सुराणां मौलिमालया मुकुटश्रेण्या लालितं नमस्कारकाले सादरं स्पृष्टं चरणनलिनं पादपद्मं यस्य तेन, भगवता

একটি ভগবান্ ব্রহ্মার মন হইতে উৎপন্ন হইয়াছিল, অন্য একটি বেদ হইতে জন্মিয়াছিল, আর একটি অগ্নি হইতে উদ্ভূত হইয়াছিল, অপর একটি বায়ু হইতে উৎপন্ন হইয়াছিল, আর একটি মথ্যমান অমৃত হইতে উঠিয়াছিল, অন্য একটি জল হইতে জন্মিয়াছিল, অপর একটি সূর্য্যের কিরণ হইতে নির্গত হইয়াছিল, অন্য একটি চন্দ্রের রশ্মি হইতে নিঃসৃত হইয়াছিল, আর একটি পৃথিবী হইতে উৎপন্ন হইয়াছিল, অপর একটি বিদ্যুৎ হইতে জন্মিয়াছিল, যম অপর একটি সৃষ্টি করিয়াছিলেন, কামদেব আর একটি উৎপাদন করিয়াছিলেন এবং দক্ষ-প্রজাপতির বহুতর কন্যা জন্মিয়াছিল, তাহাদের মধ্যে মুনি ও অরিষ্টা নামে দুইটি কন্যা ছিল, গন্ধর্ব্বদের সহিত সম্মিলনে সেই মুনি ও অরিষ্টা হইতে আর দুইটি বংশ জন্মে ; এই ভাবে এইগুলিকে একত্র করিলে চৌদ্দটি বংশ হয়। (ঘ) মুনি ও অরিষ্টা নামে দক্ষের কন্যা দুইটি হইতে, যে বংশ দুইটি জন্মে, তাহাই কিন্তু সেই গন্ধর্ব্বদিগেরও বংশ ; সেই বংশদ্বয়ে চিত্রসেন প্রভৃতি অপর পঞ্চদশ ভ্রাতার মধ্যে সর্ব্বগুণে শ্রেষ্ঠ, ষোড়শ চিত্ররথ নামে মুনির একটি পুত্র জন্মগ্রহণ করে। (ঙ) বাল্যকালেই সেই চিত্ররথের পরাক্রম ত্রিভুবনে বিখ্যাত

---

(१) निपतितं। (२) कन्यकानां। (३) द्वौ सुतौ। (४) तत्र। (५) सेनादीनां। (६) सकलत्रिभुवन...।

सर्वेषां गन्धर्वाणामाधिपत्यमसितलता-मरीचि-निचय-मेचकितेन बाहुना समुपार्जितं शौर्य्य एवाप्तवान् (ङ)। इतश्च नातिदूरे तस्यास्माद्भारतवर्षादुत्तरेणानन्तरे किम्पुरुषनाम्नि वर्षे वर्षपर्वतो हेमकूटो नाम निवासः (च)। तत्र च तद्भुजयुगल-(१) परिपालितान्यनेकानि गन्धर्वशतसहस्राणि प्रतिवसन्ति। तेनैव चेदं चैत्ररथं नामातिमनोहरं काननं निर्म्मितम्, इदञ्चाच्छोदाभिधानमतिमहत् सरः खानितम्, (२) अयञ्च भवानीपतिरुपरचितो भगवान् (छ)। अरिष्टायास्तु पुत्रस्तुम्बुरुप्रभृतीनां सोदर्य्याणां षण्णां ज्येष्ठो हंसो नाम जगद्विदितो गन्धर्वः (३) तस्मिन् द्वितीये गन्धर्वकुले गन्धर्वराजेन चित्ररथेनैवा-

---

चाखण्डलेन इन्द्रेण, सुहृच्छब्देन सखिशब्दप्रयोगेण उपबृंहितः परिवर्द्धितः प्रभावः प्रतापो यस्य सः, स चित्ररथः, असितलतायाः मरीचिनिचयेन किरणसमूहेन मेचकितः श्यामलीकृतस्तेन तयोक्तेन बाहुना समुपार्जितं, सर्वेषां गन्धर्वाणामाधिपत्यं आप्तवान् लब्धवान्।

(च) इत इति। किञ्च इतो नातिदूरे। उत्तरेणानन्तरे अव्यवहितोत्तर इत्यर्थः। हेमकूटो नाम वर्षपर्वतः, तस्य चित्ररथस्य, निवसत्यस्मिन्निति निवास आश्रयस्थानम्।

(छ) तत्रेति। किञ्च, तत्र हेमकूटे। तस्य चित्ररथस्य भुजयुगलेन परिपालितानि। गन्धर्वाणां शतसहस्राणि समूहाः। चित्ररथस्येदमिति चैत्ररथं। काननमुपवनम्। खानितं भृत्यैरिति शेषः। भवानीपतिः शिवमूर्त्तिरित्यर्थः उपरचितो निर्म्माय प्रतिष्ठापितः। अत्र भवस्य पत्नीति भवानी तस्याः पतिरिति भवान्याः पत्यन्तरप्रतीतिकारित्वाद्विरुद्धमतिकारिता दोषः, स च गौरीपतिरिति पाठेन समाधेयः।

(ज) अवशिष्टमरिष्टायाः कुलं परिचाययति अरिष्टाया इति। समाने अभिन्ने उदरे शयिता इति सोदर्य्याः सहोदरास्तेषां। राज्यपदं राजत्वम्।

হইয়াছিল এবং সমস্ত দেবগণ কিরীটসমূহদ্বারা যাঁহার চরণকমল সাদরে স্পর্শ করেন, সেই ভগবান্ দেবরাজ ইন্দ্র, 'সখা' বলিয়া সম্বোধন করিয়া, সেই চিত্ররথের প্রভাব পরিবর্দ্ধিত করিয়াছিলেন; এ হেন চিত্ররথ, তরবারির কিরণসমূহে শ্যামবর্ণ স্বকীয় বাহুদ্বারা অর্জ্জন করিয়া, সকল গন্ধর্ব্বদিগের আধিপত্য লাভ করেন। (চ) এস্থান হইতে অনতিদূরে, এই ভারতবর্ষের অব্যবহিত উত্তরদিকে কিম্পুরুষ নামে একটি বর্ষ আছে, তাহাতে আবার হেমকূট নামে একটি বর্ষপর্ব্বত আছে, সেই হেমকূটই চিত্ররথের বাসস্থান। (ছ) এবং সেই হেমকূট পর্ব্বতে, চিত্ররথের বাহুযুগলদ্বারা পরিরক্ষিত হইয়া বহুতর গন্ধর্ব্বসমূহ বাস করিতেছেন। আর সেই চিত্ররথই, অত্যন্ত মনোহর চৈত্ররথ নামে এই উদ্যানটি নির্ম্মাণ করিয়াছেন এবং অচ্ছোদনামে এই অতিবিশাল সরোবরও তিনিই খনন করাইয়াছেন, আর এই ভগবান্ মহাদেবের প্রতিমূর্ত্তিও তিনিই নির্ম্মাণ করিয়া প্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন। (জ) এদিকে, সেই দ্বিতীয়

---

(১) তদ্ভুজযুগ...। (২) নিখানিতং। (৩) অরিষ্টায়াস্তু পুত্রস্তস্মিন্ দ্বিতীয়ে...।

भिषिक्तो बाल एव राज्यपदमासादितवान् (ज)। अपरिमितगन्धर्वबलपरिवारस्य (१) तस्यापि स एव गिरिरधिवासः (झ)। यत्तु तत् सोममयूखसम्भवमप्सरसां कुलं, तस्मात् किरणजालानुसार-(२) गलितेन सकलेनेव रजनिकर-कला-कलाप-लावण्येन निर्म्मिता त्रिभुवननयनाभिरामा भगवती द्वितीयेव गौरी, गौरीति नाम्ना (३) हिमकर-(४) किरणावदातवर्णा कन्यका प्रसूता (ञ)। ताञ्च द्वितीयगन्धर्वकुलाधिपतिः (५) हंसो मन्दाकिनीमिव क्षीरसागरः प्रणयिनीमकरोत् (ट)। सा तु भगवता मकरकेतनेनेव (६) रतिः, शरत्समयेनेव

(झ) अपरीति। अपरिमितं गन्धर्वबलं गन्धर्वसैना परिवारः परिजनो यस्य तस्य, तस्यापि हंसस्य स एव गिरिर्हेमकूटः, अधिवसत्यस्मिन्नित्यधिवासो निवासस्थानम्।

(ञ) यदिति। तत् पूर्वोक्तं, सोममयूखसम्भवं चन्द्रकिरणेभ्यो जातं। तस्मात् कुलात् कन्यका प्रसूता जातेत्यन्वयः। किरणजालस्य अनुसारेण अनुसरणक्रमेण गलितं क्षरितं तेन, सकलेन, रजनिकरस्य चन्द्रस्य यः कलानां कलापः समूहस्तस्य लावण्येन निर्म्मितेव, नितान्तनिर्म्मलशुभ्रत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। त्रिभुवनस्य त्रिजगद्वासिनो जनस्य नयनाभिरामा नेत्राह्लादकरी। द्वितीया भगवती गौरी पार्वतीव। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः। हिमकरस्य चन्द्रस्य किरणवत् अवदातः शुभ्रो वर्णो यस्याः सा। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(ट) तामिति। किञ्च, द्वितीयगन्धर्वकुलाधिपतिर्हंसः क्षीरसागरो मन्दाकिनीमिव तां गौरीं प्रणयिनीं पत्नीमकरोदित्यन्वयः। अत्र श्रौत्युपमालङ्कारः।

(ठ) सेति। मकरकेतनेन मदनेन रतिरिव, शरत्समयेन कमलिनीव हंसेन सह संयोजिता विधिना

गন্ধর্ব্ব-বংশে, হংসনামে অরিষ্টার একটি পুত্র জন্মগ্রহণ করেন, তিনিই তুম্বুরু প্রভৃতি অপর ছয় সহোদরের মধ্যে জ্যেষ্ঠ এবং গন্ধর্ব্বরাজ চিত্ররথকর্তৃক বালক অবস্থাতেই অভিষিক্ত হইয়া রাজত্ব লাভ করেন। (ঝ) তিনি অসংখ্য গন্ধর্ব্ব-সৈন্যে পরিবেষ্টিত থাকেন এবং সেই হেমকূট পর্ব্বতই তাঁহারও বাসস্থান। (ঞ) এদিকে, চন্দ্র-রশ্মি হইতে সেই যে অপ্সরার বংশটি জন্মিয়াছিল, তাহা হইতে দ্বিতীয় ভগবতী পার্ব্বতীর ন্যায় গৌরী নামে একটি কন্যা জন্মগ্রহণ করেন, চন্দ্রের কিরণ বাহিয়া বিগলিত, কলাসমূহের সমস্ত লাবণ্যদ্বারাই যেন বিধাতা সেই কন্যাটিকে সৃষ্টি করিয়াছিলেন; এবং সেই কন্যাটি ত্রিজগতের লোকের নয়নানন্দ জন্মাইতেন আর তাঁহার বর্ণও চন্দ্র-কিরণের ন্যায় শুভ্র ছিল। (ট) ক্ষীরোদসাগর যেমন গঙ্গাকে প্রণয়িনী করিয়াছেন, দ্বিতীয় গন্ধর্ব্ব-কুলাধিপতি মহারাজ হংসও তেমন সেই গৌরীকে প্রণয়িনী করেন। (ঠ) ভগবান্ কামদেবের সহিত রতির ন্যায় এবং শরৎকালের সহিত পদ্মিনীর

(१)···परिचारकस्य। (२) सोमपीयूषसम्भूतानामप्सरसां कुलं, तस्मात् किरणजालानुसार...।
(३) गौरीपतिनाम्ना। (४) हिमकिरण..., रजनीकर...। (५) द्वितीयकुलाधिपतिः। (६) मकरकेतुनेव।

कमलिनी, हंसेन संयोजिता सदृशसमागमोपजनितामतिमहतीं मुदमुपगतवती निखिलान्तःपुरस्वामिनी च तस्याभवत् (ठ)। तयोश्च तादृशयोर्महात्मनोरहमीदृशी (१) विगतलक्षणा शोकाय केवलमनेकदुःखसहस्रभाजनमेकैवात्मजा (२) समुत्पन्ना (ड)। तातस्त्वनपत्यतया सुतजन्मातिरिक्तेन महोत्सवेन मम जन्माभिनन्दितवान्। अवाप्ते च दशमेऽहनि कृतयथोचितसमाचारो महाश्वेतेति यथार्थमेव नाम कृतवान् (ढ)। साहं पितृभवने बालतया कलमधुरप्रलापिनी वीणेव गन्धर्वाणामङ्कादङ्कं सञ्चरन्ती अविदित-स्नेह-शोकायास-मनोहरं (३) शैशवमतीतवती (४) (ण)। क्रमेण च

सङ्गमिता सा गौरी, सदृशेनानुरूपेण समागमेन सम्मेलनेन उपजनिता। मुदमानन्दं उपगतवती लब्धवती। तस्य हंसस्य निखिलानां अन्तःपुराणां तत्स्थरमणीनामित्यर्थः स्वामिनी चाभवत्। अत्र श्रौतोपमयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ड) तयोरिति। किञ्च। विगतलक्षणा करतलादिगतध्वजवज्रादिशुभचिह्नहीना। अनेकं बहुविधं यद्दुःखसहस्रं दुःखसमूहस्तस्य भाजनं पात्रम्।

(ढ) तात इति। अनपत्यतया मदन्यसन्तानहीनतया। अभिनन्दितवान् प्रशंसितवान्। कृतो यथोचितः समाचारो वृद्धिश्राद्धादिव्यवहारो येन सः, तात इति सम्बन्धः। यथार्थमेव मम शरीरस्य श्वेतवर्णत्वादिति भावः।

(ण) सेति। वीणेव कलमस्फुटं मधुरञ्च प्रलपितुं भाषितुं शीलं यस्याः सा। अविदितैर्विशेषज्ञानानुदयादनवगतैः स्नेहशोकायासैर्हेतुभिः मनोहरं तत्तत्कृताकुलताऽभावात् सुन्दरं। अत्र श्रौतोपमालङ्कारः।

ন্যায়, মহারাজ হংসের সহিত সম্মিলিত হইয়া সেই গৌরী, অনুরূপসম্মেলন-জনিত অত্যন্ত আনন্দ অনুভব করিতে লাগিলেন এবং মহারাজ হংসের অন্তঃপুরবাসিনী সমস্ত রমণীগণের স্বামিনী হইলেন। (ড) তদনন্তর, সেইরূপ মহাত্মা হংস ও গৌরীদেবীর শোকের নিমিত্তই, শুভলক্ষণবিহীন ও নানাবিধ দুঃখসমূহের ভাজন আমিই কেবল একমাত্র কন্যা জন্মগ্রহণ করিলাম। (ঢ) কিন্তু পিতৃদেব, অন্য-সন্তান-বিহীন বলিয়া, পুত্রজন্ম অপেক্ষাও অতিরিক্ত মহোৎসবের অনুষ্ঠান করিয়া আমার জন্মকে অভিনন্দিত করিলেন; এবং দশম দিন উপস্থিত হইলে যথোচিত-আচার-সম্পাদনপূর্ব্বক 'মহাশ্বেতা' এইরূপ আমার যথার্থ নামকরণই করিলেন। (ণ) সেই আমি পিতৃগৃহে শিশুত্বনিবন্ধন বীণার ন্যায় অস্পষ্ট ও মধুর-ভাষিণী হইয়া গন্ধর্ব্বগণের মধ্যে একের ক্রোড় হইতে অপরের ক্রোড়ে বিচরণ করিতাম, এবং স্নেহ, শোক ও কষ্ট কাহাকে বলে, তাহা জানিতাম না বলিয়া মনোহর সেই শৈশবকাল অতিক্রম করিলাম।

---

(१) महात्मनोर्महता क्लेशेनाभिलाषेण कालेन च केवलं। (२) विपन्नज्या केवलं…।

(३)…स्नेहशोकायासं। (४) अतिनीतवती।

क्रतं मे वपुषि वसन्त इव मधुमासेन, मधुमास इव नवपल्लवेन, नवपल्लव इव कुसुमेन, कुसुम इव मधुकरेण, मधुकर इव मदेन, नवयौवनेन पदम्। (त)

अथ विजृम्भमाण-नव-नलिन-वनेषु, (थ) अकठोर-चूत-कलिका-कलाप-क्रत-कामुकोत्कलिकेषु, (द) कोमल-मलय-मारुतावतार-तरङ्गितानङ्ग-ध्वजांशुकेषु, (ध) मद-कलित-कामिनी-गण्डूष-सीधु-सेक-पुलकित-वकुलेषु, (न) मधुकर-कुल-कलङ्क-कालीक्रत-कालेयक-कुसुम-कुड्मलेषु, (१) (प) अशोकतरु-

---

(त) क्रमेणेति। किञ्च। वसन्ते काल इव मधुमासेन चैत्रमासेन। मधुकरेण भ्रमरेण। मधुकरे तदानीन्तनभ्रमरे। मे मम वपुषि नवयौवनेन पदं आस्पदं क्रतम्। अत्रोत्तरोत्तरमुपमेयानामुपमानत्वकल्पनात् रशनोपमालङ्कार:।

(थ) अथेति। अथानन्तरं अहं मधुमासदिवसेष्वेकदा अम्बया सह इदमच्छोदं सर: स्नातुमभ्यागममिति दूरेणान्वय:। अत्र सप्तमीबहुवचनान्तपदानि मधुमासदिवसेष्विति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। विजृम्भमाणानि प्रस्फुटन्ति नवानि नलिनानां पद्मानां वनानि येषु तेषु।

(द) अकठोरेति। अकठोरैरनुत्पन्नत्वात् कोमलै: चूतकलिकानां आम्रमुकुलानां कलापै: समूहै: क्रता कामुकानां जनानां उत्कलिका उत्कण्ठा येषु तेषु।

(ध) कोमलेति। कोमलस्य मन्दमन्दसञ्चारिण: मलयमारुतस्य अवतारेण उपस्थित्या तरङ्गितानि सञ्चालितानि अनङ्गध्वजांशुकानि मदनध्वजस्यपताका येषु तेषु। वसन्तकाले महोत्सवाय प्रायेण मदन-ध्वजोत्थापनादिति भाव:।

(न) मदेति। मदकलितानां मद्यपानजनितमत्तताव्याप्तानां कामिनीनां गण्डूषसीधूना मुखपूरितमद्यानां सेकेन पुलकिता: पुलकवत्सञ्जातमुकुला: वकुला हक्षा येषु तेषु। "पादाघातादशोकं विकसति वकुलं योषितामास्यमद्यै"रिति कविसमयप्रसिद्धेरिति भाव:।

(प) मधुकरेति। मधुकरकुलं भ्रमरसमूह एव कलङ्कचिह्नं मधुकरकुलं कलङ्क इव इति वा, तेन

(ত) তাহার পর, বসন্তকালে যেমন চৈত্রমাস, চৈত্রমাসে যেমন নবপল্লব, নবপল্লবে যেমন পুষ্প, পুষ্পে যেমন ভ্রমর এবং ভ্রমরে যেমন মত্ততা আসিয়া আবির্ভূত হয়, সেইরূপ নবযৌবন আসিয়া আমার শরীরে আবির্ভূত হইল।

(থ) তাহার পর, বসন্তকালে আমি এক দিন আমার মাতার সহিত এই অচ্ছোদ সরোবরে স্নান করিতে আসিয়াছিলাম। তখন, নূতন পদ্মফুল ফুটিতেছিল; (দ) আমের কোমল কলিকাগুলি, কামুক লোকের উৎকণ্ঠা জন্মাইতেছিল; (ধ) মৃদু মন্দ মলয়-সমীরণের আগমনে মদনধ্বজের পতাকাসমূহ সঞ্চালিত হইতেছিল; (ন) মদ-মত্ত কামিনীগণের মুখমদ্য-সেচনে বকুলবৃক্ষে মুকুল জন্মিয়াছিল; (প) কলঙ্কের ন্যায় ভ্রমরগণ পতিত হইয়া, দারুহরিদ্রার

---

(१)···कालेयककुड्मलेषु।

ताड़ना-रणित-रमणी-मणि-(१) नूपुर-झङ्कार-सहस्र-मुखरेषु, (फ) विकस-न्मुकुल-परिमल-पुञ्जितालिजाल-मञ्जु-शिञ्जित-सुभग-सहकारेषु, (ब) अविरल-कुसुम-धूलि-वालुका-पुलिन-धवलित-धरातलेषु, (भ) मधु-(२) मद-विड़म्बित-मधुकरी-(३) कदम्बक-संवाह्यमान-लता-दोलेषु, (म) उत्फुल्ल-पल्लव-लवली-(४) लीयमान-मत्त-कोकिलोल्लासित-मधु-शीकरोद्दाम-(५) दुर्द्दिनेषु, (य) प्रोषित-जन-

---

कालीकृतानि कृष्णवर्णीकृतानि कालेयकानां दारुहरिद्राणां कालीयचन्दनानां वा कुसुमानि कुड्मलानि मुकुलानि च येषु तेषु। अत्र रूपकोपमयोः सन्देहसङ्करः वृत्त्यनुप्रासश्चेत्युभयोः पुनः संसृष्टिः।

(फ) अशोकेति। अशोकतरुषु ताड़नाभिः पुष्पविकासाय पादप्रहारैः रणिताः शब्दिता ये रमणीनां मणिनूपुरास्तेषां झङ्कारसहस्रेण मुखराः शब्दायमानास्तेषु।

(ब) विकसदिति। विकसतां मुकुलानां परिमलेन गन्धेन पुञ्जितस्य समवेतीकृतस्य अलिजालस्य भ्रमरसमूहस्य मञ्जुशिञ्जितैर्मनोहररवैः सुभगा रमणीयाः सहकारा आम्रवृक्षा येषु तेषु। अत्र वृत्त्यनुप्रासो-ऽलङ्कारः।

(भ) अविरलेति। अविरला घनाः कुसुमानां धूलयः परागा एव वालुकापुलिनानि सैकतानि, अविरलकुसुमधूलयो वालुकापुलिनानीवेति वा, तैर्धवलितं शुभ्रीकृतं धरातलं येषु तेषु। अत्रापि रूपकोपमयोः सन्देहसङ्करः।

(म) मध्विति। मधुमदेन पुष्पमधुपानजनितमत्ततया विड़म्बितं विह्वलीकृतं यत् मधुकरीकदम्बकं भ्रमरीगणस्तेन संवाह्यमानाः सञ्चाल्यमानाः लता एव दोला येषु तेषु। अत्र निरङ्गकेवलरूपकानुप्राणिता समासोक्तिरलङ्कारः, मद्यपानमत्ततरुणीदोलासंवाहनकार्य्यप्रतीतेः।

(य) उत्फुल्लेति। उत्फुल्लानि प्रकाशितानि पल्लवानि यासां तासु, लवलीषु लीयमाना गुप्तमवतिष्ठमाना ये मत्तकोकिलास्तैरुल्लासितं आलोड्य वहिष्कृतं यन्मधु पुष्परसस्तस्य शीकरैः कणैः उद्दाममत्यन्तं दुर्द्दिनं वृष्टिर्येषु तेषु।

पুষ্প ও কলিকাগুলিকে কৃষ্ণবর্ণ করিয়াছিল; (ফ) অশোকবৃক্ষে চরণপ্রহার করায় শব্দায়মান রমণীগণের মণিময় নূপুরের ঝঙ্কারে দিক্‌সকল মুখরিত হইতেছিল; (ব) বিকসিত কলিকা-সমূহের সৌরভে সমবেত ভ্রমরগণের মনোহর রবে আম্রবৃক্ষগুলি মনোহর হইয়াছিল; (ভ) বালুকাময় পুলিনের ন্যায় ঘন ঘন পুষ্পরেণুতে ভূতল ধবলবর্ণ করিয়াছিল; (ম) পুষ্পের মধুপানে মত্ততাবশতঃ বিহ্বল হইয়া ভ্রমরীগণ লতারূপ দোলা সঞ্চালন করিতেছিল; (য) মত্ত-কোকিলগণ নোয়াড়ির বিকসিত পল্লবের অন্তরালে লুক্কায়িত থাকিয়া, তাহার ফুলের মধু

---

(१)...ताड़नरणित-रमणीयमणि...। (२) असकृन्मधु...। (३)...मधुकर।
(४)...वल्ली...। (५)...उद्गम...।

जाया-जीवोपहार-हृष्ट-मन्मथास्फालित-(१) चाप-रव-भय-स्फुटित-पथिक-हृदय-रुधिरार्द्रीकृत-(२) मार्गेषु, (३) (र) अविरत-पतत्-कुसुमशर-पतत्रि-पत्र-(४) सूत्‌कार-बधिरीकृत-दिङ्मुखेषु, (ल) दिवापि प्रवृत्तान्तर्मदन-(५) रागान्धाभिसारिका सार्थ-सङ्कुलेषु, (व) उद्वेल-रति-रस-सागर-पूर-प्लावितेषु, (श) सकल-जीवलोक-हृदयानन्द-दायकेषु, (६) मधुमासदिवसेषु (ष) एकदाहमम्बया

(र) प्रोषितेति। प्रोषितजनानां विदेशस्थलोकानां या जाया विरहविशीर्णा भार्यास्तासां जीवस्य जीवनस्य उपहारेण मदनवेदनया मरणात् तदीयजीवनरूपोपायनलाभेनेत्यर्थः, हृष्टः सन्तुष्टो यो मन्मथस्तेन आस्फालितस्य कामिजनेषु शरक्षेपाय मुहुर्मुहुराकृष्टस्य, चापस्य धनुषो रवात् शब्दाद्भयेन स्फुटितानां विदीर्णानां पथिकहृदयानां विरहिजनवक्षसां रुधिरैः आर्द्रीकृता मार्गाः पन्थानो येषु तेषु। अत्र तादृशरुधिरैर्मार्गाणामार्द्रीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः।

(ल) अविरतेति। अविरतं पततां कामिजनं प्रति धावतां कुसुमशरपतत्रिणां मदनबाणानां यानि पत्राणि पक्षास्तेषां सूत्कारेण वेगगमनकालीन-'सूत्' इत्यव्यक्तशब्देन बधिरीकृतानि दिङ्मुखानि तत्तद्दिग्वर्त्तिजनश्रोत्राणि येषु तेषु। अत्रापि बधिरीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः।

(व) दिवेति। दिवापि दिनेऽपि, प्रवृत्तो जातः अन्तश्चित्ते यो मदनरागः कामासक्तिस्तेन अन्धानां विह्वलानां अभिसारिकाणां रमणाय सङ्केतस्थलं गच्छन्तीनां कामिनीनां सार्थेन समूहेन सङ्कुलेषु व्याप्तेषु।

(श) उद्वेलेति। उद्वेलो वेलामुच्छलितः रतिरसः सुरतानुराग एव सागरः अगाधत्वात् समुद्रस्तस्य पूरेण प्रवाहेण प्लावितेषु। अत्र निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः।

(ष) सकलेति। सकलानां जीवलोकानां हृदयानन्दं ददतीति तेषु, मधुमासस्य चैत्रमासस्य दिवसेषु।

বাহির করিতেছিল, তাহাতে মধুবিন্দুর অত্যন্ত বৃষ্টি হইতেছিল ; (র) বিদেশস্থ লোকদিগের বিরহিণী প্রণয়িনীগণের জীবন উপহার পাইয়া সন্তুষ্টচিত্তে কামদেব নিজের ধনু বারংবার আস্ফালন করিতেছিলেন, তাহার শব্দে, ভয়ে বিরহীদিগের হৃদয় বিদীর্ণ হইয়া যাইতেছিল ; সেই হৃদয়ের রক্তে পথ সকল আর্দ্র হইতেছিল ; (ল) কামদেবের শর, অনবরত কামীদিগের প্রতি পতিত হইতেছিল, সেই শরসমূহের কঙ্কপত্রের 'সূৎকার' ধ্বনিতে সমস্ত দিঙ্মণ্ডল বধির করিয়া তুলিয়াছিল ; (ব) মনের ভিতরে উৎপন্ন কামাবেশে বিহ্বল হইয়া কামিনীগণ দিনের বেলাও সঙ্কেতস্থানে যাইতেছিল ; (শ) রমণানুরাগরূপ উচ্ছলিত সমুদ্রের প্রবাহে সমস্ত প্লাবিত করিতেছিল ; (ষ) এবং সেই চৈত্রমাসের দিনগুলি সকল প্রাণিগণের হৃদয়েই

---

(१)...हृष्टमन्मथेषु, मन्मथास्फालित...।

(२)...आर्द्रमार्गेषु। (३) अत्र 'किंशुकसमाकीर्णेषु' इत्यधिकः पाठः क्वचित्।

(४)...पत्रबधिरीकृत..., पत्रफूत्कारबधिरीकृत...। (५) प्रवृत्तमदन...। (६)...आनन्दकेषु।

मङ्ग मधुमास-विस्तारित-शोभं प्रोत्फुल्ल नव-नलिन कुमुद-कुवलय-कह्लारमिद-मच्छोदं सर स्नातुमभ्यागमम् (१) (ख)। अत्र च स्नानार्थमागतया भगवत्या पार्वत्या तटशिलातलेषु विलिखितानि सभृङ्गरिटीनि (२) पांशु-निमग्न-कृश-पद-मण्डलानुमित-मुनिजन-प्रणाम-प्रदक्षिणानि त्र्यम्बकप्रतिबिम्बकानि वन्द-माना, (ङ) भ्रमर-भर-भुग्न-(३) गर्भ केसर-जर्जर-कुसुमोपहार-(४) रम्योऽयं लतामण्डपः, (च) परभृत-नख-कोटि-पाटित-कुड्मल-नाल-विवर-(५) विगलित-

(ख) एकदेति। अम्बया जनन्या। मधुमासेन चैत्रेण विस्तारिता अधिकमुत्पादिता शोभा यस्य तत्, तथा प्रोत्फुल्लानि प्रस्फुटितानि, नवानि नूतनानि कुमुदानि श्वेतोत्पलानि, कुवलयानि नीलोत्पलानि, कह्लाराणि रक्तोत्पलानि च यस्मिन् तत्।

(ङ) अत्रेति। तटशिलातलेषु तीरस्थपाषाणोपरिभागेषु विलिखितानि रेखया निर्मितानि। भृङ्गरिटिना तदाख्यशिवद्वारपालमूर्त्या सह विद्यमानानीति सभृङ्गरिटीनि। "भृङ्गरिटिः (पु) शिवद्वार-पालः।" इति शब्दकल्पद्रुमः। तथा पांशुषु धूलिषु निमग्नैः अतएव कृशैः क्षुद्रतया प्रतीयमानैः पद-मण्डलैश्चरणचिह्नसमूहैः अनुमितानि मुनिजनानां प्रणामप्रदक्षिणानि येषां तानि। त्र्यम्बकस्य शिवस्य प्रति-बिम्बकानि प्रतिमूर्त्तीः, वन्दमाना नमस्कुर्वाणा, अहं व्यचरमिति परेणान्वयः।

(च) भ्रमरेति। भ्रमराणां भरेण भुग्ना वक्रीकृताः, गर्भकेसरा मध्यवर्त्तिकिञ्जल्का येषां तानि, अतएव जर्जराणि शतच्छिद्राणि यानि कुसुमानि तेषामुपहारेण तरुभिर्लताभिश्च पातनेन रम्यो मनोहरः।

(छ) परेति। परभृतानां कोकिलानां नखकोटिभिर्नखराग्रैः पाटितानां विदारितानां कुड्मलनालानां

আনন্দ জন্মাইতেছিল। (খ) এবং সেই চৈত্রমাস এই অচ্ছোদ সরোবরের শোভা বৃদ্ধি করিয়াছিল, আর, এই সরোবরে নূতন পদ্ম এবং শ্বেত, নীল ও রক্ত উৎপল ফুটিয়াছিল। (ঙ) ভগবতী পার্ব্বতী, এই অচ্ছোদসরোবরে স্নান করিতে আসিয়া, তীরবর্ত্তী বহুতর প্রস্তরখণ্ডের উপরে অনেকগুলি শিবের প্রতিমূর্ত্তি অঙ্কিত করিয়া গিয়াছিলেন, তাহার প্রত্যেকটির পার্শ্বেই ভৃঙ্গরিটির (শিবের দ্বারপালের) প্রতিমূর্ত্তিও ছিল; মুনিগণ সেই শিবের প্রতিমূর্ত্তিগুলিকে প্রদক্ষিণ করিয়া যে প্রণাম করিয়া গিয়াছিলেন, তাহা তাঁহাদের ধূলি-নিমগ্ন ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র পদচিহ্ন দেখিয়া অনুমান হইয়াছিল; আমিও সেই মূর্ত্তিগুলিকে নমস্কার করিতে লাগিলাম; (চ) বৃক্ষ ও লতা হইতে জীর্ণ পুষ্প সকল পতিত হইয়াছে, ভ্রমরের ভরে তাহার ভিতরের কেসরগুলি বক্র হইয়া পড়িতেছে, তাহাতে এই লতামণ্ডপটি সুন্দর দেখাইতেছে; (ছ) এই একটি আমগাছ, ইহাতে বিস্তর ফুল ফুটিয়াছে, কোকিলগণ নখাগ্রদ্বারা মুকুলগুলির

---

(१) अभ्यपतम्, अभ्युपगमम्। (२) सभृङ्गरीटीनि। (३) पतत्भ्रमयभरभुग्न,...भग्न...।
(४) शाखान्तरनर्त्तकजर्जरकुसुमोपहार...। (५)...कुड्मलविवर...।

मधुधारः (१) सुपुष्पितोऽयं सहकारतरुः, (क) उन्मद-मयूर-कुल-कलकल-(२) भीत-भुजङ्ग-मुक्ततला शिशिरेयं चन्दनवीथिका, (३) (ख) विकच-कुसुम-पुञ्ज-पात-सूचित-वनदेवता-प्रेङ्खोलन-शोभनेयं लतादोला, (ग) बहल-कुसुम-रजः-पटल-मग्न-कलहंस-पद-रेखमतिरमणीयमिदं तीरतरुतलं, (घ) इति स्निग्ध-मनोहरतरोद्देश-दर्शन-लोभाक्षिप्तहृदया सह सखीजनेन व्यचरम्। (ङ)

एकस्मिंश्च (४) प्रदेशे झटिति वनानिलेनोपनीतम्, निर्भरविकसितेऽपि कानने अभिभूतान्यकुसुमपरिमलम्, विसर्पन्तम्, अतिसुरभितया अनुलिम्पन्तमिव पूरयन्तमिव तर्पयन्तमिव घ्राणेन्द्रियम्, अहमहमिकया मधुकरकुलैरनु-

---

मुकुलजन्मानां विवरेभ्यः विगलिता मधूनां धारा यस्मिन् सः, सुपुष्पितः सम्यक्सञ्जातपुष्पः, अयं सहकार-तरुराम्रवृक्षः।

(ख) उन्मदेति। उन्मदस्य मदमत्तस्य मयूरकुलस्य कलकलेन कोलाहलेन भीतैः भुजङ्गैः सर्पैः मुक्तं परित्यक्तं तलं अधोदेशो यस्याः सा, शिशिरा शीतला, इयं चन्दनवीथिका चन्दनतरुश्रेणिः।

(ग) विकचेति। विकचस्य प्रस्फुटितस्य कुसुमपुञ्जस्य पातेन पतनेन सूचितं अनुमापितं यत् वन-देवतायाः प्रेङ्खोलनं दोलनं तेन शोभना, इयं लतादोला लतात्मकदोलनयन्त्रम्।

(घ) बहलेति। बहले प्रचुरे पुञ्जीभूत इत्यर्थः कुसुमरजःपटले पुष्पपरागसमूहे मग्नाः कलहंसानां पदरेखाश्चरणचिह्नानि यत्र तत्, अतएवातिरमणीयम्।

(ङ) इतीति। इति इत्थं स्निग्धानां नवपल्लवादिभिश्चिक्कणानां अतएव मनोहरतराणां, उद्देशानां प्रदेशानां दर्शनलोभेन आक्षिप्तमाकृष्टं हृदयं यस्याः सा तथोक्ता अहम्।

(च) एकस्मिन्निति। किञ्च। वनानिलेन वन्यवायुना उपनीतमाहृतम्। निर्भरमतिमात्रं यथा तथा विकसितेऽपि कानने काननकुसुमे, अभिभूतास्तिरस्कृताः अन्येषां कुसुमानां परिमलाः सौरभाणि

নাল বিদীর্ণ করিয়া দিয়াছে, সেই ছিদ্র হইতে মধু-ধারা পড়িতেছে ; (খ) এই একটি শীতল চন্দনবন ; সর্পগণ, উন্মত্ত ময়ূরগণের কোলাহলে ভীত হইয়া ইহার তল পরিত্যাগ করিয়া গিয়াছে ; (গ) এই একটি লতাময় দোলা ; ইহা হইতে প্রস্ফুটিত কুসুমরাশি নিপতিত হইতেছে বলিয়া বুঝা যাইতেছে যে, কোন বনদেবতার দোলনে ইহাকে সুন্দর দেখা যাইতেছে ; (ঘ) তীরবর্ত্তী বৃক্ষসমূহের এই তলদেশটি অতি মনোহর ; এখানে প্রচুর কুসুম-রেণুরাশির উপরে কলহংসদিগের পদচিহ্ন দেখা যাইতেছে। (ঙ) এইরূপ স্নিগ্ধ ও অত্যন্ত মনোহর স্থানসমূহ দর্শন করিবার অভিলাষে আকৃষ্টচিত্ত হইয়া আমি সখীগণের সহিত বিচরণ করিতে লাগিলাম।

(চ) তাহার পর কোন একটি স্থানে একপ্রকার কুসুমের গন্ধ আঘ্রাণ করিলাম ;

---

(१)...मधुनिकरधारः। (२) मयूरकलकल..., सकलमयूरकलकल...।
(३) चन्दनवनवीथिका। (४) अथैकस्मिंश्च।

बध्यमानम्, अनाघ्रातपूर्वम्, अमानुषलोकोचितम्, कुसुमगन्धमभ्यजिघ्रम् (च)। कुतोऽयमित्यपारूढ़कुतूहला चाहं मुकुलितलोचना तेन कुसुमगन्धेन मधुकरीवाकृष्यमाणा (१) कौतुकतरलाभ्यधिकतरोपजात-नूपुरमणि-झङ्काराकृष्ट-सरः-कलहंसानि कतिचित् पदानि गत्वा, (छ) हर-नयन-हुताशनेन्धनीकृत-(२) मदन-शोक-विधुरं वसन्तमिव तपस्यन्तम्, (ज) अखिल-मण्डल-प्राप्तयथंमीशान-शिरः-

---

येन तम्। विसर्पन्तं सर्वतः प्रसरन्तम्। अतिसुरभितया नितान्तसौरभवत्तया। घ्राणेन्द्रियं नासिका। अहमहमिकया अहमग्रे अहमग्रे इत्यभिमानेन मधुकरकुलैर्भ्रमरगणैः अनुबध्यमानमनुस्रियमाणम्। अत्र तिसृणामिव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(छ) कुत इति। कुतः प्रदेशादयं गन्ध आगच्छतीति शेषः, इत्येवं उपारूढं उत्पन्नं कुतूहलं यस्याः सा तथोक्ता चाहं, मुकुलितलोचना मुकुलवदीषदुन्मीलितनयना मधुकरी-भ्रमरीवाकृष्यमाणा च सती, कौतुकेन तरलः कुतूहलेन द्रुततरपदक्षेपात् कम्प्रः, अत्यधिकतरं पूर्वस्मादतिमात्रं यथा तथा उपजातो यो नूपुरमणीनां झङ्कारस्तेन आकृष्टाः नूपुररवश्रवणेन कलहंसानामुपस्थितेः स्वाभाविकत्वात् पदसमीपमानीताः कलहंसा येस्तानि, कतिचित् पदानि गत्वा, अनिमनोहरं स्नानार्थमागतं मुनिकुमारकमपश्यमिति दूरेणान्वयः। अत्र द्वितीयैकवचनान्तपदानि मुनिकुमारकमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि।

(ज) हरेति। हरनयनस्य शिवतृतीयलोचनस्य यो हुताशनो वह्निस्तेन इन्धनीकृतो दग्ध इत्यर्थः यो मदनस्तस्य शोकेन विधुरं विह्वलं अतएव तपस्यन्तं वैराग्यात्तपश्चरन्तं वसन्तं कालमिव, कुसुमसौरभवत्त्वात्तस्य मदनसखत्वाच्चेति भावः। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन सङ्कीर्यते।

দ্রুতগামী বন্যবায়ু, সেই কুসুমের গন্ধ আনয়ন করিয়াছিল ; বনের সমস্ত কুসুম অত্যন্ত প্রস্ফুটিত হইয়া থাকিলেও, সেই গন্ধ, অন্য সকল কুসুমের গন্ধকে পরাস্ত করিয়াছিল এবং সকলদিকে ছড়াইয়া পড়িতেছিল আর অত্যন্ত সুগন্ধি বলিয়া, আমার ঘ্রাণেন্দ্রিয়কে যেন লিপ্ত করিতেছিল, পূর্ণ করিতেছিল এবং সন্তুষ্ট করিতেছিল ; :আমি সেরূপ গন্ধ পূর্ব্বে আর কখনও আঘ্রাণ করি নাই এবং সে গন্ধ মনুষ্যলোকের যোগ্য ছিল না। (ছ) 'এ গন্ধ কোথা হইতে আসিতেছে' এইরূপ সংশয় হওয়ায় আমার কৌতূহল জন্মিল, তাহার পর আমি নয়ন উন্মীলিত করিয়া ভ্রমরীর ন্যায় সেই কুসুম-গন্ধে আকৃষ্ট হইয়া কয়েক পদ গমন করিলাম ; তখন কৌতুকবশতঃ দ্রুত পদক্ষেপ করায় আমার নূপুরমণি হইতে, পূর্ব্বাপেক্ষা অধিক এবং কম্পিতভাবে ঝঙ্কার হইতে লাগিয়াছিল, তাহাতে অচ্ছোদ সরোবরের কলহংসগণ আকৃষ্ট হইয়া আসিয়াছিল ; তাহার পর, স্নানের নিমিত্ত আগত অত্যন্ত সুন্দর একটি মুনিকুমারকে দেখিতে পাইলাম। (জ) তাঁহাকে দেখিয়া বোধ হইল যে, মহাদেবের নয়নাগ্নি, কামদেবকে দগ্ধ করিলে, সেই

---

(१) मधुकरावकृष्यमाणा,...मधुकरीवावकृष्यमाणा। (२), हरहुताशनेन्धनीकृत···।

शशाङ्कमिव धृतव्रतम्, (झ) अयुग्मलोचनं वशीकर्त्तुकामं काममिव सनियमम् (ञ) अतितेजस्वितया प्रचल-तड़िल्लता-पञ्जर-मध्यगतमिव ग्रीष्म-दिवस-दिवसकर-मण्डलोदर-प्रविष्टमिव ज्वलन-ज्वाला-कलाप-मध्य-स्थितमिव (१) विभाव्यमानम्, (ट) उन्मिषन्त्या बहुलबहुलया दीपिकालोकपिङ्गलया देहप्रभया कपिलीकृतकाननं कनकमयमिव तं प्रदेशं कुर्वाणम्, (ठ) रोचना-रस-लुलित-प्रतिसर-समान-सुकुमार-पिङ्गल-जटम्, (२) (ड) पुण्यपताकायमानया सरस्वती-

(झ) अखिलेति। अखिलमण्डलप्राप्त्यर्थं तदात्मन: कलामात्रत्वात् सम्पूर्णमण्डललाभार्थं धृतव्रतं गृहीततपोनियमं, ईशानशिर:शशाङ्कं शिवललाटस्थचन्द्रमिव, तत्तुल्यविशदवर्णत्वादिति भाव:। पूर्ववदलङ्कार:।

(ञ) अयुग्मेति। अयुग्मलोचनं त्रिलोचनं शिवं, वशीकर्त्तुं स्वापराधेन विरुद्धीभूतत्वात् पुन: प्रसन्नीकर्त्तुं कामोऽभिलाषोऽस्येति तम्, अतएव सनियमं शिवोपासनारूपव्रतशालिनं कामं मन्मथमिव, तद्वत् परमसुन्दरत्वादिति भाव:। पूर्ववदलङ्कार:।

(ट) अतीति। अतितेजस्वितया हेतुना, प्रचलानां स्पन्दमानानां तड़िल्लतानां पञ्जरमध्यगतमिव समूहाभ्यन्तरस्थितमिव, ग्रीष्मदिवसस्य तदानीं सूर्य्यस्यातितेजस्वित्वादिति भाव: यत् दिवसकरमण्डलं सूर्य्यबिम्बं तस्य उदरं अभ्यन्तरे प्रविष्टमिव, तथा ज्वलनज्वालाकलापस्य वह्निशिखासमूहस्य मध्यस्थितमिव, विभाव्यमानं प्रतीयमानम्। अत्र तिसृणामिव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टि:। तथा दिवसपदस्य द्विरुपादानात् पुनरुक्ततादोष:, स च ग्रीष्मकालेति पाठेन समाधेय:।

(ठ) उन्मिषन्त्येति। उन्मिषन्त्या देहादेव प्रसरन्त्या, बहुलबहुलया अतिप्रचुरया, दीपिकालोकवत् प्रदीपप्रभावत् पिङ्गलया, देहप्रभया, कपिलीकृतं पिङ्गलवर्णीकृतं काननं वनं येन तं, अतएव तं प्रदेशं कनकमयमिव सुवर्णविकारमिव कुर्वाणम्। अत्र लुप्तोपमा, काननस्य कपिलीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्ति:, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, गुणोत्प्रेक्षा चैतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्कर:।

(ड) रोचनेति। रोचनारसेन गोरोचनाद्रवेण लुलितो लिप्त: य: प्रतिसरो विवाहादिधारणीयहस्तसूत्रं तत्समाना: सुकुमारा: पिङ्गलाश्च जटा यस्य तम्। अत्र लुप्तोपमालङ्कार:।

শোকে বিহ্বল হইয়া বসন্ত যেন তপস্যা করিতেছেন; (ঝ) মহাদেবের মস্তকস্থিত ক্ষুদ্র চন্দ্র যেন, আপনার মণ্ডলটি সম্পূর্ণ লাভ করিবার নিমিত্ত, ব্রতাবলম্বন করিয়াছেন; (ঞ) কামদেব, যেন পুনরায় মহাদেবকে প্রসন্ন করিতে ইচ্ছা করিয়া তাঁহার উপাসনারূপ ব্রত অবলম্বন করিয়াছেন; (ট) আর সেই মুনিকুমার অত্যন্ত তেজস্বী ছিলেন বলিয়া তাঁহাকে যেন, চঞ্চল বিদ্যুৎ-পুঞ্জের মধ্যবর্ত্তী, গ্রীষ্মকালীয় সূর্য্যমণ্ডলের মধ্যে প্রবিষ্ট এবং অগ্নি-শিখা-সমূহের মধ্য-স্থিত বলিয়া বোধ হইতেছিল; (ঠ) প্রদীপের আলোকের ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ, অত্যন্ত প্রচুর এবং সকল দিকে বিস্তৃত দেহ-প্রভাদ্বারা তিনি, সেই বনটাকেই পিঙ্গলবর্ণ করিয়াছিলেন, তাহাতে যেন সেই স্থানটাকে সুবর্ণময় করিতেছেন বলিয়া প্রতীতি

(१) प्रचलित..., ग्रीष्मदिवसं दिवस...ज्वलनं ज्वाला...। (२) सुकुमारजटं।

समागमोत्कण्ठा-कृत-चन्दनरेखयेव (१) भस्मललाटिकया बालपुलिनलेखयेव (२) गङ्गाप्रवाहमुद्भासमानम्, (३) (ढ) अनेक-शाप-भ्रूकुटि-(४) भवन-तोरणेन भ्रूलताद्वयेन विराजितम्, (ण) अत्यायततया लोचनमयीं मालामिव ग्रथितामुद्वहन्तम्, सर्वैर्हरिणैरिव दत्त-लोचन-शोभा-संविभागम्, (थ) आयतोत्तुङ्ग-घ्राण-वंशम्, (द) अप्राप्त-हृदय-प्रवेशेन नवयौवनरागेणेव सर्वात्मना पाटलीकृताधररुचकम्, (ध) अनुद्भिन्नश्मश्रुत्वात् (५) अनासादित-मधुकरावली-

(ड) पुण्येति। पुण्यपताकायमानया धर्म्मवैजयन्तीवदाचरन्त्या, तस्या अपि शुभ्रत्वादिति भावः। सरस्वत्याः समागमाय सङ्गमाय या उत्कण्ठा तया कृता या चन्दनरेखा तयेव स्थितया, भस्मनो ललाटिकया तिलकविशेषेण, बालपुलिनलेखया क्षुद्रसैकतरेखया गङ्गाप्रवाहमिव, उद्भासमानं दीप्यमानम्। अत्र काक-गतोपमा, जात्युत्प्रेक्षा, श्रौतोपमा चेत्येतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ढ) अनेकेति। अनेके ये शापा अभिसम्पातास्तेभ्यो भ्रूकुटिः भ्रूसङ्कोच एव भवनं गृहं तस्य तोरणेन द्वारवर्त्तिधनुराकृतिकाष्ठविशेषस्वरूपेण भ्रूलताद्वयेन करणेन विराजितम् शोभितम्। अत्र परम्परित-रूपकमलङ्कारः।

(ण) अत्येति। अत्यायततया लोचनयोरतिदीर्घतया हेतुना लोचनमयीं कृत्वा ग्रथितां मालामिव उद्वहन्तं धारयन्तम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(थ) सर्वेति। सर्वैर्हरिणैर्दत्तो लोचनशोभायाः स्वस्वनयनकान्तेः संविभागो विभक्तांशो यस्मै तमिव, हरिणवल्लोचनशोभावत्त्वादिति भावः। अत्र तादृशदानोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(द) आयतेति। आयतो दीर्घः उत्तुङ्ग अत्युच्च घ्राणवंशो नासिकादण्डो यस्य तम्।

(ध) अप्राप्तेति। अप्राप्तो जितेन्द्रियत्वादलब्धो हृदये प्रवेशो येन तेन, नवयौवनस्य रागो रमणीष्वनुराग एव रागो रक्तिमा तेन, सर्वात्मना सकलप्रयत्नेन, पाटलीकृतं श्वेतरक्तीकृतं अधरो रुचकं बीजपूर इव यस्य तम्। अत्र अनुरागरक्तिम्नोर्भेदेऽपि रागशब्दश्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः, स्वभावपाटलाधरे नवयौवनराग-कर्त्तृकपाटलीकरणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा, लुप्तोपमा चेतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

হইতেছিল; (ড) তাঁহার মস্তকে, গোরোচনা-রসে রঞ্জিত হস্তসূত্রের তুল্য পিঙ্গলবর্ণ ও কোমল কতকগুলি জটা ছিল; (ঢ) তাঁহার ললাটে, ধর্ম্মের পতাকার ন্যায় এবং সরস্বতীর সহিত সম্মেলনের উৎকণ্ঠায় কৃত চন্দনের রেখার ন্যায়, ভস্মের তিলক ছিল; তাহাতে তিনি, ক্ষুদ্র বালুকাময় পুলিনদ্বারা গঙ্গাপ্রবাহের ন্যায় শোভা পাইতেছিলেন; (ণ) বহুতর অভিসম্পাত-কালীন ভ্রূকুটিরূপ গৃহের তোরণস্বরূপ দুইটি ভ্রূদ্বারা তিনি বিরাজ করিতেছিলেন; (ত) নয়নযুগল অত্যন্ত দীর্ঘ ছিল বলিয়া, তিনি যেন গ্রথিত নয়নময় মালা ধারণ করিতেছিলেন; (থ) সকল হরিণগণ, যেন, তাঁহাকে আপনাদের নয়নের শোভা বিভক্ত করিয়া দিয়াছিল; (দ) তাঁহার নাসিকাদণ্ডটি দীর্ঘ ও উন্নত ছিল; (ধ) নবযৌবনের অনুরাগ

(१)…चन्दनलेखयेव।
(२)…रेखयेव। (३) उद्भाव्यमानं। (४)…भ्रकुटि, भ्रुकुटि…। (५) अनुद्भूत,…श्मश्रुराजित्वात्।

वलय-परिक्षेप-विलासमिव बालकमलमाननं दधानम्, (न) अनङ्गकार्म्मुक-गुणेनेव (१) कुण्डलीकृतेन तपस्तड़ाग-कमलिनी-मृणालेनेव यज्ञोपवीतेनालङ्कृतम् (प) एकेन सनाल-वकुल-फलाकारं कमण्डलुं, अपरेण मकरकेतु-विनाश-शोक-रुदिताया रतेरिव वाष्पजलबिन्दुभिरारचितां स्फटिकाक्षमालिकां (२) करेण कलयन्तम्, (फ) अनेक-विद्यापगा-सङ्गमावर्त्तनिभया नाभिमुद्रयोप-शोभमानम्, (ब) अन्तर्ज्ञाननिराकृतस्य मोहान्धकारस्यापयान-पदवीमि-

(न) अनुद्भिन्नेति। न उद्भिन्नानि उत्पन्नानि श्मश्रूणि मुखलोमानि यस्य तस्य भावस्तत्त्वं तस्माद्धेतोः, न आसादितः प्राप्तः, मधुकरावलीवलयेन भ्रमरश्रेणीमण्डलेन परिक्षेपविलासः परिवेष्टनशोभा येन तत् तादृशं, बालकमलं नूतनपद्ममिव आननं मुखं दधानम्। अत्र श्रौतोपमालङ्कारः।

(प) अनङ्गेति। अनङ्गस्य मदनस्य कार्म्मुकगुणेनेव, रमणीनां मदनोद्दीपनादिति भावः, कुण्डलीकृतेन वलयीकृतेन, तथा तप एव तड़ागः सरोवरस्तस्य या कमलिनी तस्या मृणालेनेव, शुभ्रत्वादिति भावः, यज्ञोपवीतेनालङ्कृतम्। अत्र श्रौतोपमा, निरङ्गकेवलरूपकम्, पुनः श्रौतोपमा चैतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(फ) एकेनेति। एकेन करेण वामेनेत्यर्थः, सनालं सवृन्तं यत् वकुलफलं तद्वत् आकृतिर्यस्य तं तादृशं कमण्डलुं कलयन्तमित्यन्वयः। कमण्डलोरपि नालसत्त्वात् सनालेति विशेषणम्। अपरेण च दक्षिणेन करेण, मकरकेतोर्मदनस्य विनाशशोकेन रुदिताया रतेर्वाष्पजलबिन्दुभिरारचितां निर्म्मितामिव, शुभ्रत्वादिति भावः, स्फटिकस्य अक्षमालिकां जपमालां कलयन्तं दधानम्। तस्य मुनिकुमारस्य सर्वोपकरणानामेव मदनोद्दीपनत्वं बोधयितुं मदनसम्बन्धिविशेषणमिति बोध्यम्। अत्र प्रथमे विशेषणे आर्थोपमा, द्वितीये च क्रियोत्प्रेक्षा, अनयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ब) अनेकेति। अनेका बहुविधाः विद्या एव आपगा नद्यस्तासां सङ्गमे सम्मेलने य आवर्त्तो जलभ्रमिस्तन्निभया तत्तुल्यया नाभिमुद्रया नाभि-मण्डलेन उपशोभमानम्। अत्र निरङ्गकेवलरूपकार्थोपमयो-रङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

যেন হৃদয়ে প্রবেশ করিতে না পারিয়া, বীজপূরফলের (টাবা নেবুর) ন্যায় তাঁহার ওষ্ঠযুগলকে পাটলবর্ণ করিয়াছিল; (ন) তাঁহার মুখে লোম উঠিয়াছিল না; সুতরাং ভ্রমরশ্রেণীকর্ত্তৃক মণ্ডলক্রমে পরিবেষ্টনরূপ শোভা-বিহীন নূতন পদ্মের ন্যায়, তিনি মুখমণ্ডল ধারণ করিতেছিলেন; (প) কামদেবের ধনুকের গুণের ন্যায় মণ্ডলীকৃত এবং তপস্যারূপ সরোবরের পদ্মিনীর মৃণালের ন্যায় শুভ্রবর্ণ একটি যজ্ঞোপবীত তাঁহাকে অলঙ্কৃত করিয়াছিল; (ফ) তিনি এক হস্তে, বৃন্ত-সমন্বিত-বকুল-ফলাকৃতি একটি কমণ্ডলু এবং অপর হস্তে এক ছড়া স্ফটিকের জপমালা ধারণ করিতেছিলেন; সেই জপমালা যেন, কামদেবের বিনাশ-শোকে রোরুদ্যমান রতিদেবীর অশ্রুবিন্দুদ্বারা নির্ম্মিত হইয়াছিল বলিয়া বোধ হইতেছিল; (ব) তিনি, বহুবিধ বিদ্যারূপ

(१) कार्म्मुकगुणेन। (२) स्फटिकगुलिकाक्षमालिका।

वाञ्जन-रजोलेखा-श्यामलां रोमराजिमुदरेण तनीयसीं (१) बिभ्राणम्, (भ) आत्मतेजसा विजित्य सवितारं परिगृहीतेन (२) परिवेषमण्डलेनेव मौञ्ज-मेखलागुणेन परिच्छिन्नजघनभागम्, (म) अभ्रगङ्गास्रोतोजलप्रक्षालितेन जरच्च-कोर-लोचनपुट-पाटल-कान्तिना मन्दारवल्कलेनोपपादिताम्बरप्रयोजनम्, (य) अलङ्कारमिव ब्रह्मचर्य्यस्य, यौवनमिव (३) धर्म्मस्य, विलासमिव सरस्वत्याः,

---

(भ) अन्तरिति। उदरेण करणेन, अन्तर्ज्ञानेन आन्तरिकतत्त्वबोधेन निराकृतस्य अपसारितस्य, मोहोऽज्ञानमेवान्धकारस्तस्य अपयानपदवीमिव अपसरणमार्गमिव, अञ्जनरजसां कज्जलरेणूनां लेखेव रेखेव श्यामला ताम्, तनीयसीं केवलोत्पत्त्यारम्भात् कृशतरां रोमराजिं लोमावलीं बिभ्राणं धारयन्तम्। अत्र मोहे अन्धकारत्वारोपः शाब्दः, अन्तर्ज्ञाने आलोकत्वारोपस्तु आर्थ इत्येकदेशविवर्त्तिरूपकम्, जात्युत्प्रेक्षा, लुप्तोपमा चैतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। तरलकज्जलरेखावत् रोमराजेः सर्वथासमानताराहित्यद्योतनार्थं रजःपदमिति नापुष्टार्थत्वदोषः।

(म) आत्मेति। आत्मतेजसा सवितारं सूर्यं विजित्य परिगृहीतेन बलादानीतेन, परिवेषमण्डलेनेव स्थितेन मौञ्जमेखलागुणेन परिच्छिन्नः परिवेष्टितो जघनभागो यस्य तम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) अभ्रेति। अभ्रगङ्गाया आकाशगङ्गायाः स्रोतोजलेन प्रक्षालितं तेन, जरतो वृद्धस्य चकोरस्य पक्षि-विशेषस्य लोचनपुटवत् पाटला श्वेतरक्ता कान्तिर्यस्य तेन, मन्दारस्य देवतरुविशेषस्य वल्कलेन करणेन, उपपादितं निष्पादितं अम्बरप्रयोजनं परिधेयवस्त्रकार्यं येन तम्, तादृशमेकं मन्दारवल्कलं परिदधानमित्यर्थः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। वृद्धचकोरस्यैव लोचनपुटकान्तिरधिकपाटला भवतीति द्योतनार्थं जरत्पदमिति नापुष्टार्थत्वदोषः।

(र) अलमिति। ब्रह्मचर्य्यस्य स्त्रीसंसर्गत्यागरूपस्य अलङ्कारमिव, एनमासाद्य पूर्णावयवतया तस्य शोभातिरेकादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। आह्निकतत्त्वे ब्रह्मचर्य्यमाह दक्षः—"स्मरणं कीर्त्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणं। सङ्कल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिष्पत्तिरेव च। एतन्मैथुनमष्टाङ्गं विद्भिः परि-कीर्त्तितम्। विपरीतं ब्रह्मचर्य्यमेतदेवाष्टलक्षणम्।" धर्म्मस्य यौवनमिव, अत्र पूर्णत्वादित्याशयः। अत्रापि

নদীর সম্মেলনস্থানবর্ত্তী ঘোলার ন্যায় নাভিমণ্ডলে শোভা পাইতেছিলেন; (ভ) এবং আন্তরিক তত্ত্বজ্ঞানদ্বারা যে মোহরূপ অন্ধকার দূরীভূত করিয়াছিলেন, সেই অন্ধকারের পলায়নের পথের ন্যায় এবং কজ্জল-রেণু-রেখার ন্যায় শ্যামবর্ণ, কৃশতর রোমরাজি, তিনি উদরের উপরে বহন করিতেছিলেন; (ম) স্বকীয় তেজে সূর্য্যকে পরাজিত করিয়া বলপূর্ব্বক আনীত, তাঁহার পরিধিমণ্ডলের ন্যায় একটি মুঞ্জ-মেখলাতে তাঁহার জঘনদেশ পরিবেষ্টিত ছিল; (য) আর, আকাশগঙ্গার স্রোতোজলে প্রক্ষালিত এবং বৃদ্ধ চকোর পক্ষীর নয়নপুটের ন্যায় পাটল-কান্তি-সম্পন্ন একখানা মন্দার বৃক্ষের বল্কলদ্বারা তিনি বস্ত্রের প্রয়োজন সম্পাদন করিয়া-ছিলেন (সেইরূপ একখানা বল্কল পরিধান করিয়াছিলেন); (র) আর তিনি ব্রহ্মচর্য্যের

---

(১)...তনীয়সা তনীয়সীং। (২) আগৃহীতেন। (৩) আপণমিব।

स्वयंवरपतिमिव सर्व्वविद्यानाम्, सङ्केतस्थानमिव सर्व्वश्रुतीनाम्, (१) (र) निदाघकालमिव साषाढ़म्, (ल) हिमसमयकाननमिव स्फुटितप्रियङ्गु-मञ्जरीगौरम्, (व) मधुमासमिव कुसुम-धवल-तिलक-भूति-भूषित-(२) मुखम्, (श) आत्मानुरूपेण सवयसा अपरेण देवतार्च्चनकुसुमान्युच्चिन्वता तापसकुमारेणानुगतम्, अतिमनोहरं, स्नानार्थमागतम्, मुनिकुमारकम-पश्यम्। (ष)

[त्प्रेक्षा। सरस्वत्या वाग्देव्याः विलासं विभ्रममिव, एतस्मादेव तस्या अपि शोभातिशयलाभादित्य-भिप्रायः। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। सर्व्वविद्यानां, स्वयं व्रियत इति स्वयंवरस्तादृशः पतिस्तमिव, विद्याभिः स्वयमेवास्य वृतत्वादनेन तदर्थं न यत्नः कृत इति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। सर्व्वश्रुतीनां सकल-वेदानां, सङ्केतस्थानमिव सम्मेलनाय परस्परनिर्द्दिष्टस्थानमिव, आत्मन्येव तासां तत्रागमनादित्याशयः। अत्रापि जात्युत्प्रेक्षा। श्रुतीनां सर्व्वविद्यान्तर्गतत्वेऽपि प्राधान्यज्ञापनाय पृथगुपादानम्, गोवृषन्यायात्।

(ल) निदाघेति। निदाघकालं ग्रीष्मसमयमिव, आषाढ़ेन दण्डेन आषाढमासेन च सहेति साषाढ़म्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। "आषाढ़ो व्रतिनां दण्डे मासि मलयपर्व्वते।" इति विश्वः। "शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृतू।" इति श्रुतिः।

(व) हिमेति। हिमसमयस्य शीतकालस्य काननं वनमिव, स्फुटिता विकसिता या प्रियङ्गुमञ्जरी तद्वद् गौरं तथा च गौरम्। शीतकालएव तद्विकासात् हिमसमयेति विशेषणम्। पूर्णोपमा।

(श) मध्विति। मधुमासं चैत्रमासमिव, कुसुमवद्धवला या तिलकभूतिः त्रिपुण्ड्रकात्मकं भस्म तया भूषितं मुखं वदनमण्डलं यस्य तम्, अन्यत्र तु कुसुमैर्धवला ये तिलका वृक्षविशेषास्तेषां भूत्या सम्पदा भूषितं मुखं प्रथमभागो यस्य तम्, वसन्तप्रथमसमयएव तिलकवृक्षाणां कुसुमोत्पत्तेः। पूर्णोपमा। "तिलकोऽश्वद्रुमभिदोः पुण्ड्रके तिलकालके। तिलकं रुचके क्लोम्नि।" इति हेमः। "भूतिर्भस्मनि सम्पदि।" इत्यमरः।

(ष) आत्मेति। समानं वयो यस्य तेन सवयसा। मुनिकुमारकमित्यनुकम्पायां कप्रत्ययः।

যেন অলঙ্কার, ধর্ম্মের যেন যৌবনকাল, বাগ্দেবীর যেন বেশবিলাস, সকল বিদ্যার যেন স্বয়ংবৃত পতি এবং সকল বেদের যেন সম্মিলিত হইবার সঙ্কেতস্থান ছিলেন; (ল) গ্রীষ্মকালে যেমন আষাঢ়মাস থাকে, তাঁহার হস্তেও তেমন একখানা দণ্ড ছিল; (ব) শীতকালের বন যেমন প্রস্ফুটিত প্রিয়ঙ্গু-মঞ্জরীদ্বারা গৌরবর্ণ হয়, তিনিও তেমন প্রস্ফুটিত প্রিয়ঙ্গুমঞ্জরীর ন্যায় গৌরবর্ণ ছিলেন; (শ) চৈত্রমাসের প্রথমভাগ যেমন কুসুমরাশিতে ধবলবর্ণ তিলকবৃক্ষসমূহে ভূষিত হয়, তাঁহার মুখমণ্ডলও তেমন কুসুমের ন্যায় ধবলবর্ণ ভস্মের তিলকে ভূষিত ছিল; (ষ) এবং নিজের অনুরূপ ও সমানবয়স্ক আর একটি মুনিকুমার, দেবতা পূজা করিবার নিমিত্ত পুষ্প চয়ন করিতে করিতে, তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ আসিয়াছিলেন।

---

(१) सर्व्वश्रुतीनां। (२)...विभूषित...।

তেন চ কর্ণাবতংসীকৃতাং বসন্তদর্শনানন্দিতায়াঃ স্মিতপ্রভামিব বনশ্রিয়ঃ, মলয়মারুতাগমনার্থ-(১) লাজাঞ্জলিমিব মধুমাসস্য, যৌবনলীলামিব কুসুমলক্ষ্ম্যাঃ, সুরত-পরিশ্রম-স্বেদ-জল-কণ-জালকাবলীমিব রতেঃ, ধ্বজ-চিহ্ন-চামর-পিচ্ছিকামিব মনোভবগজস্য, মধুকর-কামুকাভিসারিকাম্, কৃত্তিকা-তারা-স্তবকানুকারিণীম্, অমৃতবিন্দুনিস্যন্দিনীম্, অদৃষ্টপূর্ব্বাং কুসুম-মঞ্জরীমদ্রাক্ষম্। (স)

(স) তেনেতি। কিঞ্চ, তেন মুনিকুমারকেণ কর্ণাবতংসীকৃতাং কুসুমমঞ্জরীমদ্রাক্ষমিত্যন্বয়ঃ। বসন্তস্য ঋতোর্দর্শনেন আনন্দিতায়া বনশ্রিয়ঃ, স্মিতপ্রভাং মন্দহাস্যদ্যুতিমিব, শুভ্রত্বসাম্যাদিতি ভাবঃ। অত্র জাত্যুৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ। মধুমাসস্য চৈত্রস্য, মলয়মারুতস্য আগমনার্থং আগমনাভিনন্দনার্থং যো লাজাঞ্জলিঃ অঞ্জলিপূর্ণা ধানাস্তমিব, শুভ্রত্বসাম্যাদিতি ভাবঃ। অন্যোঽপি আদরণীয়জনাগমনে তদভিনন্দনার্থং লাজান্ মুঞ্চতীতি। অত্রাপি জাত্যুৎপ্রেক্ষা। কুসুমলক্ষ্ম্যাঃ পুষ্পশ্রিয়ো যৌবনলীলামিব, মদনাভিব্যঞ্জকত্বাদিতি ভাবঃ। অত্র গুণোৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ। রতের্মদনভার্য্যায়াঃ, সুরতপরিশ্রমেণ যানি স্বেদজলানি গাত্রনির্গতঘর্ম্মবারীণি তেষাং কণজালকাবলীমিব বিন্দুসমূহশ্রেণীমিব, তদ্বৎ স্বচ্ছশুভ্রত্বাদিতি ভাবঃ। অত্র জাত্যুৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ। মনোভবো মদন এব গজস্তস্য, ধ্বজস্য পতাকায়াশ্চিহ্নরূপা যা চামরপিচ্ছিকা নিবদ্ধগ্রথিতা চামররূপা পিচ্ছিকা তামিব, তৎপিচ্ছিকাদর্শনেন গজাবির্ভাববোধবৎ তন্মঞ্জরীদর্শনেন মদনাবির্ভাববোধাদিতি ভাবঃ। অত্র নিরঙ্গকেবলরূপকজাত্যুৎপ্রেক্ষয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ। মধুকর এব কামুকস্তস্য অভিসারিকাং 'অভিসারয়তে কান্ত'' মিত্যাদিলক্ষণাং নায়িকামিব, তদুদ্দেশেন ধাবনাদিতি ভাবঃ। অত্র মধুকরে কামুকত্বারোপো মঞ্জর্য্যা-মভিসারিকাত্বারোপে নিমিত্তমিতি পরম্পরিতরূপকমলঙ্কারঃ। কৃত্তিকাতারাঃ কৃত্তিকাখ্যানি ষট্ নক্ষত্রাণি তেষাং স্তবকং গুচ্ছমনুকর্ত্তুং শীলং যস্যাস্তাম্, উজ্জ্বলশুভ্রত্বাদিতি ভাবঃ। অত্রার্থোপমালঙ্কারঃ। অমৃতবিন্দূন্ মধুকণান্ নিস্যন্দতে স্রবতীতি তাম্।

(স) তাহার পর দেখিলাম—পূর্ব্ববর্ণিত সেই মুনিকুমার, একটি পুষ্প-মঞ্জরীকে কর্ণের আভরণ করিয়াছেন, তাহা যেন, বসন্তকাল-দর্শনে আনন্দিত বনলক্ষ্মীর ঈষৎহাস্যের প্রভা; মলয়-বায়ুর আগমনের অভিনন্দনের নিমিত্ত, চৈত্রমাসের যেন অঞ্জলিপূর্ণ খই; পুষ্পলক্ষ্মীর যেন যৌবনকালের লীলা; রমণ-পরিশ্রমে রতিদেবীর গাত্র হইতে নির্গত ঘর্ম্মজলের যেন বিন্দুরাশি এবং মদনরূপ হস্তীর পূর্ব্ববর্ত্তী পতাকার চিহ্নস্বরূপ চামরের যেন পিছী বলিয়া বোধ হইতে লাগিল; আর সেই পুষ্পমঞ্জরীটি, ভ্রমররূপ কামুক নায়কের অভিসারিকারূপ নায়িকা ছিল; কৃত্তিকানামক নক্ষত্রপুঞ্জের অনুকরণ করিতেছিল এবং মধুবিন্দু বর্ষণ করিতেছিল; আমি সেরূপ পুষ্পমঞ্জরী পূর্ব্বে আর কখনও দেখি নাই।

(১)...আগমনার্থং।

'अस्याः परिभूतान्यकुसुमामोदो नन्वयं परिमलः' इति मनसा निश्चित्य तं तपोधनयुवानमीक्षमाणाहमचिन्तयम् (ङ) 'अहो ! रूपातिशय-निष्पादनोपकरण-कोशस्य अक्षीणता (१) विधातुः, (च) यत्त्रिभुवनाद्भुतरूपसम्भारं भगवन्तं कुसुमायुधमुत्पाद्य तदाकारातिरिक्त-रूपराशिः (२) अयमपरो मुनिमायामयो मकरकेतुरुत्पादितः (क)। मन्ये च सकलजगन्नयनानन्दकरं शशिबिम्बं विरचयता लक्ष्मी-लीला-वासभवनानि कमलानि सृजता प्रजापतिना (३) एतदाननाकार-करणकौशलाभ्यास एव कृतः, (ख) अन्यथा

(ङ) अस्या इति। अस्याः कुसुममञ्जर्याः, अयं परिमलो गन्धः, परिभूतस्तिरस्कृतः अन्येषां कुसुमानामामोदो गन्धो येन स ताद्दशो ननु ताद्दश एव, अतएवेममेव परिमलमहं प्रागभ्यजिघ्रमिति भावः। ईक्षमाणा पश्यन्ती।

(च) अहो इति। अहो आश्चर्य्यम्। विधातुः स्रष्टुः, रूपातिशयस्य सौन्दर्य्यातिरेकस्य निष्पादने निर्म्माणविषये यान्युपकरणानि सामग्र्यास्तेषां कोशस्य भाण्डस्य अक्षीणता अक्षयता चिरपूर्णतेत्यर्थः।

(क) कथमेतज्ज्ञायत इत्याह यदिति। यद् यस्मात्, त्रिभुवने अद्भुतो रूपसम्भारः सौन्दर्य्यसमूहो यस्य तम्। कुसुमायुधं मदनं। तदाकारान्मदनाकृतेरतिरिक्तोऽधिको रूपराशिः सौन्दर्य्यसमूहो यस्मिन् सः। मुनिमायामयो मुनिच्छलमयः, मुनिवेषधारीत्यर्थः अयं कुमारः, अपरो मकरकेतुर्द्वितीयो मदनः कृत्वा उत्पादितो विधात्रेति शेषः। विधातुस्तदुपकरणभाण्डस्य क्षयिष्णुत्वे तदैकमदननिर्म्माणेनैव तत्क्षयात् पुनरस्य ताद्दशभाविन निर्म्माणासम्भव इति भावः। अत्र मुनिमायामय इत्यनेन प्रकृतप्रतिषेधेनान्यस्थापनादपह्नुतिरलङ्कारः।

(ख) मन्ये इति। अपि चेति चार्थः। प्रथमं शशिबिम्बं चन्द्रमण्डलं विरचयता विदधता, तथा लक्ष्म्याः कमलायाः लीलया वासस्य भवनानि आश्रयरूपाणि कमलानि पद्मानि सृजता प्रजापतिना विधात्रा, एतस्य आननाकारस्य मुखाकृतेः करणकौशलस्य निर्म्माणोपयोगिनैपुण्यस्य अभ्यासः शिक्षैव कृतः, इति मन्ये इत्यर्थः। अन्योऽपि सुन्दरं वस्तुविशेषं निर्म्मातुं प्रथमं तदाकारवस्त्वन्तरनिर्म्माणेन तन्नैपुण्यं शिक्षते। अत्र मन्ये पदप्रयोगाद्वाच्या क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तेन च चन्द्रात् कमलाच्च मुनिकुमारवदनस्याधिकसौन्दर्य्यप्रत्यायनेन व्यतिरेकालङ्कारो व्यज्यत इत्यलङ्कारेणालङ्कारध्वनिः।

(ङ) 'এই পুষ্পমঞ্জরীর গন্ধই, অন্য পুষ্পের গন্ধকে নীচে ফেলিয়া বহিত হইতেছে' ইহা মনে মনে নিশ্চয় করিয়া, আমি সেই তপস্বী যুবককে দেখিতে দেখিতে চিন্তা করিতে লাগিলাম যে—(চ) কি আশ্চর্য্য ! বিধাতার, অসাধারণ সৌন্দর্য্য-নির্ম্মাণের উপযোগী উপকরণের ভাণ্ড, কখনও ক্ষয়প্রাপ্ত হয় না ; (ক) যেহেতু—তিনি, ত্রিজগতের মধ্যে আশ্চর্য্য রূপরাশি-বিশিষ্ট ভগবান্ কামদেবকে সৃষ্টি করিয়া, তাঁহার আকৃতি হইতেও অতিরিক্ত-সৌন্দর্য্যশালী মুনিবেশধারী এই আর একটি কামদেব সৃষ্টি করিয়াছেন। (খ) আমি মনে করি যে—'বিধাতা প্রথমে, সমগ্র জগতের নয়নানন্দজনক চন্দ্রমণ্ডল নির্ম্মাণ করিয়া এবং লক্ষ্মীর লীলা-

(१)...उपकरणकौशलस्याक्षीणता। (२)...रूपातिशयराशिः। (३) ब्रह्मणा।

किमिव हि सदृशवस्तुविरचनायाः (१) कारणम् (ग)। अलीकञ्चेदं यथा किल सकलाः कलाः कलावतो बहुलपक्षे क्षीयमाणस्य सुषुम्ननाम्ना (२) रश्मिना रविरापिबतीति, (घ) ताः खल्वस्य गभस्तयः समस्ता वपुरिदमाविशन्तीति (ङ) कुतोऽन्यथा रूपापहारिणि क्लेशबहुले तपसि वर्त्तमानस्येदं लावण्यम् (च)। इति चिन्तयन्तीमिव (३) मामविचारितगुणदोषविशेषो रूपैकपक्षपाती नवयौवनसुलभः कुसुमायुधः कुसुमासवमद इव (४) मधुकरीं परवशामकरोत्। (छ)

(ग) ननु कथमिदमवगम्यत इत्याह अन्यथेति। सदृशवस्तुविरचनायास्तुल्यपदार्थनिर्म्माणस्य।

(घ) अलीकमिति। किञ्च। रविः सुषुम्ननाम्ना रश्मिना स्वकीयकिरणविशेषेण, बहुलपक्षे कृष्णपक्षे क्षीयमाणस्य कलावतश्चन्द्रस्य सकलाः कलाः, आपिबतीति इदं पुराणवचनं अलीकं मिथ्या। यथा विष्णुपुराणे—"सूर्य्यरश्मिः सुषुम्नो यस्तर्पितस्तेन चन्द्रमाः। कृष्णपक्षेऽमरैः सार्द्धं पीयते वै सुधामयः।" अत्र अलीकत्वासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः।

(ङ) ननु तर्हि किं नाम सत्यमित्याह ता इति। अस्य चन्द्रस्य ताः खलु कलाः, समस्ता गभस्तयः किरणाश्च, इदं दृश्यमानं वपुर्मुनिकुमारशरीरं आविशन्ति विधातुरिच्छया प्रविशन्ति, इत्येव सत्यमिति भावः। अत्रापि चन्द्रकलाकिरणानां तद्वपुषि प्रवेशासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः।

(च) अथ कथमेवं ज्ञायत इत्याह कुत इति। अन्यथा चन्द्रस्य कलानां किरणानाञ्चाप्रवेशे। रूपापहारिणि क्लेशबाहुल्यात् सौन्दर्य्यनाशिनि। लावण्यं सौन्दर्य्यं कुतः स्यात् कुतोऽपि नेत्यर्थः, कारणाभावे कार्य्यानुत्पत्तेरिति भावः।

(छ) इतीति। न विचारितो नालोचितो गुणदोषयोर्विशेषो वैषम्यं येन सः, एतेनैतस्मिन् ममासक्तौ दोष एवासीदिति व्यज्यते। रूपैकपक्षपाती केवलसौन्दर्य्यपक्षावलम्बी। कुसुमासवमदः पुष्पमधुपानजनितमत्तता, मधुकरीं भ्रमरीमिव, मां परवशां आयत्ताम्। अत्रोपमालङ्कारः, तथा कुसुमासवमदो मधुकरीं परवशां करोति, मदनस्तु अकरोदिति कालभेदाद्भग्नप्रक्रमतादोषः, स च कुसुमासवमदो मधुकरीं यथा करोति, तथा मां परवशामकरोदिति पाठेन समाधेयः।

বাসস্থান পদ্ম সৃষ্টি করিয়া, এই মুখের আকৃতি নির্ম্মাণ করিবার জন্য কেবল কৌশলমাত্র অভ্যাস করিয়াছিলেন; (গ) না হইলে, একরকম অনেক বস্তু সৃষ্টি করিবার কারণ কি? (ঘ) আর এই পৌরাণিক প্রবাদও মিথ্যা যে,—'সূর্য্যদেব স্বকীয় সুষুম্ননামক রশ্মিদ্বারা, কৃষ্ণপক্ষে ক্ষীয়মাণ চন্দ্রের সমস্ত কলা পান করিয়া থাকেন'; (ঙ) তবে,—'চন্দ্রের সেই সকল কলা ও কিরণসমূহ এই শরীরে প্রবেশ করিয়া থাকে (ইহাই সত্য); (চ) না হইলে, ক্লেশবহুল ও সৌন্দর্য্যনাশক তপস্যায় থাকিয়া, ইহার এইরূপ সৌন্দর্য্য হইবে কেন?' (ছ) আমি এইরূপ চিন্তা করিতেছিলাম; এমন সময়ে, যিনি গুণ ও দোষের বৈষম্যের বিচার করেন না,

(१)…विरचनायां। (२) सुषुम्नानाम्ना सुषुम्नानाम्ना। (३) विचिन्तयन्तीमिव। (४) कुसुमसमयमद इव।

उच्छ्वसितैः सह विस्मृतनिमेषेण किञ्चिदामुकुलितपक्ष्मणा जिह्मित-तरल-तर-तार-शारोदरेण दक्षिणेन चक्षुषा सस्पृहमापिबन्तीव, किमपि याचमानेव, 'त्वदायत्तास्मि' इति वदन्तीव, अभिमुखं हृदयमर्पयन्तीव, सर्वात्मनानुप्रविशन्तीव, तन्मयतामिव गन्तुमीहमाना, 'मनोभवाभिभूतां त्रायस्व' इति शरणमिवोपयान्ती, 'देहि मे हृदयेऽवकाशम्' इत्यर्थितामिव दर्शयन्ती, 'हाहा किमिदमसाम्प्रतमतिक्षेपणमकुलकुमारीजनोचितमिदं मया प्रस्तुतम्' इति जानानाप्यप्रभवन्ती करणानाम्, (ज) स्तम्भितेव, लिखितेव,

---

(ज) उच्छ्वसितैरिति। उच्छ्वसितैर्निश्वासैः सह विधृतो निमेषो येन तेन मदनावेशातिशयवशा-स्थिरश्वासप्रश्वासाद्यं निर्निमेषेणेत्यर्थः, किञ्चिदामुकुलितानि ईषद्विकसितानि पक्ष्माणि लोमानि यस्य तेन, आजिह्मिते ईषद्वक्रीकृते तरलतरे अत्यन्तचञ्चले तारे कनीनिकाद्वयं यस्य तच्च तत् शारोदरं विचित्रमध्यदेश-श्चेति तत्तेन तथोक्तेन। अभिमुखं तत्सम्मुखं। सर्वात्मना सर्वप्रयत्नेन, अनुप्रविशन्तीव तदीयहृदयं प्रविशन्तीव। तन्मयतां तत्साद्रूप्यं गन्तुं लब्धुं ईहमाना चेष्टमानेव। तव हृदये मे मम अवकाशं स्थानं देहीति अर्थितां याचकत्वं दर्शयन्तीव। असाम्प्रतं सहसैव सम्मेलनोद्यमादयुक्तम्, अतिक्षेपणं सहसैव तादृशभावाश्रितात्मलज्जाकरं, कुलकुमारीजनस्योचितं न भवतीत्यकुलकुमारीजनोचितं। प्रस्तुत-मारब्धम्। इति जानानापि बुध्यमानापि करणानां नयनादीनामिन्द्रियाणां अप्रभवन्ती अनीशा सती नयनादी-नीन्द्रियाणि नियन्तुमशक्नुवती सतीत्यर्थः, तमतिचिरं व्यलोकयमित्यन्वयः। अत्र प्रत्येकवाक्य एव क्रियोत्प्रेक्षा-लङ्कारः।

কেবল সৌন্দর্য্যেরই পক্ষপাতী এবং প্রথম যৌবনকালে সুলভ, সেই কামদেব আমাকে, পুষ্পের মধু-পান-জনিত মত্ততা যেমন ভ্রমরীকে অধীন করিয়া ফেলে, সেইরূপ নিজের অধীন করিয়া ফেলিলেন।

(জ) তখন আমার শ্বাস-প্রশ্বাস বহিতেছিল না এবং আমি নিমেষবিহীন দক্ষিণ নয়নদ্বারা, অভিলাষের সহিত তাঁহাকে যেন পান করিতেছিলাম; তখন দক্ষিণ নয়নের লোমগুলি অল্প প্রকাশিত হইয়াছিল, তারাযুগল ঈষৎ বক্র ও অত্যন্ত চঞ্চল হইয়াছিল এবং সেই নয়নের মধ্যস্থানও বিচিত্র হইয়াছিল; এই অবস্থায়—আমি যেন কিছু প্রার্থনা করিতে-ছিলাম, 'আমি তোমার অধীন' ইহা যেন বলিতেছিলাম, তাঁহার সম্মুখে যেন হৃদয় সমর্পন করিতেছিলাম, সমস্ত যত্ন সহকারে তাঁহার হৃদয়ে যেন প্রবেশ করিতেছিলাম, তন্ময়তা লাভ করিবার নিমিত্ত যেন চেষ্টা করিতেছিলাম, 'কাম-পীড়িতা রমণীকে রক্ষা কর' এই কথা বলিয়া যেন শরণাগত হইতেছিলাম, 'তোমার হৃদয়ে আমাকে একটু স্থান দাও' এই কথা বলিয়া যেন প্রার্থি-ভাব জানাইতেছিলাম এবং 'হায় হায়! আমি কি অন্যায় আচরণ আরম্ভ করিয়াছি, ইহা অত্যন্ত লজ্জা-জনক এবং কুলকন্যার পক্ষে বিশেষ অনুচিত'

उत्कीर्णेव, संयतेव, मूच्छितेव, केनापि (१) विधृतेव, निष्पन्दसकलावयवा तत्क्षणाविर्भूतेनावष्टम्भेन, अकथितशिक्षितेन अनाख्येयेन स्वसंवेद्येन केवलम्, (झ) न विभाव्यते, किं तद्रूपसम्पदा, किं मनसा, किं मनसिजेन, किमभिनवयौवनेन, किमनुरागेण वा (२) उपदिश्यमाना (३) किमन्येनैव वा केनापि प्रकारेण, अहमपि न (४) जानामि कथं कथमिति तमतिचिरं व्यलोकयम्। (ञ)

(झ) अथापराण्यपि तत्कालजातानि स्वविशेषणान्याह स्तम्भितेवेति। स्तम्भितेव जड़ीकृतेव, लिखितेव चित्रितेव, उत्कीर्णेव दारु पाषाणं वा सन्तक्ष्याविष्कृतेव, संयतेव बद्धेव, मूच्छितेव मूर्च्छया संज्ञाहीनेव, तथा केनापि जनेन विधृतेव गृहीतेव सती, निष्पन्दाः सकला अवयवा अङ्गानि यस्याः सा तथोक्ता अहम्, अकथितोऽपि नयनं चालयितुमनुपदिष्टोऽपि शिक्षितस्तत्राभिज्ञस्तेन, अनाख्येयेन आकस्मिकोपस्थित्या किम्भूत इत्याख्यातुं वक्तुमशक्येन, अतएव स्वसंवेद्येन केवलमनोमात्रवेद्येन, तत्काले आविर्भूतेन, अवष्टम्भेन निष्पन्दताप्रयोजक-सात्त्विकविकारविशेषावलम्बनेन, केवलं तमतिचिरं व्यलोकयमित्यन्वयः। अत्रापि स्तम्भितेवेत्यादौ प्रत्येकविशेषण एव क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ञ) नेति। न विभाव्यते वक्ष्यमाणानां मध्ये केन उपदिश्यमाना सत्यहं तमतिचिरं व्यलोकयमिति न निर्णेतुं शक्यत इत्यर्थः। किं तस्य मुनिकुमारस्य रूपसम्पदा सौन्दर्यसमृद्ध्या उपदिश्यमाना सती तमतिचिरं व्यलोकयं इत्थं सर्वत्रान्वयः। मनसिजेन मदनेन। वा अथवा अन्येनैव उक्तभिन्नेनैव व्यक्तिविशेषेण, केनापि प्रकारेण अनिर्वचनीयभावेन, उपदिश्यमाना सती, कथं केनाप्यनिर्वचनीयभावेन, अतिचिरं अतिबहुतरसमयं यावत् तं मुनिकुमारं व्यलोकयं दृष्टवती, किन्तु कथं तं तथा व्यलोकयमित्यहमपि न जानामीत्यर्थः। अत्र वितर्काख्यभावो विप्रलम्भशृङ्गारस्याङ्गमिति प्रेयोनामालङ्कारः। किन्तु "अहमपि न जानामीति" वाक्यस्य

ইহা বুঝিয়াও ইন্দ্রিয়গণকে দমন করিতে পারিতেছিলাম না; (ঝ) তখন আমি যেন স্তম্ভিতের ন্যায়, চিত্রিতের ন্যায়, ক্ষোদিতের ন্যায়, আবদ্ধের ন্যায়, মূর্চ্ছিতের ন্যায় এবং কোন ব্যক্তি কর্তৃক ধৃতের ন্যায় হইয়া পড়িলাম; আমার সমস্ত অঙ্গও নিস্পন্দ হইল এবং তখন একপ্রকার বিকার উপস্থিত হইল, মুনিকুমারের প্রতি দৃষ্টিপাত করাইবার নিমিত্ত সে বিকারকে উপদেশ না দিলেও, সে, সেই বিষয়ে বেশ শিক্ষিত ছিল, এবং সে বিকারের স্বরূপ বর্ণনা করা যায় না, কেবল মনেই তাহা বুঝে, আমি সেই বিকারের প্রভাবে কেবলই তাঁহাকে দেখিতে লাগিলাম; (ঞ) আমি নিশ্চয় করিয়া বলিতে পারি না যে,— তাঁহাকে দেখিবার জন্য—কি তাঁহার সৌন্দর্য্যসমৃদ্ধি, কিংবা আমার মন, অথবা কামদেব, কিংবা আমার নব যৌবন, অথবা অনুরাগ, কিংবা এতদ্ভিন্ন অন্য কেহ কোন অনির্ব্বচনীয়

---

(१) क्वचित् 'केनापि' इति पाठो नास्ति।

(२) अनुरागेणैव। (३) उपदिश्यमानं। (४) अहं न।

उत्क्षिप्य नीयमानेव तत्समीपमिन्द्रियैः, पुरस्तादाकृष्यमाणेव हृदयेन, पृष्ठतः प्रेर्य्यमाणेव पुष्पधन्वना, कथमपि मुक्तप्रयत्नमप्यात्मानं (१) अधारयम् (ट)। अनन्तरञ्च मेऽन्तर्मदनेन (२) अवकाशमिव दातुमाहितसन्ताना निरीयुः श्वासमरुतः (ठ)। साभिलाषं हृदयमाख्यातुकाममिव स्फुरितमुखमभूत् कुचयुगलम् (ड)। स्वेद-लव-(३) लेखा-क्षालितेवागलल्लज्जा (ढ)। मकरध्वज-

"उपदिश्यमाना कथं तमतिचिरं व्यलोकय"मिति वाक्यान्तर्गतत्वेऽपि न गर्भितत्वदोषः प्रत्युत गुण एव, चमत्कारातिशयद्योतनात् "गर्भितत्वं गुणः क्वापि" इति साहित्यदर्पणोक्तेः।

(ट) उत्क्षिप्येति। इन्द्रियैर्नयनादिभिः उत्क्षिप्य उत्तोल्य तस्य मुनिकुमारस्य समीपं नीयमानेव, हृदयेन मनसा पुरस्तादाकृष्यमाणेव, पुष्पधन्वना मदनेन पृष्ठतः प्रेर्य्यमाणेव चाल्यमानेव सती, मुक्तस्त्यक्तः प्रयत्नस्तत्समीपगमननिवारणचेष्टा येन तं तथाविधमपि आत्मानं देहं, कथमपि महता क्लेशेनेत्यर्थः अधारयं स्वस्थान एवारक्षम्। अनेन धृतिरुक्ता। अत्र तिसृणामिव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ठ) अनेति। किञ्च, अनन्तरं मे मम अन्तर्हृदयमध्ये अवकाशं तस्य मुनिकुमारस्य वसतिस्थानं दातुमिव, मदनेन आहितो जनितः सन्तानो विस्तारो येषां ते तथाभूताः श्वासमरुतो निश्वासवायवो निरीयुर्निर्गताः, श्वासनिर्गमेनैव हृदये अवकाशोत्पत्तेरिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ड) साभीति। कुचयुगलं कर्त्तृ, साभिलाषं तन्मुनिकुमारप्राप्तीच्छापरिपूर्णं हृदयं कर्म्म, आख्यातुकाममिव 'त्वमेनमवश्यं प्राप्स्यसी'ति प्रियवार्त्तां वक्तुमिच्छु इव सत्, स्फुरितं स्पन्दितं मुखं अग्रभाग एव मुखं वदनं यस्य तत्तथाविधमभूत्। अन्योऽपि किञ्चिद्वक्तुकामः स्फुरितमुखो भवति एतेनाभिलाष उक्तः। अत गुणोत्प्रेक्षानुप्राणिता अग्रदेशवदनयोर्भेदेऽपि श्लेषेण तदभेदाध्यवसायमूलातिशयोक्तिरलङ्कारः।

(ढ) स्वेदेति। लज्जा, स्वेदलवलेखया घर्म्मविन्दुश्रेण्या क्षालिता धौतेव सती अगलत्, धूलिवदिति भावः। अनेन स्वेद उक्तः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

ভাবে, আমাকে উপদেশ দিতেছিল; এই অবস্থায় আমি কোন অনির্ব্বচনীয়ভাবে বহু সময় যাবৎ তাঁহাকে দেখিলাম; কেন যে দেখিলাম, তাহা আমিও জানি না।

(ট) তাহার পর আমার নয়নপ্রভৃতি ইন্দ্রিয়গণ যেন আমাকে উত্তোলন করিয়া তাঁহার নিকট নিয়া যাইতে লাগিল; হৃদয় যেন সম্মুখের দিকে আকর্ষণ করিতে লাগিল এবং কামদেব যেন পিঠের দিক হইতে ঠেলিতে লাগিলেন—এই অবস্থায় আমি, তাঁহার নিকট যাইতে নিবারণ করিবার চেষ্টা পরিত্যাগ করিয়া থাকিলেও অতিকষ্টে আপনাকে আপনি পূর্ব্বস্থানেই (দাঁড় করাইয়া) রাখিলাম। (ঠ) তাহার পর, আমার হৃদয়ে তাঁহার বাস করিবার স্থান দিবার নিমিত্তই যেন কামদেবকর্ত্তৃক বিস্তৃত হইয়া নিশ্বাসবায়ু নির্গত হইল। (ড) তাঁহার প্রতি অভিলাষী আমার মনকে প্রিয় সংবাদ বলিবার জন্যই যেন আমার স্তনযুগলের মুখ স্ফুরিত হইতে লাগিল। (ঢ) ঘর্ম্ম-জল-বিন্দুসমূহে প্রক্ষালিত হইয়াই যেন আমার লজ্জা

(१) मुक्तप्रयत्नमात्मानं। (२) तन्मदनेन। (३) स्वेदसलिललव...।

निशित-शर-निकर-निपात-(१) त्रस्तेवाकम्पत गात्रयष्टिः (ण)। तद्रूपातिशय द्रष्टमिव कुतूहलादालिङ्गन-लालसेभ्योऽङ्गेभ्यो निरगाद्रोमाञ्चजालकम् (त)। अशेषतः स्वेदाम्भसा धौतश्चरणयुगलादिव हृदयमविशद्रागः। (थ)

आसीच्च मम मनसि—'शान्तात्मनि दूरीकृतसुरतव्यतिकरेऽस्मिन् जने मां निक्षिपता किमिदमनार्य्येणासदृशमारब्धं मनसिजेन (द)। एवञ्च नामाति-मूढ़ं हृदयमङ्गनाजनस्य, यदनुरागविषय-योग्यतामपि विचारयितुं नालम् (ध)।

(ण) मकरेति। गात्रयष्टिः, मकरध्वजस्य मदनस्य ये निशिताः शरास्तेषां निकरस्य समूहस्य निपातात् आघातात् त्रस्ता भीतेव सती अकम्पत। अनेन कम्पोऽभिहितः। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षा।

(त) तदिति। रोमाञ्चानां जालकं समूहः, तस्य मुनिकुमारस्य यो रूपातिशयः सौन्दर्य्यातिरेकस्तं द्रष्टुमिव, आलिङ्गनलालसेभ्यः अङ्गेभ्यः कुतूहलात् निरगान्निर्गतम् बभूव, ऐन्द्रजालिकव्यापारादिकं द्रष्टुं गृहात् कुलवधूवदनवदिति भावः। अनेन रोमाञ्च उक्तः। अत्रापि दर्शनक्रियारूपफलोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(थ) अशेषत इति। स्वेदाम्भसा घर्म्मजलेन अशेषतः साकल्येन धौतः प्रक्षालितः रागोऽलक्तकलौहित्य-मिव रागोऽनुरागः, चरणयुगलात् हृदयमविशदिव। अनेन रतिर्नाम स्थायिभाव उक्तः। अत्र क्रियोत्-प्रेक्षानुप्राणिता लौहित्यानुरागयोर्भेदेऽपि रागशब्दश्लेषेणाभेदाध्यवसायरूपातिशयोक्तिरलङ्कारः। स्थायिभावलक्षणं यथा दशरूपके—"विरुद्धैरविरुद्धैर्वा भावैर्विच्छिद्यते न यः। आत्मभावं नयत्यन्यान् स स्थायी लवणाकरः।"

(द) आसीदिति। किञ्च तदानीं मम मनसि एषा वृत्तिरासीदित्यर्थः। शान्तः सत्त्वगुणान्वितः आत्मा मनो यस्य तस्मिन्, तथा दूरीकृतः सुरतव्यतिकरो रमणसम्बन्धो येन तस्मिन्। अनार्य्येण असभ्येन मनसिजेन मदनेन।

(ध) एवमिति। किञ्च, अङ्गनाजनस्य स्त्रीलोकस्य हृदयं, एवं नाम अतिमूढ़ं। नालं न समर्थम्। अत्राप्रस्तुतात् स्त्रीहृदयसामान्यात् प्रस्तुतस्यात्महृदयरूपविशेषस्य प्रतीतेरप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः।

পড়িয়া গেল। (ণ) কামদেবের সুধার বাণসমূহের আঘাতে ভীত হইয়াই যেন আমার শরীর কাঁপিতে লাগিল। (ত) তাঁহার অসাধারণ সৌন্দর্য্য দেখিবার জন্যই যেন কৌতুকবশতঃ আলিঙ্গনাভিলাষী অঙ্গ হইতে রোমাঞ্চসমূহ নির্গত হইল। (থ) এবং ঘর্ম্মজলে সম্পূর্ণ প্রক্ষালিত হইয়াই যেন রাগ (লৌহিত্য, অনুরাগ), চরণযুগল হইতে আমার হৃদয়ে প্রবেশ করিল।

(দ) তখন আমার মনে হইতে লাগিল যে,—'শান্তচিত্ত ও স্ত্রীসম্ভোগ-বর্জ্জিত এই লোকের প্রতি আমাকে নিক্ষেপ করিয়া, অসভ্য কামদেব, আজ এ, কি অন্যায্য আচরণ আরম্ভ করিয়াছে। (ধ) আর, স্ত্রীলোকের হৃদয়, এইরূপই নিতান্ত মূঢ় বটে, যে হেতু—অনু-

(१)...पात...।

क्वेदमतिभास्वरं धाम तेजसां तपसाञ्च, क्व च प्राकृतजनाभिनन्दितानि मन्मथपरिष्पन्दितानि (१) (न)। नियतमयं मामेवं मकरलाञ्छनेन विडम्ब्यमानामुपहसति मनसा (प)। चित्रञ्चेदं यदहमेवमवगच्छन्त्यपि न शक्नोम्यात्मनो विकारमुपसंहर्त्तुम् (फ)। अन्या अपि कन्यकास्त्रपां विहाय (२) स्वयमुपयाताः पतीन्, अन्या अप्यनेन दुर्विनीतेन मन्मथेनोन्मत्ततां नीता नार्य्यः, न पुनरहमिका यथा (ब)। कथमनेन क्षणेनाकारमात्रालोकनाकुलीभूतामिवमस्वतन्त्रतामुपैत्यन्तःकरणम् (भ)। कालो हि गुणाश्च दुर्निवारतामारोपयन्ति

(न) मन्वङ्गनाजनस्य हृदयं कथं नामातिमूढमित्याह क्वेति। तेजसां तपसाञ्च अतिभास्वरं नितान्तदीप्तिशीलं इदं मुनिकुमाररूपं धाम आश्रयः क्व, तथा प्राकृतजनैः सामान्यलोकैः अभिनन्दितानि आदृतानि मन्मथपरिष्पन्दितानि कामचेष्टितानि च क्व, ईदृशतपस्विजने कामचेष्टायाः सर्व्वथैव निष्फलत्वात्तदर्थंचोद्यमान्मम हृदयमतिमूढमिति भावः। अत्र विरूपयोः सङ्घटनया विषमालङ्कारः।

(प) नियतमिति। अयं कुमारः, मकरलाञ्छनेन मदनेन एवमित्थं विडम्ब्यमानां वञ्च्यमानां मां नियतं निश्चितमिव मनसा उपहसति, असम्भवनीयविषयप्रवृत्तेरिति भावः।

(फ) चित्रमिति। किञ्च इदं चित्रमाश्चर्य्यम्। एवं मदनकर्त्तृकविडम्बनां कुमारकर्त्तृकोपहासञ्च, अवगच्छन्त्यपि बुध्यमानापि। उपसंहर्त्तुं दूरीकर्त्तुम्।

(ब) अन्या इति। त्रपां लज्जां। दुर्विनीतेन दुराचारेण न पुनरहमिका यथा, सुतरां नास्त्यात्मधिक्कार इति भावः।

(भ) कथमिति। आकारमात्रस्य अस्य कुमारस्य केवलाकृतेः आलोकनेनैव आकुलीभूतं विह्वलीभूतं अन्तःकरणं मम चित्तं, एवमस्वतन्त्रतां इत्थं मदनाधीनतां।

(म) तत्र कारणमाह काल इति। हि यस्मात्, कालो वसन्तादिः, गुणाः सौन्दर्य्यादयश्च, मदनस्य

রাগের সম্ভব আছে কি না, ইহাও বিবেচনা করিতে সমর্থ নহে। (ন), কারণ, এই দেদীপ্যমান তেজ ও তপস্যার আধারই বা কোথায়, আর প্রাকৃতলোকের আদরণীয় কামচেষ্টাই বা কোথায়। (প) নিশ্চয়ই ইনি আমাকে এইরূপ কামদেবকর্ত্তৃক লাঞ্ছিত হইতে দেখিয়া মনে মনে উপহাস করিতেছেন। (ফ) আর, এই এক আশ্চর্য্য যে,—আমি এইরূপ বুঝিতে পারিয়াও আপনার মনের বিকার দূর করিতে পারিতেছি না। (ব) অন্যান্য কন্যারাও লজ্জা পরিত্যাগ করিয়া আপনা আপনিই পতি-লাভ করিয়াছে, অপরাপর রমণীরাও এই দুরাচার মদনের প্রভাবে উন্মত্ত হইয়াছে; কিন্তু আমি একা নহে। (ভ) কেবল আকৃতি-দর্শনেই আকুল হইয়া আমার অন্তঃকরণ এখন এইরূপ অবশ হইয়া পড়িল কেন? (ম) (হইতেও পারে) কারণ,—কাল ও গুণ এই উভয়ই সর্ব্বপ্রকারে কামবেগের দুর্নিবারতা

(१)…परिस्पन्दितानि। (२) अपहाय।

मदनस्य सर्वथा (म)। यावदेव सचेतनास्मि, यावदेव च न परिस्फुटमनेन विभाव्यते मे मदनदुश्चेष्टितलाघवमेतत्, तावदेवास्मात् प्रदेशादपसर्पणं श्रेयः (य) कदाचिदनभिमत-स्मर-विकार-दर्शन-कुपितोऽयं शापाभिज्ञां करोति माम्। अदूरकोपा हि मुनिजनप्रकृतिः।' इत्यवधार्य्यापसर्पणाभिलाषिण्यहमभवम् (र)। अशेषजनपूजनीया चेयं जातिरिति कृत्वा तद्वदनाकृष्टदृष्टिप्रसरम्, अचलित-पक्ष्ममालम्, अदृष्टभूतलम्, ईषदुल्लसित-(१) कर्णपल्लवोन्मुक्त-कपोलमण्डलम्, आलोलालक-लता-लसत्-कुसुमावतंसम्, अंसदेश-दोलायित-मणिकुण्डलम्, अस्मै प्रणाममकरवम्। (ल)

सर्वथा दुर्निवारतामारोपयन्ति, तस्मादनेन वसन्तकालेन अस्य सौन्दर्य्येण च दुर्निवारमदनारोपणान्मम चित्तमिव-मस्वतन्त्रतामुपैतीति भावः। अतएवात्राप्रस्तुतात् सामान्यात् प्रस्तुतस्य विशेषस्य प्रतीतेरप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः।

(य) यावदिति। यावदेव सचेतनास्मि अस्य सौन्दर्य्यदर्शनेन निरतिशयकामावेशवशात् कर्त्तव्याकर्त्तव्य-ज्ञानशून्या न भवामीत्यर्थः। अनेन कुमारेण मे मम एतत्, मदनस्य दुश्चेष्टितेन विकारजननेन यत् लाघवं लघुत्वं तत् परिस्फुटं स्पष्टं न विभाव्यते बुध्यते। अपसर्पणं अपसरणं।

(र) ननु तथात्वेऽप्यत्रावस्थाने को दोष इत्याह कदाचिदिति। अयं कुमारः, अनभिमतस्य आत्मनोऽसम्मतस्य स्मरविकारस्य मदीयकामविकारस्य दर्शनेन कुपितः सन्, मां शापाभिज्ञां अभिसम्पातदुःखभोगिनीं करोति कुर्य्यादित्यर्थः। ननु विशेषापराधाभावे कथं कोप इत्याह अदूरेति। हि यस्मात्, मुनिजनप्रकृतिः अदूरकोपा सततसन्निहितक्रोधा, अतएव अभिसम्पाताय विशेषापराधं नापेक्षत इति भावः। अत्र कारणेन कार्य्यसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(ल) अशेषेति। किञ्च, इयं जातिर्मुनिजातिः, अशेषजनपूजनीया, इति मनसि कृत्वा, तस्य कुमारस्य वदनात् आकृष्टः तत्कामावेशादिवासङ्कुचितः दृष्टिप्रसरो दर्शनपरम्परा यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा, अचलिता निष्पन्दा पक्ष्ममाला नयनलोमश्रेणिर्यस्मिन् कर्म्मणि तद् यथा तथा, न दृष्टं भूतलं यस्मिन् कर्म्मणि तत्, ईषदुल्लसिताभ्यां किञ्चिदुत्क्षिप्ताभ्यां कर्णपल्लवाभ्यां उन्मुक्तं परित्यक्तं कपोलमण्डलं गण्डबिम्बद्वयं यस्मिन् तत्,

---

জন্মাইয়া থাকে। (য) অতএব যে পর্য্যন্ত আমি সচেতন আছি এবং যে পর্য্যন্ত ইনি আমার এই কাম-বিকার-জনিত লঘুতা স্পষ্টরূপে বুঝিতে না পারেন, তাহার মধ্যেই এস্থান হইতে আমার চলিয়া যাওয়াই মঙ্গল। (র) কারণ, ইনি, নিজের অনভিমত কাম-বিকার-দর্শনে ক্রুদ্ধ হইয়া, হয় ত কখনও আমাকে শাপগ্রস্তও করিতে পারেন; কারণ,—মুনিগণের স্বভাবে সর্ব্বদাই ক্রোধ উপস্থিত থাকে।' এইরূপ মনে মনে নিশ্চয় করিয়া আমি চলিয়া যাইতে ইচ্ছুক হইলাম। (ল) এবং 'এই জাতিটা জগতের সকল লোকেরই পূজনীয়' এইরূপ মনে করিয়া উঁহাকে প্রণাম করিলাম; তখনও আমি তাঁহার মুখমণ্ডল হইতে দৃষ্টি আকর্ষণ করিতে পারিয়াছিলাম না; নয়নের লোমগুলি নিষ্পন্দই ছিল; ভূতলের দিকে

---

(१) उल्लसित…।

अथ कृतप्रणामायां मयि (१) दुर्लङ्घ्यशासनतया भगवतः (२) मनोभुवः, मदजननतया च मधुमासस्य, अतिरमणीयतया च तस्य प्रदेशस्य, अविनयबहुलतया चाभिनवयौवनस्य, चञ्चलप्रकृतितया चेन्द्रियाणाम्, दुर्निवारतया चाभिलाषाणाम्, चपलतया च मनोवृत्तेः, तथा भवितव्यतया च तस्य तस्य वस्तुनः, किं बहुना मम मन्दभाग्यदौरात्म्यादस्य चेदृशस्य क्लेशस्य विहितत्वात्तमपि मद्विकारदर्शनापहृतधैर्य्यं (३) प्रदीपमिव पवनस्तरलतामनयदनङ्गः। (व)

आन्दोलायामीषच्चलायां अलककलनायां लतावलम्ब्यमानस्खलितकेशपाशे लसन् शोभमानः कुसुमावतंसो यस्मिन् तत्, तथा अंसदेशयोः स्कन्धभागयोः दोलायिते स्पन्दिते मणिकुण्डले यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा, अस्मै मुनिकुमाराय प्रणाममकरवम्। अत्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः।

(व) अथेति। मनोभुवो मदनस्य दुर्लङ्घ्यशासनतया अनतिक्रमणीयादेशतया हेतुना, एवमन्यत्रापि हेतौ तृतीया। मधुमासस्य चैत्रस्य मदजननतया मत्तताजनकतया। अविनयबहुलतया अशिष्टाचारबाहुल्येन। तस्य तस्य वस्तुनः सुखदुःखादेः तथा भवितव्यतया तथा तथा भावितया, अदृष्टवशादिति भावः। मन्दभाग्यस्य दुरदृष्टस्य दौरात्म्याद्धेतोः, ईदृशस्य क्लेशस्य मम तपश्चरणात्मककष्टस्य। पवनो वायुः प्रदीपमिव, अनङ्गो मदनः, मम विकारदर्शनेन अपहृतं धैर्य्यं यस्य तं, तमपि मुनिकुमारं, तरलतां चापल्यं अनयत् प्रापितवान्। अत्रोपमालङ्कारः, तथा पवनः प्रदीपं तरलतां नयति अनङ्गस्तनयदिति कालभेदादभग्नप्रक्रमतादोषः "काप्यभिख्या तयोरासी"दित्यादिदर्पणोदाहृतवत्, स च 'पवनो यथा प्रदीपं तरलतां नयति, तथाऽनयदनङ्गः' इति पाठेन समाधेयः। दुर्लङ्घ्येत्यादिसन्दर्भानुरूपो भावो यथा मालतीमाधवे—

"भ्रमति भुवने कन्दर्पाज्ञा विकारि च यौवनं ललितमधुरास्ते ते भावाः क्षिपन्ति च धीरताम्।"

দৃষ্টিপাত করিয়াছিলাম না; কর্ণের পল্লব দুইটি কিছু তুলিয়া ধরায় তাহা গণ্ডযুগল পরিত্যাগ করিয়াছিল; ঈষৎ আন্দোলিত ও লম্বিত কেশকলাপের উপরে মস্তকাভরণ কুসুমগুলি শোভা পাইতেছিল এবং মণিময় কুণ্ডল দুইটি, দুই স্কন্ধের উপরে দুলিতেছিল।

(ব) আমি প্রণাম করিলে তাহার পর, ভগবান্ কামদেবের শাসন লঙ্ঘন করা দুষ্কর বলিয়া এবং চৈত্রমাস, সকলেরই মত্ততা-জনক বলিয়া, আর সেই স্থানটিও অত্যন্ত মনোহর বলিয়া এবং নব যৌবনে বহুপরিমাণেই স্বভাবের বিশৃঙ্খলা ঘটে বলিয়া আর ইন্দ্রিয়গুলিও স্বভাবতই চঞ্চল বলিয়া এবং আকাঙ্ক্ষার নিবৃত্তি করাও দুষ্কর বলিয়া এবং মনোবৃত্তিও চঞ্চল বলিয়া আর সেই সেই সুখ-দুঃখাদি, প্রাণিগণের সেই সেই ভাবেই হইবে বলিয়া, আর অধিক কি বলিব, দুরদৃষ্টের দৌরাত্ম্যবশতঃ আমার পক্ষে বিধাতা এই জাতীয় ক্লেশ বিধান করিয়াছিলেন বলিয়া, আমার কাম-বিকার-দর্শনে সেই মুনিকুমারেরও ধৈর্য্য বিনষ্ট হইল; তখন বায়ু যেমন প্রদীপকে চঞ্চল করে, সেইরূপ কামদেব তাঁহাকেও চঞ্চল করিয়া তুলিলেন।

---

(१) अपि। (२) क्वचित् 'भगवतः' इति नास्ति। (३) मद्विकारापहृतधैर्य्यं।

तदा तस्याप्यभिनवागतं मदनं (१) प्रत्युद्गच्छन्निव (२) रोमोद्गमः प्रादुरभवत् (श)। मत्सकाशमभिप्रस्थितस्य मनसो मार्गमिवोपदिशद्भिः पुरः प्रवृत्तं श्वासैः (ष)। वेपथुगृहीता (३) व्रतभङ्गभीतेवाकम्पत करतलगताक्षमाला (४) (स)। द्वितीयेव कर्णावसक्तकुसुममञ्जरी कपोलतलासङ्गिनी समदृश्यत स्वेदसलिलशीकरजालिका (ह)। मद्दर्शनप्रीतिविस्तारितस्य चोत्तानतारकस्य पुण्डरीकमयमिव तमुद्देशमुपदर्शयतो लोचनयुगलस्य विसर्पि-

(श) तदिति। तस्य मुनिकुमारस्यापि। प्रत्युद्गच्छन्निव आदरं विधातुमभिमुखं गच्छन्निव, रोमोद्गमो रोमाञ्चः। अन्योऽपि नवागतं प्रभुं प्रत्युद्गच्छति। अत्र प्रत्युद्गमनक्रियारूपफलोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ष) मदिति। मार्गमुपदिशद्भिरिव श्वासैः पुरः प्रवृत्तं अग्रतः प्रस्थितम्। अन्योऽप्यपरिचितस्य मार्गमुपदिशन्नग्रतो याति। तस्यापि निश्वासो निर्गत इत्यर्थः। अत्रापि पूर्ववदुत्प्रेक्षालङ्कारः।

(स) वेपथ्विति। वेपथुगृहीता देहोत्पन्नकम्पाख्यसात्त्विकभावसंक्रान्ता, करतलगता अक्षमाला जपमाला, व्रतभङ्गभीतेव ब्रह्मचारिणोऽपि कामावेशाद्ब्रह्मचर्य्यलोपाशङ्कितेव सती, अकम्पत। अत्र भयात्मकहेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ह) द्वितीयेति। द्वितीया कस्याश्चित् कुसुममञ्जर्य्याः पूर्वमेव कर्णे स्थितत्वात्तदपरा, कर्णावसक्तकुसुममञ्जरीव, कपोलतलासङ्गिनी गण्डस्थलोत्पन्ना स्वेदसलिलशीकरजालिका घर्म्मजलविन्दुश्रेणिः समदृश्यत। अत्र द्रीव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(च) मदिति। किञ्च, मम दर्शनप्रीत्या अवलोकनजनितानन्देन विस्तारितस्य, उत्तानि ऊर्द्धं गते तारके कनीनिकाद्वयं यस्य तस्य, तमुद्देशं तत् स्थानं पुण्डरीकमयमिव लोचनयोः श्वेतत्वात् श्वेतपद्मव्याप्तमिव, उपदर्शयतः प्रत्याययतः लोचनयुगलस्य विसर्पिभिः प्रसारिभिः अंशुसन्तानैः किरणप्रवाहैः, अच्छोदस्य सरसः सलिलमपहाय गगनतलं उत्पतितैरुद्गतैः, विकचकुवलयवनैरिव प्रस्फुटितनीलोत्पलवनैरिव स्थितैः, तेषां

(श) তখন নবাগত কামের প্রত্যুদ্গমন করিবার নিমিত্তই যেন তাঁহার শরীরেও রোমাঞ্চ আবির্ভূত হইল। (ষ) তাঁহারও মন আমার নিকটে আসিতেছিল, সুতরাং তাহার পথ বলিয়া দিবার নিমিত্তই যেন তাঁহারও নিশ্বাস অগ্রে প্রস্থান করিল। (স) কম্পমান হস্তস্থিত জপের মালা, যেন ব্রহ্মচর্য্য-লোপের ভয়েই কাঁপিতে লাগিল। (হ) কর্ণসংলগ্ন আর একটি কুসুমমঞ্জরীর ন্যায় তাঁহার গণ্ডস্থলে ঘর্ম্ম-জল-বিন্দু সমূহ দেখা যাইতে লাগিল। (ক্ষ) এবং তাঁহার নয়নযুগল আমাকে দেখিয়া আনন্দে বিস্ফারিত হইল, তারা দুইটি উপরে উঠিল, সুতরাং সেই নয়নযুগল সেই স্থানটাকে যেন শ্বেতপদ্মময় বলিয়া প্রতীতি জন্মাইতে লাগিল, এবং সেই নয়নযুগল হইতে কিরণজাল নির্গত হইয়া দশদিক্ আবৃত

(१)...आगतमदनं। (२) प्रत्युद्गतवानिव। (३) वेपथुना।

(४) अकम्पत गाधयष्टिरक्षमाला च।

भिरंशुसन्तानैर्यदृच्छयाच्छोदसलिलमपहाय विकचकुवलयवनैरिव गगनतलमुत्पतितैररुध्यन्त दश दिश: (च)।

तया तु तस्यातिप्रकटया विकृत्या द्विगुणीकृतमदनावेशा तत्चणमङ्ग-मवर्णनयोग्यां (१) काममप्यवस्थामन्वभवम् (क)। इदञ्च मनस्यकरवम्—'अनेक-सुरत-समागम-लास्य-लीलोपदेशोपाध्यायो मकरकेतुरेव विलासानुपदिशन्ति, अन्यथा विविध-रसासङ्ग-ललितेष्वोदृशेषु व्यतिकरेष्वप्रविष्टबुद्धेरस्य जनस्य कुत इवेयं (२) अनभ्यस्ताकृती रतिरसनिष्यन्दमिव (३) चरन्ती, अमृतमिव वर्षन्ती (४) मदमुकुलितेव, खेदालसेव, निद्राजड़ेव, आनन्द-भर-मन्थर-तरत्तार-(५)

किरणानान्तु नीलतारोत्पन्नत्वेन नीलत्वादिति भाव:, दश दिश: अरुध्यन्त आच्छादयन्त। अत्र प्रथमा क्रियोत्प्रेक्षा, द्वितीया च जात्युत्प्रेक्षा, तथा दशदिशामवरोधासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरित्येतासामङ्गाङ्गि-भावेन सङ्कर:।

(क) तयेति। अतिप्रकटया आधिक्येन प्रकाशितया, विकृत्या कामविकारेण। वर्णनस्य योग्या न भवतीत्यवर्णनयोग्या ताम्।

(ख) इदमिति। अनेके नानाविधा ये सुरतसमागमा रतिसंसर्गास्त एव लास्यलीला नृत्यव्यापारास्तासां उपदेशे शिक्षादाने उपाध्याय: शिक्षक:, मकरकेतुर्मदन एव विलासान् लोकानां लीलाकटाक्षपातादिविभ्रमान् उपदिशति शिक्षयति। अन्यथा मकरकेतुकर्तृकोपदेशाभावे, रस्यन्ते आस्वाद्यन्ते अनुभूयन्ते ये ते रसा: शब्दादयो भोग्यविषया:, विविधानां रसानां शब्दस्पर्शादिविषयाणां आसङ्गेन सम्भोगसम्पर्केण तज्जनितवैचक्षण्येनेत्यर्थ: ललितेषु मनोहरेषु, ईदृशेषु व्यतिकरेषु सविलासदृष्टिपातसम्बन्धेषु, अप्रविष्टा तपस्वितया तदनभिज्ञत्वादलब्धप्रवेशा बुद्धिर्यस्य तस्य, अस्य जनस्य मुनिकुमारस्य कुत इवेयं दृष्टि: सम्भवतीत्यर्थ:। दृष्टिविशेषणान्याह अनभ्यस्तेत्यादि। अनभ्यस्ता अशिक्षिता आकृति: स्वरूपं यया सा। रतिरसस्य रमणायानुरागस्य निष्यन्दं निर्यासप्रवाहं क्षरन्तीव, अमृतं वर्षन्तीव, मादृशीनां कामिनीनामतीवतृप्तिकरत्वादिति भाव:। मदेन काम-

---

করিল ; তখন বোধ হইতে লাগিল—যেন, প্রস্ফুটিত-নীলোৎপল-বন, ইচ্ছানুসারে অচ্ছোদ-সরোবরের জল পরিত্যাগ করিয়া আকাশে উঠিয়াছে।

(ক) কিন্তু তাঁহার সেই কামবিকার অত্যন্ত প্রকাশ পাইয়া, আমার কাম-বিকারকে দ্বিগুণ করিয়া তুলিল, তখন আমি, বর্ণনার অযোগ্য কোন অনির্ব্বচনীয় অবস্থা অনুভব করিতে লাগিলাম। (খ) এবং এইরূপ মনে করিতে লাগিলাম যে—'নানাবিধ সম্ভোগরূপ নৃত্য-শিক্ষার অধ্যাপক কামদেবই লোকের কটাক্ষপাতপ্রভৃতি বিলাসিতা শিখাইয়া থাকেন ; তাহা না হইলে, নানাপ্রকার-বিষয়-সম্ভোগ-নিবন্ধন মনোহর এই কটাক্ষপাতে ইহার বুদ্ধি কখনও প্রবেশ করে নাই, তথাপি এই ব্যক্তির এইরূপ কটাক্ষপাত হইবে কেন ;—ইহার

---

(१) तत्चणमङ्गवर्णनयोग्यां। (२) कुत इयं।

(३)...नि:स्यन्दमिव। (४)...वर्षन्ती, क्षरन्ती-अमृतमिव। (५)—तरलतर...।

सञ्चारिणी, अनिभृत-भ्रूलतोल्लासिनी (१) दृष्टिः (ख)। कुतश्चेदमतिनैपुण्यम्, यच्चक्षुषैवानक्षरमेवमन्तर्गतो हृदयाभिलाषः कथ्यते।' (ग)

प्राप्तप्रसरा (२) चोपसृत्य तं द्वितीयमस्य सहचरं मुनिबालकं प्रणामपूर्वकमपृच्छम्,—"भगवन्! किमभिधानः, (३) कस्य वायं तपोधनस्य युवा? किंनाम्नश्च तरोरियमनेनावतंसीकृता (४) कुसुममञ्जरी? जनयति हि मे मनसि महत् कौतुकमस्याः समुत्सर्पन्नसाधारणसौरभोऽयमनाघ्रातपूर्वो गन्धः" इति। (घ)

मत्ततया मुकुलितेव ईषत्प्रकाशितेव। एतेषां प्रत्येकविशेषण एव क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। खेदालसेव परिश्रममन्देव, निद्रया जड़ेव कुण्ठितेव। अनयोः प्रत्येकं गुणोत्प्रेक्षा। आनन्दभरेण आमोदातिशयेन मन्थरं मन्दं यथा स्यात्तथा तरन्ती प्रसरन्ती तारा यस्मिन् कर्मणि तद्यथा तथा सञ्चरितुं शीलं यस्याः सा। तथा अनिभृतं स्पष्टं भ्रूलते लम्बितभ्रूयुगलं उल्लासयितुं नर्त्तयितुं शीलं यस्याः सा।

(ग) कुत इति। किञ्च। चक्षुषैव दृष्टिविशेषेणैव, एवमित्थं अन्तर्गतो हृदयाभिलाषः अनक्षरं वाग्विहीनं यथा स्यात्तथा, यत् कथ्यते उक्तिवत् स्पष्टं बोध्यते, इदमतिनैपुण्यं कुतः स्यादित्यर्थः, सुतरां मकरकेतोरुपदेशादेव ईदृशी दृष्टिरिदञ्च नैपुण्यमिति भावः। अत्र अक्षररूपकारणाभावेऽपि कथात्मककार्य्योत्पत्तेर्विभावनालङ्कारः।

(घ) प्राप्तेति। किञ्च। प्राप्तप्रसरा आत्मनस्तादृशदृष्टिविषयत्वाल्लब्धावकाशाहं। किमभिधानः किंनामा, कस्य वा तपोधनस्य पुत्र इत्यर्थः। अस्याः कुसुममञ्जर्य्याः, समुत्सर्पन् प्रसरन्, असाधारणं सौरभं घ्राणवशिकारित्वं यस्य सः।

নয়ন, এই জাতীয় দৃষ্টি করা পূর্ব্বে কখনও অভ্যাস করে নাই. আবার অনুরাগের রস যেন নিঃসারণ করিতেছে, যেন অমৃত-বৃষ্টি করিতেছে, মত্ততাবশতই যেন ঈষৎ প্রকাশিত হইয়াছে, পরিশ্রমেই যেন অলস হইয়া পড়িয়াছে, নিদ্রাতেই যেন অসার হইয়া গিয়াছে, অত্যন্ত আনন্দবশতঃ তারা দুইটি, ধীরে ধীরে সঞ্চারিত হইতেছে এবং স্পষ্টরূপে জ্রযুইটিকে নাচাইতেছে। (গ) এবং ইনি যে, বাক্যব্যতিরেকে কেবল নয়নদ্বারাই, অন্তর্গত মনের অভিলাষ এইরূপে ব্যক্ত করিতেছেন, এইরূপ অত্যন্ত নৈপুণ্যই বা হইবে কিরূপে।

(ঘ) তাহার পর আমি অবসর পাইয়া নিকটে যাইয়া, তাঁহার সহচর সেই দ্বিতীয় মুনিবালকটিকে প্রণাম করিয়া জিজ্ঞাসা করিলাম,—"ভগবন্! ইঁহার নাম কি? এবং এই যুবক কোন্ তপস্বীর পুত্র? এবং ইনি যে পুষ্পমঞ্জরীটি কানে দিয়াছেন, উহা কি গাছের? উহার গন্ধ, সকল দিকে ছড়াইয়া যাইতেছে এবং আমার মনে বড়ই কৌতুক জন্মাইতেছে;

---

(१)...लतोल्लासिनी। (२) लब्धप्रसरा। (३) भगवान् किमभिधानः।

(४) कस्य चायं तपोधनयुवा। इयमवतंसीकृता।

स तु मामीषद्विहस्याब्रवीत्—"बाले! किमनेन पृष्टेन प्रयोजनम्, अथ कौतुकमावेदयामि, श्रूयताम्। (ङ)

अस्ति खलु सकलत्रिभुवन-प्रख्यातकीर्त्तिरत्युदारतपाः (१) सुरासुरसिद्धवृन्द-वन्दित-(२) चरणयुगलो महामुनिर्दिव्यलोकनिवासी श्वेतकेतुर्नाम (च)। तस्य च भगवतः (३) सुरासुरलोक-(४) सुन्दरीहृदयानन्दकरं, अशेषत्रिभुवन-सुन्दरं, अतिशयितनलकूवरं रूपमासीत् (छ)। स कदाचिद्देवतार्चनकमला-न्युद्धर्त्तुमैरावत-मदजल-विन्दु-बद्ध-चन्द्रक-शत-खचित-जलाम्, हर-हसित-सित-स्रोतसम्, (५) मन्दाकिनीमवततार (ज)। अवतरन्तञ्च तं तदा कमलवनेषु

(ङ) स इति। यदि तव कौतुकं वर्त्तते तदा आवेदयामीत्यर्थः।

(च) अस्तीति। सकले त्रिभुवने त्रिभुवनस्य सकलस्थानेष्वित्यर्थः प्रख्याता कीर्त्तिर्यस्य सः, अत्यु-दारमतिमहत्तपो यस्य सः, सुराणामसुराणां सिद्धानां तदाख्यदेवयोनिविशेषाणाञ्च वृन्देन वन्दितं चरणयुगलं यस्य सः। दिव्यलोकनिवासी स्वर्गलोकस्थः।

(छ) तस्येति। सुरासुरलोकयोर्याः सुन्दर्यो रमण्यस्तासां हृदयानन्दकरं, अशेषे त्रिभुवने त्रिभुवनस्य सकलस्थानेषु सुन्दरं सर्वेभ्यः सुन्दरमित्यर्थः, तथा अतिशयितः अतिक्रान्तः नलकूवरस्तदाख्यः कुबेरपुत्रस्तदीय-रूपं येन तत् तादृशम्। आसीदित्यतीतनिर्देशेन वार्द्धक्यादिदानीं तादृशं रूपं नास्तीति सूचितम्।

(ज) स इति। स श्वेतकेतुः। देवतानामर्चनाय कमलानि पद्मानि उद्धर्त्तुमुत्तोलयितुं, ऐरावतस्य जले अवगाहमानस्य इन्द्रहस्तिनः मदजलविन्दुभिर्बद्धमुत्पादितं यच्चन्द्रकशतं जलोपरि प्लवमानं विविधवर्ण

কারণ, এরূপ গন্ধ পূর্ব্বে আর কখনও আঘ্রাণ করি নাই, তাই তাহার নাসিকার অত্যন্ত তৃপ্তি জন্মাইতেছে।

(ঙ) তখন তিনি ঈষৎ হাস্য করিয়া আমাকে বলিলেন,—"বালিকে! এই বিষয় জিজ্ঞাসা করায় তোমার প্রয়োজন কি, তথাপি যদি কৌতুক জন্মিয়া থাকে, তবে বলিতেছি, শোন।

(চ) স্বর্গলোকনিবাসী শ্বেতকেতু নামে এক মহর্ষি আছেন; তাঁহার কীর্ত্তিকলাপ, ত্রিজগতের সকল স্থানেই বিখ্যাত, তপস্যাও অতিবৃহৎ এবং দেবগণ, দানবগণ ও সিদ্ধগণ তাঁহার চরণযুগলের সেবা করিয়া থাকেন। (ছ) সেই ভগবান্ মহর্ষির রূপও সমস্ত ত্রিভুবনের মধ্যে পরম সুন্দর ছিল; সে রূপ, দেবলোক ও দানবলোকের রমণীগণের হৃদয়ে আনন্দ জন্মাইত, এমন কি, কুবের-নন্দন নলকূবরের রূপকেও পরাস্ত করিয়াছিল। (জ) তিনি দেবতাপূজার জন্য পদ্ম উত্তোলন করিবার নিমিত্ত, কোন সময়ে মন্দাকিনীর জলে যাইয়া

(१) अस्ति त्रिभुवनप्रख्यातकीर्त्तिरत्युदारतया। (२) सुरसिद्धवृन्द, सिद्धवृन्दमौलिमालालित...।

(३) तस्य भगवतः। (४) सुरलोकसुन्दरी, सकललोकसुन्दरी...।

(५) हरहसितस्रोतसं, हरहसिततोयां।

सततसन्निहिता विकच-(१) सहस्रपत्र-पुण्डरीकोपविष्टा देवी (२) लक्ष्मी ददर्श (झ)। तस्यास्तु तमवलोकयन्त्याः प्रेममन्द-(३) मुकुलितेनानन्द-वाष्प-भर-तरङ्ग-तरल-तारेण लोचनयुगलेन रूपमास्वादयन्त्या जृम्भिकारम्भ-मन्थर-मुख-विन्यस्त-हस्तपल्लवाया मन्मथविकृतं मन आसीत् (ञ)। आलोकन-मात्रेण च समासादित-सुरत-समागम-सुखायास्तस्मिन्नेवामनोकृते पुण्डरीके कृतार्थतासीत्। तस्माच्च कुमारः समुदपादि (ट)। ततस्तमुत्सङ्गेनादाय (४) "भगवन्! गृहाण तवायमात्मजः" इत्युक्त्वा तस्मै श्वेतकेतवे ददौ (ठ)।

ज्वाल्यमानं वर्त्तुलाकारचिह्नवृन्दं तेन खचितं ~ । जलं यस्यास्ताम्, तथा हरहसितवत् महादेवहास्यवत् सितं शुभ्रं स्रोतो यस्यास्ताम्। अत्र हरेत्यादौ लुप्तोपमाच्छेकानुप्रासयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः।

(झ) अवेति। किञ्च। विकचं प्रस्फुटितं सहस्रपत्रं सहस्रदलात्मकं यत् पुण्डरीकं श्वेतपद्मं तत्रोपविष्टा।

(ञ) तस्या इति। प्रेम्णा कामानुरागेण मन्दमुकुलितेन ईषत्प्रकाशितेन, आनन्दवाष्पभरस्य आनन्दाश्रु-समूहस्य तरङ्गेण तरला चञ्चला तारा यस्य तेन। आस्वादयन्त्याः सादरं पश्यन्त्याः। जृम्भिकाया मदना-वेशजनितगात्रभङ्गस्य आरम्भेण मन्थरं अलसं यन्मुखं तत्र विन्यस्तो हस्तपल्लवो यया तस्याः, मनः मन्मथेन विकृतं विकलीकृतमासीत्।

(ट) आलोकनेति। किञ्च। समासादितं प्राप्तं सुरतसमागमसुखं रमणात्मकसम्भोगनानन्दो यया तस्याः। कृतार्थता रमणसफलता बभूव इत्यर्थः। किञ्च, तस्मात् पुण्डरीकात् कुमारः अयं युवा।

अहो! विधातृसहोदरा कविकल्पना विलक्षणं भुवनान्तरमपि निर्म्मातुमर्हति, यस्यायमद्भुता कुमार-सृष्टिः।

(ठ) तत इति। उत्सङ्गेन क्रोड़ेन, तं कुमारमादाय लक्ष्मीरिति शेषः। तवायमात्मजः त्वद्दर्शने-नैव विचुम्भितात्मनीजाद्गतपत्सेविति भावः।

नামিয়াছিলেন; তখন সেই জলগুলি ঐরাবতহস্তীর মদজল-বিন্দু-নির্ম্মিত চক্রাকৃতি চিহ্নসমূহে ব্যাপ্ত ছিল এবং তাহার স্রোত, মহাদেবের হাস্যের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ছিল। (ঝ) তিনি জলে নামিতেছিলেন, তখন, সর্ব্বদা পদ্মবন-নিবাসিনী প্রস্ফুটিত-সহস্রদল-পদ্মোপরি উপবিষ্টা লক্ষ্মীদেবী তাঁহাকে দর্শন করিলেন। (ঞ) লক্ষ্মীদেবী যখন তাঁহাকে দেখিতেছিলেন, তখন তাঁহার নয়নযুগল, মদনানুরাগে ঈষৎ উন্মীলিত হইয়াছিল, এবং আনন্দাশ্রুজলের তরঙ্গে তারা দুইটি চঞ্চল হইয়াছিল; এই ভাবে তিনি মহর্ষির রূপের আস্বাদন করিতেছিলেন, আর হাই তুলিতে আরম্ভ করায় তাঁহার মুখমণ্ডল নিশ্চল হইয়াছিল, এবং মুখমণ্ডলে তিনি হস্তপল্লব স্থাপন করিয়াছিলেন; এই অবস্থায় লক্ষ্মীর মন কামাবেশে বিকৃত হইয়াছিল। (ট) এবং দর্শন-মাত্রেই লক্ষ্মীর ..। এবং সেই শ্বেতপদ্ম হইতে একটি বালক উৎপন্ন হইল। (ঠ) তাহার

(१)···सन्निहितविकच ..। (२) देवी कमलवदना लक्ष्मीः। (३) प्रेममद...। (४) उत्सङ्ग आदाय।

असावपि बालजनोचिताः सर्वाः क्रियाः कृत्वा तस्य पुण्डरीकसम्भवतया तदेव पुण्डरीक इति नाम चक्रे (ङ)। प्रतिपादितव्रतञ्च तमागृहीतसकलविद्याकलापमकार्षीत्। सोऽयम् (ढ)।

इयञ्च सुरासुरैर्मथ्यमानात् क्षीरसागरादुद्गतः पारिजातनामा पादपस्तस्य मञ्जरी। यथा चैषा व्रतविरुद्धमस्य श्रवणसंसर्गमासादितवती, तदपि कथयामि (ण)। अद्य चतुर्दशीति भगवन्तमम्बिकापतिं कैलासगतमुपासितुममरलोकान्मया सह नन्दनवनसमीपेनायमनुसरन्निर्गत्य साक्षान्मधुमासलक्ष्मीदत्त-ललित-हस्तावलम्बया, वकुलमालिका-मेखलया, पारिजात-कुसुम-(१)

(ङ) असाविति। असौ श्वेतकेतुरपि, गृहीत्वेति शेषः। क्रिया जातकर्मादिकाः। पुण्डरीकसम्भवतया श्वेतपद्मजाततया। पुण्डं सुन्दरेषु तिलकभावं प्राधान्यं रिणाति गच्छति प्राप्नोतीति पुण्डरी मतः स्वार्थे कः।

(ढ) प्रतीति। किञ्च, प्रतिपादितं सम्पादितं व्रतमुपनयनं यस्य तम्, तथा आगृहीतः शिक्षितः सकलविद्याकलापो येन तम्, अकार्षीत् श्वेतकेतुरिति सम्बन्धः। अयं युवा स पुण्डरीकः।

(ण) इयमिति। तस्य चेयं मञ्जरीति सम्बन्धः। एषा कुसुममञ्जरी च, व्रतविरुद्धं विलासोपकरणत्वाद्ब्रह्मचर्यप्रतिकूलं यथा स्यात्तथा, अस्य पुण्डरीकस्य श्रवणसंसर्गं कर्णसंयोगं यथा आसादितवती प्राप्तवती।

(त) अद्येति। चतुर्दशी तिथिरिति हेतोः, "शिवस्योक्ता चतुर्दशी" इति स्मृतेः शिवोपासनायां चतुर्दश्याः प्राशस्त्यादिति भावः। अम्बिकापतिं शिवम्। अयं पुण्डरीकः, मया सह अमरलोकात् स्वर्गात् नन्दनवनसमीपेन अनुसरन् कैलासाचलमागच्छन्, निर्गत्य नन्दनवनाद्बहिरागत्य साक्षान्नन्दनवनदेवतया प्रत्यक्षीभूतया नन्दनकाननाधिष्ठात्र्या देव्या प्रणम्य अभिहित उक्त इत्यन्वयः। तृतीयैकवचनान्तपदानि नन्दनवनदेव-

পর লক্ষ্মী, সেই বালকটিকে কোলে লইয়া মহর্ষির নিকট যাইয়া বলিলেন,—"ভগবন্! আপনার এই পুত্রটি গ্রহণ করুন," এই কথা বলিয়া বালকটিকে সেই শ্বেতকেতুর হস্তে দিলেন। (ঙ) তিনিও, তাহাকে গ্রহণ করিয়া বালকের উপযুক্ত জাতকর্ম্ম প্রভৃতি সকল কার্য্য সম্পাদন করিয়া, সে, শ্বেতপদ্মে জন্মিয়াছিল বলিয়া, তাহার সেই 'পুণ্ডরীক'ই নাম করিলেন। (ঢ) এবং উপনয়নসংস্কার করিয়া সেই বালকটিকে সকল-বিদ্যা-শিক্ষা করাইলেন। ইনিই সেই পুণ্ডরীক।

(ণ) দেব ও দানবগণ ক্ষীরোদসাগর মন্থন করিতেছিলেন, তখন সেই ক্ষীরোদসাগর হইতে পারিজাত নামে একটি বৃক্ষ উৎপন্ন হয়, এইটি সেই পারিজাতবৃক্ষের মঞ্জরী। এবং এই মঞ্জরী ধারণ করা ব্রহ্মচর্য্যের বিরুদ্ধ হইলেও, যে ভাবে ইহা পুণ্ডরীকের কর্ণে স্থান পাইয়াছে, তাহাও বলিতেছি। (ত) আজ চতুর্দ্দশী তিথি বলিয়া, কৈলাসবাসী ভগবান্ মহাদেবের পূজা করিবার নিমিত্ত, ইনি আমার সহিত স্বর্গলোক হইতে নন্দনবনের নিকট দিয়া এই কৈলাসে আসিতেছিলেন, তখন নন্দনবনের দেবতা, এই পারিজাতপুষ্পের মঞ্জরীটি লইয়া,

(१) क्वचित् पारिजातेति नास्ति।

पल्लव-ग्रथिताभिराजानुलम्बिनीभिः कण्ठमालिकाभिर्निरन्तराच्छादितविग्रहया, नवचूताङ्कुर-कर्णपूरया, पुष्पासव-पान-मत्तया, नन्दनवन-देवतया, (१) पारिजात-कुसुममञ्जरीमिमामादाय प्रणम्याभिहितः,—(त) "भगवन्! सकलत्रिभुवन-दर्शनाभिरामायास्तवाकृतेरस्याः सुसदृशोऽयं (२) अलङ्कारः, प्रसादीक्रियताम्, (३) इयमवतंस-विन्यास-दुर्ललिता समारोप्यतां (४) श्रवणशिखरम्, व्रजतु सफलतां जन्म पारिजातस्य" (थ) इत्येवमभिदधानाञ्चायमात्म-रूप-स्तुतिवाद-(५) त्रपावनमित-लोचनः (६) तामनादृत्यैव गन्तुं प्रवृत्तः (द)। मया तु तामनु-

तया इत्यस्य विशेषणानि। मधुमासलक्ष्म्या वसन्तमासश्रिया दत्तो ललितहस्तस्य आत्मनः सुन्दरकरस्य अव-लम्बो यस्यास्तया, वसन्तलक्ष्म्याः सुन्दरहस्तधारिण्येत्यर्थः। बकुलमालिका मेखला काञ्ची यस्यास्तया। कण्ठ-मालिकाभिर्गलदत्तमालाभिः, निरन्तरं घनं आच्छादित आवृतः विग्रहः शरीरं यस्यास्तया। नवाश्चूताङ्कुरा आम्रमुकुलाः कर्णपूरा यस्यास्तया। पुष्पासवस्य कुसुममधुरूपमद्यस्य पानेन मत्ता तया।

(थ) किमभिहित इत्याह भगवन्निति। सकलत्रिभुवनस्य त्रिजगद्वासिनः सर्वजनस्य दर्शने दृष्टौ अभि-रामायाः सर्वतो मनोरमायाः, अस्या दृश्यमानायास्तवाकृतेः सुसदृशोऽयमलङ्कारः प्रसादीक्रियतां प्रसादपात्री-क्रियतां अनुग्रहेण गृह्यतामित्यर्थः। नन्वनया किं मया करणीयमित्याह इयमिति। अवतंसो अवतंसस्थाने कर्णयो विलासः अनया कान्तिसम्पादनं तस्मिन् विषये दुर्ललिता अन्येन दुष्प्रापतया दुःखेन लिप्सिता दुर्लभेत्यर्थः इयं मञ्जरी, श्रवणशिखरं कर्णोपरिभागं समारोप्यतां। पारिजातस्य जन्म सफलतां व्रजतु, तव तन्मञ्जरीधारणादिति भावः।

(द) इतीति। किञ्च। अयं पुण्डरीकः, आत्मरूपस्य निजसौन्दर्यस्य स्तुतिवादेन प्रशंसया या त्रपा लज्जा तया अवनमिते लोचने चक्षुषी येन स तादृशः सन्। तां नन्दनवनदेवताम्।

বসন্ত-লক্ষ্মীর হস্ত-ধারণপূর্ব্বক প্রত্যক্ষভাবে নন্দনবন হইতে নির্গত হইয়া, ইহাকে প্রণাম করিলেন; সে সময়ে তিনি এক ছড়া বকুল-ফুলের মালার চন্দ্রহার ধারণ করিয়াছিলেন, আর পারিজাতের কুসুম ও পল্লবদ্বারা গ্রথিত এবং আজানু-লম্বিত কতকগুলি মালা কণ্ঠে ধারণ করিয়াছিলেন, সেগুলি তাঁহার সমস্ত শরীর আবৃত করিয়াছিল; আর তিনি নূতন আম্র-মুকুলের কর্ণাভরণ ধারণ করিয়াছিলেন এবং পুষ্পের মধু-পানে মত্ত ছিলেন। তাহার পর তিনি বলিলেন,—(থ) "ভগবন্! আপনার এই আকৃতি, ত্রিজগদ্বাসী সকল লোকের দৃষ্টিতেই অত্যন্ত সুন্দর; অতএব ইহার সুযোগ্য এই অলঙ্কার অনুগ্রহপূর্ব্বক গ্রহণ করুন; কর্ণে সমর্পণ করিয়া শোভা সম্পাদন করিতে ইহা অন্যের পক্ষে দুর্লভ, কিন্তু আপনি কর্ণের উপরে ধারণ করুন; আজ পারিজাতবৃক্ষের জন্ম সফলতা লাভ করুক।" (দ) বনদেবতা এইরূপ বলিতেছিলেন, তখন পুণ্ডরীক, নিজের সৌন্দর্য্যের প্রশংসা শুনিয়া লজ্জায় নয়নযুগল অবনত

(१) क्वचित् वनदेवतया इतिमात्रः पाठः। (२) सदृशोयं।
(३) प्रसीद, क्रियताम्। (४) आरोप्यतां। (५) आत्मस्तुतिवाद...। (६)...विलोचनः।

यान्तीमालोक्य 'को दोषः, सखे! क्रियतामस्याः प्रणयपरिग्रहः' इत्यभिधाय बलादियमनिच्छतोऽप्यस्य कर्णपूरीकृता। तदेतत् कात्स्न्येन योऽयम्, यस्य चायम्, या चेयम्, (१) यथा चास्य श्रवणशिखरं समारूढ़ा तत्सर्वमावेदितम्। (ध)

इत्युक्तवति तस्मिन् स तपोधनयुवा किञ्चिदुपदर्शितस्मितोमामवादीत् (२)— "अयि कुतूहलिनि! किमनेन प्रश्नायासेन। यदि रुचितसुरभिपरिमला (३) तदा (४) गृह्यतामियम्" इत्युक्त्वा समुपसृत्यात्मीयात् श्रवणादपनीय कलैरलिकुलक्वणितैः प्रारब्धरतिसमागम-प्रार्थनामिव मदीये श्रवणपुटे तामकरोत् (न)।

(ध) सखेति। तां नन्दनवनदेवतां अनुयान्तीं पुण्डरीकमनुगच्छन्तीं। प्रणयपरिग्रहः प्रीतिदानग्रहणम्। इयं कुसुममञ्जरी, अनिच्छतोऽपि कर्णार्पणमनभिलषतोऽपि, अस्य पुण्डरीकस्य, बलात् कर्णपूरीकृता। तत्स्मात्। कात्स्न्येन साकल्येन, अयं तपोधनयुवा यः, यस्य चायं पुत्रः, इयं कुसुममञ्जरी च या यदुत्पन्नेत्यर्थः। अपि च इयं कुसुममञ्जरी यथा येन प्रकारेण, अस्य कुमारस्य श्रवणशिखरं कर्णोपरिदेशम्। अत्र कात्स्न्येनेति पदस्य वर्णतया श्रुतिदुःखावहत्वात् दुःश्रवत्वदोषः, स च 'साकल्येन' इति पाठेन समाधेयः।

(न) इतीति। तस्मिन् सहचरे। स तपोधनयुवा पुण्डरीकः, किञ्चिदुपदर्शितं स्मितं येन स तादृशः सन्। रुचित आकाङ्क्षितः सुरभिर्घ्राणतर्पकः परिमलो गन्धो यस्याः सा, इयं मञ्जरी। आत्मीयात् स्वकीयात् श्रवणात् कर्णात् अपनीय उन्मुच्य, तां मञ्जरीं, कलैर्मधुरास्फुटैः अलिकुलक्वणितैः गन्धलोभेन तत्समीपागतभ्रमरगणगुञ्जितैः करणैः प्रारब्धा उपक्रान्ता रतिसमागमस्य सुरतसंसर्गस्य प्रार्थना यया तामिव सतीं अकरोदर्पितवान्। अत्र रतिसमागमप्रार्थनारम्भणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

করিয়া, তাঁহাকে অনাদর করিয়াই যাইতে লাগিলেন। (ধ) এদিকে তাঁহাকেও পুণ্ডরীকের পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতে দেখিয়া আমি বলিলাম,—'সখে! দোষ কি, ইহার প্রীতিদান গ্রহণ কর' এই কথা বলিয়া, ইনি ইচ্ছা না করিলেও, বলপূর্ব্বক এই মঞ্জরীটি ইহার কর্ণাভরণ করিয়া দিলাম। অতএব, ইনি যে, এবং ইনি যাঁহার পুত্র, আর এই মঞ্জরীটি যে বৃক্ষে জন্মিয়াছে এবং যে ভাবে ইহার কর্ণের উপরে আরোহণ করিয়াছে, তাহা আনুপূর্ব্বিক সমস্তই এই বলিলাম।

(ন) তিনি এই কথা বলিলে সেই তপস্বী যুবক ঈষৎ হাস্য করিয়া আমাকে বলিলেন,— "অয়ি কৌতুকবতি! প্রশ্ন করার এই পরিশ্রমে প্রয়োজন কি, যদি এই মঞ্জরীটির ঘ্রাণতৃপ্তিকর সৌরভে তোমার অভিলাষ হইয়া থাকে, তবে তুমি এটি গ্রহণ কর" এই কথা বলিয়া তিনি আমার নিকটে আসিয়া, নিজের কর্ণ হইতে মঞ্জরীটি নামাইলেন, তখন ভ্রমরগণের অস্পষ্ট ও মধুর ঝঙ্কারে সে যেন সম্ভোগের প্রার্থনা আরম্ভ করিল, এই অবস্থায় তিনি সেই মঞ্জরীটিকে আমার

---

(१) योऽयं या चेयम्। (२) ..स्मितः अवादीत्।
(३) क्वचित् रुचितेति नास्ति। (४) क्वचित् तदेत्यपि न दृश्यते।

मम तु तत्करतलस्पर्शलोभेन तत्क्षणमपरमिव पारिजातकुसुमावतंसस्थाने पुलकं (१) आसीत् (प)। स च मत्कपोलस्पर्शसुखेन तरलीकृताङ्गुलिजालकात् करतलादक्षमालां लज्जया सह गलितामपि नाज्ञासीत् (फ)। अथाहं तामसम्प्राप्तामिव भूतलमक्षमालां गृहीत्वा सलीलं तद्भुज-पाश-सन्दानित-कण्ठ-ग्रह-सुखमिवानुभवन्ती दर्शितापूर्व-हारलता-लीलां कण्ठाभरणतामनयम्। (ब)

इत्थम्भूते च व्यतिकरे छत्रग्राहिणी मामवोचत्—"भर्तृदारिके! स्नाता देवी, प्रत्यासीदति गृहगमनकालः, तत्क्रियतां मज्जनविधिः" इति (भ)।

(प) ममेति। अवतंसस्थाने तत्कर्णे, अपरं पारिजातकुसुममिव, उज्ज्वलसुखत्वसाम्यादिति भावः, पुलकं पुलको रोमाञ्चः अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा पुलकशब्दस्य रोमाञ्चार्थे पुंस्त्वादव च क्लीबे प्रयोगाच्युतसंस्कृतिर्दोषः, स तु पुलक इति पाठेनैव समाधेयः। हृदयमिति पाठेऽपि साहस्याभावादनुचितार्थता-दोषः।

(फ) स इति। स च सोऽपि युवा। तरलं कृतं कम्पितं अङ्गुलीनां जालकं समूहो यस्य तस्मात् करतलात्, लज्जया सह गलितामपि पतितामपि अक्षमालां जपमालां। अत्र सहोक्तिरलङ्कारः।

(ब) अथेति। भूतलं असम्प्राप्तामिव अपतितामिव तामक्षमालां गृहीत्वा, तस्य युवकस्य भुजपाशाभ्यां सन्दानितः परिवेष्ट्य संयतो यः कण्ठस्तत्र ग्रहसुखं तदालिङ्गनसुखं अनुभवन्तीव, दर्शिता अपूर्वाया आश्चर्य्यायाः हारलताया लीला शोभा यया तां तथाविधां सतीं, सलीलं कण्ठाभरणतां अनयम्, हारवदात्मनः कण्ठे दत्तवतीत्यर्थः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा, हारलताया लीलेव लीलेति साहस्याक्षेपादसम्भवद्वस्तुसम्बन्धा निदर्शना चानयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(भ) इत्थमिति। व्यतिकरे परस्परासक्तिनिबन्धनव्यवहारे। छत्रग्राहिणी मच्छत्रधारिणी। प्रत्यासीदति उपस्थितो भवति। मज्जनविधिः स्नानकार्य्यम्।

কর্ণপুটে সমর্পণ করিলেন। (প) তখন কিন্তু তাঁহার করস্পর্শের আশায় আমার সেই কর্ণে আর একটি পারিজাতপুষ্পের ন্যায় রোমাঞ্চ উৎপন্ন হইল। (ফ) এবং আমার গণ্ডস্থলের স্পর্শসুখে তাঁহারও হস্তের অঙ্গুলিসমূহ কাঁপিতে লাগিল, তখন লজ্জার সহিত তাঁহার হস্ত হইতে জপের মালা পড়িয়া গেলেও, তিনি তাহা জানিতে পারিলেন না। (ব) তাহার পর আমি, সেই জপের মালা ভূতলে না পড়িতে পড়িতেই গ্রহণ করিয়া লীলার সহিত নিজের কণ্ঠের আভরণ করিলাম; সেই মালা ছড়া, আমার কণ্ঠে অপূর্ব্ব হারের শোভা দেখাইতে লাগিল এবং তিনি ভুজপাশে আমার কণ্ঠ বেষ্টন করিয়া আলিঙ্গন করিলে যে সুখ হয়, তাহাই যেন অনুভব করিতে লাগিলাম।

(ভ) আসক্তিবশতঃ পরস্পরের এইরূপ ব্যবহার হইয়া গেলে, আমার ছত্রধারিণী পরি-

(१) हृदयं।

अहन्तु तेन तस्या वचनेन नवग्रहा करिणीव प्रथमाङ्कुशपातेनानिच्छया (१) कथं कथमपि समाकृष्यमाणा तन्मुखलावण्यपङ्कमग्नामिव कपोल-पुलक-कण्टक-जालक लग्नामिव, मदन-शर-शलाका-कीलितामिव, सौभाग्य-गुण स्यूतामिव अतिकृच्छ्रेण दृष्टिमाकृष्य (२) स्नातुमुदचलम् (म)। उच्चलितायाश्च मयि द्वितीयो मुनिदारकस्तथाविधं (३) तस्य धैर्य्यस्खलितमालोक्य किञ्चित्प्रकटित-प्रणयकोप इवावादीत्। (य)

"सखे! पुण्डरीक! नैतदनुरूपं भवतः। क्षुद्रजनक्षुण्ण एष मार्गः (४)।

(म) अहमिति। प्रथमाङ्कुशपातेन, नवो नूतनो ग्रहो धारणं यस्याः सा तादृशी करिणीव, तस्याश्छत्रग्राहिण्यास्तेन वचनेन, अनिच्छया कथं कथमपि कष्टेन समाकृष्यमाणा सती। अत्रोपमालङ्कारः। लावण्यं तस्य सौन्दर्य्यमिव पङ्कः कर्द्दमस्तत्र मग्नामिव, कष्टेनाकर्षणादिति भावः। अत्र निरङ्ग-केवलरूपकक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। कपोलयोस्तदीयगण्डयोः पुलका एव कण्टकानि तेषां जालके जाले लग्नामिव संसक्तामिव। अत्रापि पूर्ववद्भावोऽलङ्कारश्च। मदनस्य शरशलाकाभिः कीलितां विद्धामिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। सौभाग्यमेव गुणः सूत्रं तेन स्यूतां कृतसीवनामिव, कष्टेनाकर्षणादित्युभयत्रापि भावः। अत्रापि पूर्ववत् रूपकोत्प्रेक्षयोः सङ्करः। तन्मुखादतिकृच्छ्रेण दृष्टिमाकृष्य स्नातुमुदचलमिति सम्बन्धः।

(य) उदिति। किञ्च। धैर्य्यस्खलितं कामविकारेण धैर्य्यभङ्गं। किञ्चित् प्रकटित ईषत्प्रकाशितः प्रणयकोपो येन तादृश इव सन्।

(र) सखे इति। अनुरूपमुचितम्। एष मार्गः कामिनीदर्शने कामुकभाव इत्यर्थः, क्षुद्रजनक्षुण्णः नीचलोकैर्व्यवहृतः, न तु त्वादृशैरिति भावः। अतएवात्र आर्थी परिसंख्यालङ्कारः। धैर्य्यधना हि

চারিকা আমাকে ব'লল,—"রাজকন্যে! মহারাণী স্নান করিয়াছেন, বাটীতে যাইবার সময়ও উপস্থিত হইয়াছে; অতএব আপনি স্নান করুন।" (ম) প্রথম অঙ্কুশের প্রহারে নূতন-ধৃত হস্তিনীর ন্যায় আমি, সেই পরিচারিকার বাক্যে অনিচ্ছাপূর্ব্বক অতিকষ্টে ফিরিলাম; তখন আমার দৃষ্টি, তাঁহার লাবণ্যরূপ কর্দ্দমে যেন মগ্ন হইয়াছিল, তাঁহার গণ্ডদেশে জাত রোমাঞ্চরূপ কণ্টকজালে যেন জড়িত হইয়া পড়িয়াছিল, কামদেবের শর-শলাকাতে যেন বিদ্ধ হইয়াছিল এবং সৌভাগ্যরূপ সূত্রে যেন সেলাই করিয়া রাখিয়াছিল; সুতরাং আমি অতিকষ্টে তাঁহার মুখমণ্ডল হইতে সেই দৃষ্টিকে আকর্ষণ করিয়া স্নান করিতে চলিলাম। (য) আমি স্নান করিতে চলিয়াছি, এমন সময়ে, সেই দ্বিতীয় মুনিকুমার, তাঁহার সেইরূপ ধৈর্য্যভঙ্গ দেখিয়া, ঈষৎ প্রণয়-কোপ প্রকাশ করিয়াই যেন বলিতে লাগিলেন।

(র) 'সখে! পুণ্ডরীক! এরূপ আচরণ করা তোমার উচিত হয় নাই, কারণ—

---

(१) अनिच्छयापि। (२) समाकृष्य। (३) तथाविधः। (४) क एष मार्गः।

धैर्य्यधना हि साधवः। किं यः कश्चित् (१) प्राकृत इव विक्लवीभवन्तमात्मानं न रुणत्सि। कुतस्तवापूर्वोयमयोन्द्रियोपप्लवः ? (२) येनास्येवं कृतः (ख)। क्व ते तद्धैर्य्यम्, क्वासाविन्द्रियजयः, क्व तद्वशित्वं चेतसः, क्व सा प्रशान्तिः, क्व तत् कुलक्रमागतं ब्रह्मचर्य्यम्, क्व सा सर्वविषयनिरुत्सुकता, क्व ते गुरूपदेशाः, क्व तानि श्रुतानि, क्व ता वैराग्यबुद्धयः, क्व तदुपभोगविद्वेषित्वम्, क्व सा सुखपराङ्मुखता, क्वासौ तपस्यभिनिवेशः, क्व सा संयमिता, (३) क्व सा भोगानामुपर्य्यरुचिः, क्व तद्यौवनानुशासनम् (ग)। सर्वथा निष्फला प्रज्ञा, निर्गुणो धर्म्मशास्त्राभ्यासः, निरर्थकः संस्कारः निरुपकारको गुरूपदेशविवेकः, निष्प्रयोजना प्रबुद्धता, निष्कारणं ज्ञानम्, यदत्र भवादृशा अपि रागाभिषङ्गैः कलुषी-

साधवः, कारणविशेषेणाधीरतासम्भवेऽपीति भावः। प्राकृत इव साधारणलोक इव, विक्लवीभवन्तं मदनावेशेन विह्वलीभवन्तं आत्मानं मनः किं न रुणत्सि। अपूर्वः अज्ञातपूर्वः, इन्द्रियाणामुपप्लवः क्षोभ उद्वेलनं। एवं कृतः अधीरीकृतः।

(ख) क्वेति। तच्छब्दैरदःशब्दाभ्याञ्च पूर्वतनं धैर्य्यादिकं परामृश्यते। वशित्वं निवृत्तिमार्गे स्वाधीनता। प्रशान्तिः शमगुणावलम्बनं सात्त्विकता। सर्वेषु विषयेषु निरुत्सुकता उत्कण्ठाराहित्यम्। श्रुतानि शास्त्रज्ञानानि। तपस्यभिनिवेशस्तपस्यायामेवाग्रहः। संयमिता संयतभावः भोग्यैरनाकर्षणमित्यर्थः। यौवनानुशासनं यौवनविकारनिग्रहः।

(ग) सर्वथेति। प्रज्ञा प्रतिभा। निर्गुणः सदसद्विवेकजननरूपगुणहीनः। संस्कारः शिक्षाजनित

ক্ষুদ্র লোকেরাই এই পথ অবলম্বন করিয়া থাকে; আর সাধু লোকের ধৈর্য্যই ধন। তোমার চিত্ত অধীর হইয়া পড়িয়াছে, সুতরাং যে কোন প্রাকৃত লোকের ন্যায় তুমি সেই চিত্তকে রুদ্ধ করিতেছ না কেন? আজ কোথা হইতে তোমার এই অপূর্ব্ব ইন্দ্রিয়ের উপদ্রব উপস্থিত হইল? যে তোমাকে এইরূপ করিয়া ফেলিয়াছে। (গ) তোমার সে ধৈর্য্য কোথায়? সে জিতেন্দ্রিয়তা কোথায়? চিত্তের সে স্বাধীনতা কোথায়? সে শমগুণ কোথায়? কুলক্রমাগত সে ব্রহ্মচর্য্য কোথায়? সমস্ত বিষয়ের প্রতি সে নিরুৎসুকতা কোথায়? সে গুরূপদেশ কোথায়? সে শাস্ত্রজ্ঞান কোথায়? সে বৈরাগ্য-বুদ্ধি কোথায়? উপভোগের প্রতি সে বিদ্বেষ কোথায়? সে সুখ-পরাঙ্মুখতা কোথায়? তপস্যার প্রতি সে আগ্রহ কোথায়? সে সংযতভাব কোথায়? ভোগের উপর সে অরুচি কোথায়? এবং যৌবন-বিকারের সে শাসনই বা কোথায় গেল? (ঘ) আজ প্রতিভা, সকল প্রকারে নিষ্ফল হইয়াছে; ধর্ম্মশাস্ত্র অভ্যাস করার গুণ

(१) कथन। (२) आर्य्येन्द्रियोपप्लवः।

(३) क्वचित् 'क्व सा संयमिता' इति पाठो न दृश्यते।

क्रियन्ते प्रमादैराभिभूयन्ते (व)। कथं करतलाद्गलितामपहृतामक्षमालामपि न लक्षयसि। अहो! विगतचेतनत्वम् (श)। अपहृता नामेयम्, (१) इदमपि तावदपक्रियमाणं (२) अनया अनार्य्यया निवार्य्यतां हृदयम्।" (ष)

इत्येवं (३) अभिधीयमानश्च तेन किञ्चिदुपजातलज्ज इव प्रत्यवादीत्—"सखे! कपिञ्जल! किं मामन्यथा सम्भावयसि। नाहमेवमस्या दुर्विनीतकन्यकाया मर्षयाम्यक्षमालाग्रहणापराधमिमम्" (स) इत्यभिधाय अलीक-

---

चित्तशुद्धिः। प्रबुद्धता विषयेषु प्रकृष्टबोधः भोग्यानामसारताबोध इत्यर्थः। ज्ञानं तत्त्वज्ञानम्। यद्यस्मात्। रज्यन्ते एभिरिति रागाः स्रक्चन्दनवनितादयो विषयास्तेषु अभिषङ्गैरासक्तिभिः, कलुषीक्रियन्ते आविलीक्रियन्ते आक्रम्य दुष्टीक्रियन्त इत्यर्थः, प्रमादैः स्वकर्त्तव्याद्भ्रंशरूपैः, अभिभूयन्ते आयत्तीक्रियन्ते, यद्भवानिदानीमुद्दिष्टशिवाराधनमपहाय कामिन्यामासज्यते इति भावः।

(श) कथमिति। अहो आश्चर्य्यं, विगतचेतनत्वं संज्ञाहीनत्वं, अक्षमालाया अपि लक्ष्यीकरणाभावादिति भावः।

(ष) अपीति। अनया अनार्य्यया धृष्टया कन्यया, इयमक्षमाला अपहृता नाम, इदमपि तावदपक्रियमाणं हृदयं निवार्य्यतां त्वया निषिध्यताम्।

(स) इतीति। तेन कपिञ्जलेन, इत्येवमभिधीयमानः पुण्डरीकः। अन्यथा तया कन्यया हृतचित्तं किं कथं सम्भावयसि, नाहं तथेति भावः। तर्हि कथं तवेयमधीरतेत्याह नाहमिति। मर्षयामि क्षमे। न खलु कामकृता ममेयमधीरता, अपि तु क्रोधकृतैवेति भावः। अत्र प्रकाशितायाः अपि कामकृतायाः अधीरतायाः क्रोधकृतत्वव्याजेन गोपनात् व्याजोक्तिरलङ्कारः।

গিয়াছে; চিত্ত-শুদ্ধি নিরর্থক হইয়া পড়িয়াছে; গুরূপদেশ-জনিত বিবেক, কোন উপকার করে নাই; বিষয়ের অসারতা-জ্ঞান, প্রয়োজনবিহীন হইয়াছে এবং তত্ত্বজ্ঞান নিষ্ফল হইয়া দাঁড়াইয়াছে; যেহেতু—আজ বিষয়াসক্তিতে তোমার মত লোককেও কলুষিত করিয়াছে এবং প্রমাদ আসিয়া আয়ত্ত করিয়া ফেলিয়াছে। (শ) এদিকে হাত হইতে জপের মালা পড়িয়া গিয়াছে, তাহা আবার কেহ অপহরণ করিয়া নিয়াছে, তুমি তাহাও লক্ষ্য করিতেছ না কেন? তোমার কি আশ্চর্য্য সংজ্ঞাহীনতা! (ষ) এই প্রগল্‌ভা কন্যাটা জপের মালা ত অপহরণ করিয়া নিয়াছেই, তোমার এই হৃদয়কেও যে অপহরণ করিয়া নিতেছে, তাহা নিবারণ কর।"

(স) কপিঞ্জল এইরূপ বলিতে লাগিলে, তিনি যেন কিছু লজ্জিত হইয়াই প্রত্যুত্তর করিলেন—"সখে! কপিঞ্জল! কেন তুমি আমাকে অন্যরূপ মনে করিতেছ? আমি এই দুর্বিনীত কন্যাটার এই ভাবে জপের মালা লইয়া যাইবার এই অপরাধ মার্জ্জনা করিতে

---

(१) विगतचेतनत्वमपहृतानामेवं। (२) ह्रियमाणं। (३) एवं।

कोप-कान्तेन प्रयत्न-विरचित-भीषण-भ्रुकुटिभूषणेन चुम्बनाभिलाष-स्फुरिताधरेण मुखेन्दुना मामवदत्—"चपले! प्रदेशादस्मादिमामक्षमाला-मदत्त्वा पदात् पदमपि न गन्तव्यम्" इति (छ)। तच्च श्रुत्वाहमात्मकण्ठा-दुन्मुच्य मकरध्वज-लास्यारम्भ लीला-पुष्पाञ्जलिमेकावलीम् 'भगवन्! गृह्यता-मक्षमाला' इति मन्मुखासक्तदृष्टेः शून्यहृदयस्यास्य प्रसारिते पाणौ निधाय स्वेदसलिलस्नातापि पुनः स्नातुमवातरम् (ज)। उत्थाय च कथमपि प्रयत्नेन निम्नगेव प्रतीपं नीयमाना सखीजनेन बलादम्बया सह तमेव चिन्तयन्ती स्वभवनमयासिषम् (झ)। गत्वा च प्रविश्य कन्यान्तःपुरं ततः प्रभृति तद्विरह-

---

(छ) इतीति। अलीककोपेन कान्तस्तामवर्णतया पूर्वतोऽपि मनोहरस्तेन, प्रयत्नेन क्रोधाभावेन स्वयमुत्पद्यसम्भवात्त्वेष्टया, विरचिता कृता भीषणा भ्रुकुटिरेव भूषणं यस्य तेन, तथा चुम्बनाभिलाषेण स्फुरितः स्पन्दितः अधरो यस्य तेन, मुखमिन्दुरिव तेन। अत्र भयकारणीभूतभ्रुकुटेर्भूषणगुणयोगोत्पत्तेर्विषमा-लङ्कारः मुखेन्दुनेति लुप्तोपमा चानयोर्मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ज) तदिति। मकरध्वजेन मदनेन यो लास्यारम्भः शरीरकम्पनात्मकनृत्यारम्भस्तत्र लीलापुष्पाञ्जलिं तत्स्वरूपां, नृत्यारम्भे पुष्पाञ्जलिक्षेपस्य लोकाचारसिद्धत्वात् स्फटिकाक्षमालायाश्च तदृश्यमानत्वादिति भावः। एकावलीं मदीयमेकश्रेणिकं हारं। अत्र निरङ्गकेवलरूपकमलङ्कारः। मन्मुखे आसक्ता दृष्टिर्यस्य तस्य, शून्यं विषयान्तरज्ञानरहितं हृदयं यस्य तस्य, अतएव मदीयमुक्तामालामपि स्वकीयजपमालात्वेनेवासौ निर्बाधं गृहीतवानिति भावः। अस्य पुण्डरीकस्य। स्वेदसलिलेन घर्म्मजलेन स्नातापि।

(झ) उत्थायेति। किञ्चाहं सरोवरादुत्थाय, सखीजनेन कर्त्रा, प्रयत्नेन बलाच्च निम्नगा नदीव, कथमपि कष्टेन, प्रतीपं प्रतिकूलं मनसो मुनिकुमारदिग्गामित्वेऽपि तद्विपरीतदिशमित्यर्थः नीयमाना, तमेव मुनिकुमारं चिन्तयन्ती सती, अम्बया मात्रा सह स्वभवनमयासिषमित्यन्वयः। अत्रोपमालङ्कारः।

পারিব না।* (ছ) এই কথা বলিলে পর তাঁহার মুখচন্দ্র, মিথ্যা ক্রোধে আরও সুন্দর দেখা যাইতে লাগিল, যত্নপূর্ব্বক ভয়ঙ্কর ভ্রূকুটি করিলেন, তাহাও কিন্তু সে মুখের অলঙ্কার হইয়া দাঁড়াইল এবং চুম্বন করিবার ইচ্ছায় অধর স্পন্দিত হইতে লাগিল; এইরূপ মুখচন্দ্রে আমাকে বলিলেন—"হে চঞ্চলে! আমার এই জপের মালা না দিয়া তুমি এ স্থান হইতে এক পা'ও গমন করিও না।" (জ) আমি তাঁহার সেই কথা শুনিয়া, কামদেবকর্ত্তৃক নৃত্যারম্ভের বিলাস-পুষ্পাঞ্জলিস্বরূপ একলহরী মুক্তার মালা, নিজের কণ্ঠ হইতে খুলিয়া বলিলাম—'ভগবন্! জপের মালা গ্রহণ করুন'। তখন তাঁহার দৃষ্টি, আমার মুখে একেবারে লাগিয়া রহিয়াছিল এবং হৃদয়, শূন্য ছিল; অথচ তিনি মালা গ্রহণ করিবার নিমিত্ত হস্ত প্রসারিত করিয়াছিলেন, আমি সেই হস্তের উপরে মালা ছড়া রাখিয়া, ঘর্ম্মজলে স্নান করিয়াও পুনরায় স্নান করিবার নিমিত্ত সরোবরে যাইয়া নামিলাম। (ঝ) এবং তথা হইতে উঠিলাম, পরে, সখীগণ আসিয়া,

विधुरा किमागतास्मि, किं तत्रैव स्थितास्मि, किमेकाकिन्यस्मि, किं परिवृतास्मि, किं तूष्णीमस्मि, किं प्रस्तुतालापास्मि, किं जागर्मि, किं सुप्तास्मि, किं रोदिमि, किं न रोदिमि, किं दुःखमिदम्, किं सुखमिदम्, (१) किमुत्कण्ठेयम्, किं व्याधिरयम्, किं व्यसनमिदम्, किमुत्सवोऽयम्, किं दिवस एषः, किं निशेयम्, कानि रम्याणि, कान्यरम्याणीति सर्वं नावागच्छम् (ख)। अविज्ञातमदनवृत्तान्ता च क्व गच्छामि, किं करोमि, किं पश्यामि, किमालपामि, कस्य कथयामि, कोऽस्य प्रतीकार इति सर्वञ्च नाज्ञासिषम्, (ग)। केवलमारुह्य कुमारीपुरप्रासादं विसर्ज्य च सखीजनं द्वारि निवारिताशेषपरिजनप्रवेशा सर्वव्यापारानुत्सृज्यैकाकिनी मणिजालगवाक्षनिक्षिप्तमुखी, तामेव

(ख) गत्वेति। किञ्च। तस्य मुनिकुमारस्य विरहेण विधुरा विह्वला सती। परिवृता लोकैः परिवेष्टिता। प्रस्तुतालापा सखीभिरारब्धकथोपकथना। सुप्ता निद्रिता। व्यसनं विपत्। कानि वस्तूनि। नावागच्छं न ज्ञातवती। अत्र वितर्काख्यभावो विप्रलम्भशृङ्गारस्याङ्गमिति प्रेयोनामालङ्कारस्तद्विरहविधुरेति पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन सङ्कीर्य्यते।

(ग) अविज्ञातेति। अविज्ञातः पूर्वमनवगतः मदनवृत्तान्तः कामप्रभावो यया सा। नाज्ञासिषं, पूर्वमविज्ञातमदनवृत्तान्तत्वादिति भावः। अत्रापि पूर्ववदेवालङ्कारः।

(घ) केवलमिति। द्वारि निवारितः अशेषाणां सर्वेषां परिजनानां प्रवेशो यया सा। मणीनां जालं समूहो यस्मिन् तादृशे गवाक्षे वातायने निक्षिप्तं स्थापितं मुखं यया सा। तत्सनाथतया तेन मुनिकुमारेण संयुक्ततया हेतुना, प्रसाधितामलङ्कृतामिव, कुसुमितां सञ्जातपुष्पामिव, महान्ति रत्नानि यस्मिन् तादृशेन

যত্নপূর্ব্বক বলক্রমে কোনপ্রকারে আমাকে নদীর ন্যায় প্রতিকূলভাবে নিয়া চলিল; তাই আমি তাঁহাকেই চিন্তা করিতে করিতে, মাতার সহিত নিজ-বাটীতে গেলাম। (খ) এবং যাইয়া কন্যান্তঃপুরে প্রবেশ করিয়া সেই হইতে তাঁহার বিরহে আকুল হইয়া, আমি কি আসিয়াছি কিংবা সেইখানেই রহিয়াছি; কি একাকিনী আছি অথবা লোকে পরিবেষ্টিত রহিয়াছি; কি নীরবে আছি, না আলাপ আরম্ভ করিয়াছি; কি জাগিয়া আছি, না ঘুমাইয়া রহিয়াছি; কি কাঁদিতেছি, কিংবা কাঁদিতেছি না; এটা কি দুঃখ, এটা কি সুখ; এটা কি উৎকণ্ঠা, এটা কি রোগ, এটা কি বিপদ, এটা কি উৎসব, এটা কি দিন, এটা কি রাত্রি এবং কোন্ বস্তু সুন্দর, কোন্ বস্তুই বা কুৎসিত—এই সমস্ত বিষয়ই অবগত হইতে পারিয়াছিলাম না। (গ) পূর্ব্বে আর কখনও কামের বৃত্তান্ত জানি নাই; সুতরাং 'কোথায় যাইব, কি করিব, কি দেখিব, কি বলিব, কাহার নিকট বলিব এবং ইহার প্রতীকার কি' এই সমস্ত বিষয়ও বুঝিয়াছিলাম না। (ঘ) পরে কন্যা-পুরের অট্টালিকার উপরে আরোহণ করিয়া, সখীজনকে বিদায় দিয়া, দ্বারে

---

(१) सातमिदम्।

दिशं तत्मनाथतया प्रसाधितामिव कुसुमितामिव (१) महारत्ननिधानाधिष्ठितामिव अमृतरससागर-(२) पूर-प्लावितामिव पूर्णचन्द्रोदयालङ्कृतामिव दर्शनसुभगामीक्षमाणा, (घ) तस्माद्दिगन्तरादागच्छन्तमनिलमपि वनकुसुमपरिमलमपि शकुनिध्वनिमपि तद्वार्त्तां प्रष्टुमीहमाना, (ङ) तद्वल्लभतया तपःक्लेशायापि स्पृहयन्ती, तत्प्रीत्येव गृहीतमौनव्रता, (च) स्मरजनित-पक्षपाता च, तत्परिग्रहान्मुनिवेशस्य (३) अग्राम्यतां तदास्पदतया यौवनस्य

निधानेन निधिना अधिष्ठिता आश्रिता तामिव, अमृतरसस्य सुधाद्रवस्य यः सागरस्तस्य पूरेण उदेन प्लावितामिव, तथा पूर्णचन्द्रोदयेन अलङ्कृतामिव, दर्शनसुभगां आलोकने रमणीयां, तामेव दिशं केवलं निरीक्षमाणा सती, निष्पन्दमतिष्ठमिति परेणान्वयः। इत्थमन्येषामपि प्रथमान्तानामन्वयो बोध्यः। अत पञ्चानामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ङ) तस्मादिति। तस्मात् दिगन्तरात् तेन मुनिकुमारेणाधिष्ठिताद्दिग्विशेषात्, आगच्छन्तं अनिलं वायुमपि, वनकुसुमपरिमलमपि तस्माद्दिगन्तरादागच्छन्तमिति सम्बध्यते, शकुनिध्वनिमपि तथाविधं पक्षिरवमपि, तस्य कुमारस्य वार्त्तां प्रष्टुमीहमाना सती, "कामार्त्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु" इति न्यायादिति भावः। पृच्छतेर्द्विकर्म्मत्वादुभयमपि कर्म्म।

(च) तदिति। तस्य कुमारस्य वल्लभतया प्रियतया तपःक्लेशस्येति भावः, तपःक्लेशायापि स्पृहयन्ती तपश्चरणकष्टमपि वाञ्छन्ती। "स्पृहेरीप्सित"मिति सम्प्रदाने चतुर्थी। तस्य कुमारस्य प्रीत्येव मौनव्रते वाल्लभ्येनेव हेतुना, गृहीतमौनव्रता, वल्लभजनस्य प्रियवस्तुनि स्वस्यापि प्रीतिः सर्वत्र सिद्धत्वादित्युभयतापि भावः। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) स्मरेति। स्मरेण मदनेन जनितः पक्षपातस्तस्मिन् कुमारे प्रेम यस्याः सा चाहं। तेन कुमारेण परिग्रहादवलम्बनादेव, मुनिवेशस्य अग्राम्यतां निर्दोषतां, अध्यारोपयन्ती निरूपयन्ती। स कुमारः आस्पद-

---

সকল পরিজনকেই প্রবেশ করিতে নিষেধ করিয়া, সকল কার্য্য পরিত্যাগ করিয়া একাকিনী, মণিময় গবাক্ষদ্বারে মুখমণ্ডল সংস্থাপন করিয়া, কেবল সেই দিক্‌ই নিরীক্ষণ করিতে লাগিলাম। কারণ—তিনি সেই দিকে ছিলেন বলিয়া সে দিক্‌টা যেন অলঙ্কৃত ছিল, পুষ্পেই যেন শোভিত ছিল, মহামূল্য রত্নে পরিপূর্ণ কোন নিধিকর্ত্তৃক যেন অধিষ্ঠিত ছিল, অমৃত-সাগরের তরঙ্গে যেন প্লাবিত ছিল এবং পূর্ণচন্দ্রের উদয়ে যেন অলঙ্কৃত ছিল, তাই দেখিতেও মনোহর ছিল। (ঙ) সেই দিক্ হইতে যে বায়ু, যে বনপুষ্পের সৌরভ এবং যে পক্ষীর রব আসিতেছিল, তাহাদের প্রত্যেকের নিকটেও তাঁহার বৃত্তান্ত জিজ্ঞাসা করিবার চেষ্টা করিতেছিলাম। (চ) তাঁহার প্রিয় বলিয়া, তপস্যা করিবার কষ্টও ইচ্ছা করিতেছিলাম এবং মৌনব্রতে তাঁহার প্রীতি আছে বলিয়াই যেন মৌনাবলম্বন করিয়াছিলাম। (ছ) এবং কামদেব তাঁহার প্রতি

---

(१) क्वचित् 'कुसुमितामिव' इति पाठो नास्ति। (२) अमृतरससारसागर...। (३) मुनिवेषस्य।

चारुतां तच्छ्रवणसम्पर्कात् पारिजातकुसुमस्य मनोहरतां तन्निवासात् सुरलोकस्य रम्यतां तद्रूपसम्पदा कुसुमायुधस्य दुर्जयतां अध्यारोपयन्ती, (छ) दूरस्थस्यापि (१) कमलिनीव सवितुः सागरवेलेव चन्द्रमसः मयूरीव जलधरस्य तस्यैवाभिमुखी, (ज) तथैव तां तद्विरहातुर-जीवितोद्गम-रक्षावलीमिवाक्षावलीं कण्ठेनोद्वहन्ती, (झ) तथैव च तया प्रस्तुततद्रहस्यालापयेव कर्णलग्नया पारिजातमञ्जर्य्या, (ञ) तथैव च तेन तत्करतलस्पर्शसुखजन्मना कदम्ब-

माश्रयो यस्य तस्य भावस्तत्ता तथैव हेतुना, यौवनस्य चारुतां मनोहरत्वमध्यारोपयन्ती। तस्य कुमारस्य श्रवणसम्पर्कात् कर्णसंसर्गादेव हेतोः, पारिजातकुसुमस्य मनोहरतां अध्यारोपयन्ती। तस्य कुमारस्य निवासादधिष्ठानादेव सुरलोकस्य स्वर्गस्य रम्यतामध्यारोपयन्ती। तथा तस्य कुमारस्य रूपसम्पदा हेतुना, कुसुमायुधस्य मदनस्य दुर्जयतां मया जेतुमशक्यताञ्चाध्यारोपयन्ती सती। सर्वं स्वरजनिततत्पक्षपातादिति भावः। अत्र अध्यारोपयन्तीत्येकया क्रियया अयाम्यतामित्यादीनां बहूनां कर्म्मतयाभिसम्बन्धात्तुल्ययोगितालङ्कारः।

(ज) दूरेति। दूरस्थस्यापि सवितुः सूर्य्यस्य कमलिनीव, दूरस्थस्यापि चन्द्रमसः सागरवेलेव समुद्रजलोच्छ्वास इव, तथा दूरस्थस्यापि जलधरस्य मेघस्य मयूरीव, दूरस्थस्यापि तस्यैव कुमारस्य, अभिमुखी सती। अत्र मालोपमालङ्कारः।

(झ) तथैवेति। तस्य कुमारस्य विरहेणातुरं पीड़ितं यत् जीवितं मम जीवनं तस्य उद्गमे देहान्निर्गमनविषये रक्षावलीं तस्य रक्षणायाभिमन्त्रितमालामिव विरहे वल्लभजनस्य यत्किञ्चिद्वस्तुनोऽपि आश्वासोपायत्वादिति भावः। तां अक्षमालां जपमालां तथैव पूर्ववदेव कण्ठेनोद्वहन्ती धारयन्ती सती। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। चतुरतरा महाश्वेता तदानीं स्वसुखासक्तहृष्टैः शून्यहृदयस्य पुण्डरीकस्य हस्ते जपमाला स्खलितामित्युक्ता स्वकीयामिव मुक्तामालामर्पितवती, सा स्फटिकमयजपमाला तु तस्याः कण्ठ एवासीदिति मन्तव्यम्।

(ञ) तथैवेति। प्रस्तुत आरब्धः तस्य कुमारस्य सम्बन्धे रहस्यालापो गोपनीयकथा यया तयैव, तथैव

আমার অত্যন্ত পক্ষপাত জন্মাইয়াছিলেন ; সুতরাং তিনি ধারণ করিয়াছেন বলিয়াই মুনিবেশের নির্দোষতা মনে করিতেছিলাম ; তাঁহার অঙ্গে যৌবন ছিল বলিয়াই যৌবনের সৌন্দর্য্য নিশ্চয় করিতেছিলাম ; তাঁহার কর্ণে স্থান পাইয়াছিল বলিয়াই পারিজাত পুষ্পের রমণীয়তা স্থির করিতেছিলাম ; তিনি বাস করেন বলিয়াই স্বর্গলোকের মনোহরতা বোধ করিতেছিলাম এবং তাঁহার রূপসমৃদ্ধিতেই, আমার পক্ষে কামদেব অজেয় বলিয়া স্থির করিতেছিলাম। (জ) তিনি দূরবর্ত্তী হইলেও, সূর্য্যের প্রতি পদ্মিনীর ন্যায়, চন্দ্রের প্রতি সমুদ্র-জলের ন্যায় এবং মেঘের প্রতি ময়ূরীর ন্যায় আমিও তাঁহারই অভিমুখী হইয়া রহিলাম। (ঝ) তাঁহার বিরহ-কষ্টে বহির্গমনোন্মুখ আমার জীবনের রক্ষামালার ন্যায় সেই স্ফটিকময় জপমালা, সেই ভাবেই কণ্ঠে ধারণ করিতেছিলাম। (ঞ) সেই পারিজাতমঞ্জরীটিও তাঁহার সম্বন্ধে গোপনীয় আলাপ

(१) दूरस्थापि, दूरतःस्थितस्यापि।

मुकुलकर्णपूरायमाणेन रोमाञ्चजालेन कण्टकितैककपोलफलका निष्पन्दमतिष्ठम्। (ट)

अथ ताम्बूलकरङ्कवाहिनी मदीया तरलिका नाम मयैव सह गता स्नातुमासीत्। सा च पश्चाच्चिरादिवागत्य तथावस्थितां शनैः शनैः (१) मामवादीत्— "भर्त्तृदारिके! यौ तौ तापसकुमारकौ दिव्याकारावस्माभिरच्छोदसरस्तीरे दृष्टौ, तयोरेको येन भर्त्तृदुहितुरियमवतंसीकृता (२) सुर-तरु-कुसुम-मञ्जरी, (३) स तस्माद्द्वितीयादात्मनो रक्षन् दर्शनमतिनिभृतपदः कुसुमित-लता-सन्तान-गहनान्तरेणागत्य मामागच्छन्तीं पृष्ठतो भर्त्तृदारिकामुद्दिश्याप्राक्षीत् (ठ)— "बालिके! केयं कन्यका, कस्य वापत्यम्, किमभिधाना, क्व वा गच्छति"

मुनिकुमारार्पितकर्णमिषेव कर्णलग्नया अन्योऽपि रहस्यमालपितुं कर्णं लगति। , पारिजातमञ्जर्य्या उपलक्षिता। अत्र रहस्यालापप्रस्तावोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ट) तथैवेति। तस्य कुमारस्य करतलस्पर्शसुखाज्जन्म यस्य तेन, कदम्बमुकुलस्य यः कर्णपूरस्तद्वदाचरता, तेन तत्स्मरणजनितेन रोमाञ्चजालेन च, तथैव पूर्ववदेव कण्टकितं सञ्जातकण्टकं एकं कपोलफलकं गण्डस्थलं यस्याः सा तादृशी च सती निष्पन्दमतिष्ठम्। अत्र काकुङ्गतोपमालङ्कारः।

(ठ) अथेति। दिव्याकारौ परमसुन्दरमूर्त्ती। इयं सुरतरोः पारिजातस्य कुसुममञ्जरी अवतंसीकृता कर्णभूषणं कृता। द्वितीयात् कपिञ्जलादित्यर्थः, आत्मनो दर्शनं रक्षन् निवारयन् कपिञ्जलो यथात्मानं न पश्यति तथेत्यर्थः, अतिनिभृतपदः अतिशयनिःशब्दपदसञ्चारः, कुसुमितो लतासन्तानो वल्लीसमूहो यस्मिन् तादृशस्य गहनस्य निविड़वनस्य अन्तरेण मध्येन।

আরম্ভ করিয়াই যেন, সেইভাবেই আমার কর্ণে সংলগ্ন ছিল। (ট) এবং তাঁহার করতল-স্পর্শ-সুখে উৎপন্ন, কদম্ব-কলিকার কর্ণপূরের ন্যায় সেই রোমাঞ্চসমূহে সেইভাবেই আমার একদিকের গণ্ডস্থল কণ্টকিত হইয়াছিল—এই অবস্থায় আমি নিশ্চলভাবে অবস্থান করিতেছিলাম।

(ঠ) তাহার পর, তরলিকা নামে আমার তাম্বূলকরঙ্কবাহিনী, আমারই সহিত স্নান করিতে গিয়াছিল ; সে, বহুকালের পর আসিয়া সেই অবস্থায় আমাকে ধীরে ধীরে বলিল— "রাজকন্যে! আমরা অচ্ছোদ সরোবরের তীরে, মনোহর-আকৃতি সেই যে দুইটি মুনিকুমারকে দেখিয়াছিলাম, তাঁহাদের মধ্যে একটি - যিনি রাজকন্যার (আপনার) কর্ণে এই পারিজাত-কুসুমের মঞ্জরীটি অবতংস করিয়া দিয়াছিলেন, তিনি, সেই দ্বিতীয় মুনিকুমার হইতে আত্ম-দর্শন গোপন করতঃ, অত্যন্ত নিঃশব্দপদসঞ্চারে পুষ্পিত-লতা-পরিপূর্ণ নিবিড় বনের ভিতর দিয়া আসিয়া, পিঠের দিক্ হইতে আপনার উদ্দেশে, আসিবার সময়ে আমাকে জিজ্ঞাসা করিলেন—

---

(१) क्वचित् शनैःशनैरिति द्विरुक्तिर्नास्ति। (२) कर्णावतंसीकृता। (३) सुरतरुमञ्जरी।

इति। मयोक्तं—'एषा खलु भगवतः श्वेतभानोरंशुसम्भूतायां (१) अप्सरसि गौर्य्यां समुत्पन्ना, देवस्य सकल-गन्धर्व-मुकुट-मणि-शलाका-शिखरोल्लेख-मसृणित-चरण-नख-चक्रस्य प्रणय-प्रसुप्त-गन्धर्व-कामिनी-कपोल पत्रलता-लाञ्छित-भुज-तरु-शिखरस्य पादपीठीकृत-लक्ष्मी-करकमलस्य गन्धर्वाधिपतेर्हंसस्य दुहिता महाश्वेता नाम, गन्धर्वाधिवासं हेमकूटाचलं (२) अभिप्रस्थिता' (ङ) इति कथिते च मया, किमपि चिन्तयन् मुहूर्त्तमिव तूष्णीं स्थित्वा विगतनिमेषेण चक्षुषा चिरमभिवीक्षमाणो मां सानुनयमर्थितामिव दर्शयन् पुनराह—

(ङ) बालिक इति। श्वेतभानोः शुभ्रांशोश्चन्द्रस्य, अंशुसम्भूतायां किरणेभ्यो जातायां। सकलानां गन्धर्वाणां मुकुटेषु या मणिशलाकास्तासां शिखरैरग्रैः उल्लेखेन नमस्कारकाले घर्षणेन मसृणितं श्लक्ष्णीकृतं चरणयोर्नखानां चक्रं समूहो यस्य तस्य। एतेन महाधिपत्यं द्योतितम्। प्रणयेन प्रसुप्ताः सह सुप्ता या गन्धर्वकामिन्यस्तासां कपोलेषु याः पत्रलताः पत्रलताकाराश्चित्रविशेषास्ताभिर्लाञ्छिते चिह्निते रमणसमये आवेष्टन-क्रमेण तासां मस्तकधारणेन भुजयोः कपोललग्नत्वादिति भावः, भुजौ तरू इव दीर्घत्वात् स्थूलत्वाच्च तयोरिव तयोः शिखरे उपरिभागद्वयं यस्य तस्य। एतेन कलाकौशलं सूचितम्। पादपीठीकृतं पादपीठवत्तुच्छीकृतं लक्ष्म्या अपि करकमलं येन तस्य। एतेनाकातरदानशीलत्वं सूचितं। अथवा पादपीठीकृतं चरणासनीकृतं लक्ष्म्याः करकमलं येन तस्य। एतेन सम्पदः पराकाष्ठा ध्वनिता। गन्धर्वाणामधिवासं वासस्थानं। अत्र हंसस्य प्राधान्यप्रतिपादनकार्य्यं प्रति कारणत्रयोपन्यासात् समुच्चयोऽलङ्कारः।

(ढ) इतीति। अर्थितां याचकत्वं दर्शयन्निव। कल्याणिनी शुभलक्षणवती, अविसंवादिनी "यत्राकृति-स्तत्र गुणा वसन्ति" इति न्यायादगुणवत्त्वे अव्यभिचारिणी सर्वथा सम्भाव्यमानसकलगुणेत्यर्थः, बालभावेऽपि

(ঙ) 'বালিকে! এই কন্যাটি কে? কাঁহারই বা সন্তান? উহার নামই বা কি? এবং কোথায়ই বা গেল'। তাহার পর আমি বলিলাম—'নমস্কার করিবার সময়ে সকল গন্ধর্ব্ব-দিগের মুকুটস্থিত মণিশলাকার অগ্রভাগের সঙ্ঘর্ষ, যাঁহার চরণের নখসমূহকে মসৃণ (পালিশ) করিয়া থাকে; প্রণয়-সুপ্ত গন্ধর্ব্ব-রমণীগণের গণ্ডস্থলের পত্রলতা-চিহ্নে, যাঁহার বৃক্ষতুল্য-বিশাল বাহুযুগলের উপরিভাগ চিহ্নিত হইয়া থাকে এবং যিনি লক্ষ্মীর পাণি-কমলকে পাদপীঠ করিয়া-ছেন; সেই গন্ধর্ব্বাধিপতি মহারাজ হংসের কন্যা ইনি, ভগবান্ চন্দ্রের কিরণ হইতে উৎপন্ন গৌরীনামক অপ্সরার গর্ভে উৎপন্ন হইয়াছেন; ইহাঁর নাম 'মহাশ্বেতা', ইনি এখন, গন্ধর্ব্বগণের বাসস্থান হেমকূট পর্ব্বতে গেলেন' (ঢ) আমি এই কথা বলিলে সেই মুনিকুমার, কোন বিষয় চিন্তা করতঃ কিছুকাল নীরবে থাকিয়া নির্নিমেষ-নয়নে বহুকাল যাবৎ আমার প্রতি নিরীক্ষণ করিয়া অনুনয়ের সহিত প্রার্থিভাব জানাইয়াই যেন, পুনরায় বলিলেন—'বালিকে! তোমার এই আকৃতি শুভলক্ষণ-সম্পন্ন; সুতরাং তুমি অবশ্যই গুণবতী হইবে এবং বালিকা হইলেও

(१) अंशुसूतायां। (२) हेमकूटमचलवरं।

"बालिके! कल्याणिनी तवाविसंवादिनी अचपला बालभावेऽप्याकृतिरियम्। तत् करोषि मे वचनमेकमभ्यर्थ्यमाना ?" इति (ढ)। ततो मया सविनय-मुपरचिताञ्जलिपुटया दर्शितादरमभिहितः—'भगवन्! कस्मादेवमभिधत्से, काहम्। महात्मानः सकलत्रिभुवनपूजनीयास्त्वादृशाः (१) पुण्यैर्विना निखिल-कल्मषापहारिणीमस्मद्विधेषु दृष्टिमपि न पातयन्ति, किं पुनराज्ञाम्; तद्वि-स्रब्धमादिश्यतां कर्त्तव्यम्, अनुगृह्यतामयं जन इति (ण)। एवमुक्तश्च मया सस्नेहया सखीमिवोपकारिणीमिव प्राणप्रदामिव दृष्ट्या मामभिनन्द्य निकट-वर्त्तिनस्तमालपादपात् पल्लवमादाय निष्पीड्य तटशिलातले तेन गन्धगजमद-सुरभिपरिमलेन रसेन उत्तरीयवल्कलैकदेशाद्विपाट्य पट्टिकां स्वहस्तकमल-

---

बालकालेऽपि अचपला, तव इयमाकृतिर्दृश्यत इति शेषः। तत्तस्मात्। अभ्यर्थ्यमाना मया प्रार्थ्यमाना त्वं, एकं वचनं वाक्यपालनं करोषि करिष्यसि किमिति काकुः। करोषीति भविष्यत्सामीप्ये वर्त्तमाना।

(ण) ततइति। दर्शित आदरो यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा। अभिधत्से ब्रवीषि अहं का तुच्छेत्यर्थः। तत्तस्मात्, विस्रब्धं विश्वस्तं यथा स्यात्तथा कर्त्तव्यं मया करणीयं आदिश्यतां, अयं मल्लक्षणो जनः अनुगृह्यतां तेनादेशेनेति भावः।

(त) एवमिति। किञ्च, मया एवमुक्तः स कुमारः पत्रिकामपि तवानित्यन्वयः। सस्नेहया दृष्ट्या, सखीमिव उपकारिणीमिव प्राणप्रदामिव च मामभिनन्द्य। अत्र तिसृणामिव जात्युत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्ष-तया संसृष्टिः। तटशिलातले तीरस्थपाषाणोपरि, निष्पीड्य संमर्द्द्य, गन्धगजस्य मदवत् दानजलवत् सुरभि-र्घ्राणतर्पणः परिमलो गन्धो यस्य तेन, रसेन निर्यासेन, उत्तरीयं यद्वल्कलं तस्य एकदेशात् पट्टिकां एकदलं

তোমাকে চঞ্চলা বলিয়া বোধ হয় না; অতএব আমি প্রার্থনা করিতেছি যে, তুমি আমার একটি বাক্য রক্ষা করিবে কি?।' (ণ) তাহার পর আমি সবিনয়ে কৃতাঞ্জলি হইয়া আদর দেখাইয়া বলিলাম—'ভগবন্! কেন আপনি এইরূপ বলিতেছেন, আমি কে!!!। সমস্ত ত্রিজগতের পূজনীয় আপনাদের ন্যায় মহাত্মারা, পুণ্যব্যতীত আমাদের ন্যায় লোকের প্রতি, সমস্ত-পাপ-বিনাশক দৃষ্টিপাতও করেন না; সুতরাং আদেশের বিষয়ে আর বলিবার কি আছে; অতএব আপনি নিঃশঙ্কচিত্তে আমার প্রতি কর্ত্তব্যের আদেশ করুন ও এই ব্যক্তিকে অনুগৃহীত করুন।' (ত) আমি এইরূপ বলিলে তিনি, সস্নেহ দৃষ্টিপাতে আমাকে যেন সখীর ন্যায়, উপকারিণীর ন্যায় ও প্রাণদায়িনীর ন্যায় অভিনন্দিত করিয়া, নিকটবর্ত্তী তমালবৃক্ষ হইতে একটি পল্লব আনয়ন করিয়া, তাহা তীরবর্ত্তী প্রস্তরখণ্ডের উপরে মর্দ্দন করিয়া, গন্ধহস্তীর মদজলের ন্যায় মনোহর সৌরভ-সম্পন্ন সেই রসদ্বারা, উত্তরীয় বল্কলের এক দিক্ হইতে একখণ্ড পটী বাহির করিয়া তাহাতে, স্বকীয় করকমলের কনিষ্ঠাঙ্গুলীর নখাগ্রদ্বারা

---

(१) सकलत्रिभुवनाभिपूजितास्त्वादृशाः।

कनिष्ठिका-नख-शिखरेणाभिलिख्य 'इयं पत्रिका त्वया तस्यै कन्यकायै प्रच्छन्न-मेकाकिन्यै देया' इत्यभिधायार्पितवान्"—इत्युक्त्वा च सा ताम्बूलभाजनादाकृष्य तामदर्शयत् (त)। अहन्तु तेन तत्सम्बन्धिनालापेन शब्दमयेनापि स्पर्शसुख-मिवान्तर्जनयता, श्रोत्रविषयेणापि रोमोद्गमानुमितसर्वाङ्गानुप्रवेशेन मदनाविश-मन्त्रेणेवाविश्यमाना तस्याः करतलादादाय तां वल्कलपत्रिकां तस्यामिमामभि-लिखितामार्य्यामपश्यम्—(थ)।

'दूरं मुक्तालतया विससितया विप्रलोभ्यमानो मे।
हंस इव दर्शिताशो मानसजन्मा त्वया नीतः॥' (द)

विपाट्य उद्धृत्य, तव स्वहस्तकमलस्य कनिष्ठिकाया अङ्गुल्याः नखस्य शिखरेण अग्रेण अभिलिख्य। प्रच्छन्नं अतीवगुप्तं यथा स्यात्तथा। सा तरलिका। तां पत्रिकाम्।

(थ) अहमिति। शब्दमयेनापि अन्तरन्तःकरणे स्पर्शसुखं जनयतेव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। श्रोत्रविषयेणापि शब्दमयत्वात् केवलकर्णग्राह्येणापि, रोमोद्गमैः सर्वाङ्गेषु रोमाञ्चैः, अनुमितः सर्वेषु अङ्गेषु अनुप्रवेशो यस्य तादृशेनेव, सर्वेष्वङ्गेषु प्रवेशाभावे सर्वेष्वेव तेषु रोमाञ्चासम्भवादिति भावः। अत्र प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। मदनाविशमन्त्रेणेव कामाधिष्ठानजनकीभूतमन्त्रेणेव। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। तत्सम्बन्धिना आलापेन, आविश्यमाना अधिष्ठीयमाना सती। तस्यास्तरलिकायाः। आर्य्यां आर्य्याच्छन्दो बद्धामक्षरश्रेणीम्।

(द) दूरमिति। हे सुन्दरि! त्वया विससितया मृणालवद्धवलवर्णया मुक्तालतया "स्फटिकतामिय-मक्षमाला" इत्युक्त्वा मम करे विन्यस्तेन स्वकीयमुक्तामयहारेण करणेन, विप्रलोभ्यमानो विशेषप्रकर्षेण स्वसङ्गमलोभं प्राप्यमानः, मामुद्दिश्यात्मन्यपि कामावेशेनैव तादृशचातुरीकरणादिति भावः, अतएव च दर्शिता सूचिता आशा स्वसङ्गमाशंसा यस्मै सः, मे मम मानसाच्चित्तात् जन्म यस्य स मानसजन्मा मनसिजः कामः, हंसपक्षे तु मुक्तालतया मुक्तामयहारवल्लभमानेन, विससितया शुभ्रमृणालेन करणेन, विप्रलोभ्यमानः केनचिज्जनेन

লিখিয়া 'একাকিনী থাকিবার সময়ে সেই কন্যাটির নিকট, তুমি এই পত্রখানা অত্যন্ত গুপ্তভাবে দিবে' এই কথা বলিয়া সেই পত্রখানা আমার নিকট দিলেন।" এই কথা বলিয়া তরলিকা তাম্বূলের পাত্র হইতে সেই পত্রখানা বাহির করিয়া আমাকে দেখাইল। (থ) আমি কিন্তু, তাঁহার বিষয়ের সেই আলাপে একেবারে আবিষ্ট হইয়া পড়িলাম; কারণ—সে কথাগুলি শব্দময় হইলেও, অন্তরে যেন স্পর্শসুখ জন্মাইতেছিল, কেবল কর্ণের বিষয় হইলেও, রোমাঞ্চ উৎপন্ন হওয়ায় যেন আমার সকল অঙ্গে প্রবেশ করিয়াছিল বলিয়া অনুমান হইয়াছিল আর সেই কথাগুলিকে যেন কামাবেশের মন্ত্র বলিয়া বোধ হইতেছিল; তখন আমি তরলিকার হস্ত হইতে সেই বল্কলের পত্রখানা আনয়ন করিয়া, তাহাতে লিখিত এই আর্য্যাটি দেখিলাম—

(দ) "(হে সুন্দরি!) কোন ব্যক্তি যেমন মুক্তাময় হারের ন্যায় শুভ্রবর্ণ মৃণালদ্বারা অত্যন্ত লোভ জন্মাইয়া, আপনার অভিমত দিক্ দর্শন করাইয়া, মানস-সরোবর-জাত কোন

अनया च मे दृष्टया दिङ्मोहभ्रान्त्येव प्रनष्टवर्त्मनः, बहुलनिशयेवान्धस्य, जिह्वोच्छित्तेरिव मूकस्य, इन्द्रजालिकपिच्छिकयेवातत्त्वदर्शिनः, ज्वरप्रलापप्रवृत्त्येवासम्बद्धभाषिणः, दुष्टनिद्रयेव विषविह्वलस्य, लोकायतिकविद्ययेवाधर्मरुचेः,

---

विशेषप्रकर्षेण भक्षणलोभं प्राप्यमानः, तथा दर्शिता आशा स्वाभिमतदिक् यस्मै सः, मानसे तदाख्यसरोवरे जन्म यस्य स तादृशो हंस इव, दूरं नीतः कामुकेषु कामिनीकर्त्तृकप्रलोभनस्यातीवोद्दीपकत्वादत्यन्तं वर्द्धितः। अतएव शीघ्रमिदानीं तन्निवृत्तेरुपायस्त्वया विधेय इति भावः। हंसपक्षे तु दूरं नीतो विप्रकृष्टदेशं प्रापितः, भक्षणलोभेन हंसस्य नीयमानस्वृणालानुसरणादिति भावः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। आर्य्या जातिः। हंसपक्षे विससितयेति अग्निस्तोकादिवत् विशेषणस्य परनिपातः, तथा स्वल्पं विससितमिति विससिता "स्त्री स्यात् काचिन्मृणाल्यादिर्विवक्षापचये यदि" इत्यमरोक्तदिशा स्त्रीत्वम्।

(ध) अनयेति। किञ्च। मे इति मयीत्यर्थकमव्ययम्। अनया पत्रिकया आर्य्यया वा मे मया दृष्टया सत्या, स्मरातुरस्य मे मम मनसः सुतरामाधिक्येन दोषविकारोपचयः कामविकारवृद्धिरक्रियत इत्यन्वयः। केन कस्येवेत्याकाङ्क्षायामुपमानानि योज्यानि। दिङ्मोहभ्रान्त्या दिग्भ्रमात्मकभ्रान्त्या, प्रनष्टं विलुप्तं इदन्तया परिचेतुमशक्यं वर्त्म उद्देश्यीभूतः पन्था यस्य तस्य जनस्येव, उत्पथगामिनो यथा पुनर्दिग्भ्रमेण किङ्कर्त्तव्यताविमूढत्वरूपदोषविकारोपचयः क्रियते तद्वदक्रियतेति सरलार्थः। अत्र दिङ्मोहपदेनैवोपपत्तेः पुनर्भ्रान्तिपदोपादानादधिकपदत्वदोषः, स च दिङ्मोहेनेवेति पाठेनैव समाधेयः। बहुलनिशया कृष्णपक्षरात्र्या अन्धस्येव, अत्रापि किङ्कर्त्तव्यताविमूढत्वरूपदोषविकारोपचयः। जिह्वाया उच्छित्त्या उच्छेदेन मूकस्येव, अत्र उच्चारणात्यन्ताशक्तिरूपो दोषविकारोपचयः। इन्द्रजालिकस्य कुहकिनो जनस्य पिच्छिकया अतत्त्वदर्शिनः स्वभावतो भ्रान्तस्येव, अत्र याथार्थ्यस्यैकान्तानिर्द्धारणरूपो दोषविकारोपचयः। ज्वरप्रलापस्य प्रवृत्त्या आरम्भेण असम्बद्धभाषिणः स्वभावादेव असङ्गतवादिन इव, अत्राविश्रान्तभाषणरूपो दोषविकारोपचयः। दुष्टनिद्रया विषवेगेन संज्ञालोपरूपनिद्रया विषविह्वलस्येव, अत्र पुनः संज्ञालाभाभावरूपो दोषविकारोपचयः। लोकायतेन सर्वेष्वेव लोकेषु नियतेन प्रत्यक्षप्रमाणवादेन संसृष्ट इति लोकायतिको नास्तिकशिरोमणिश्चार्वाकः तस्य केवलप्रत्यक्षप्रमाणवादित्वात्। "क्वचिदुत्तरपदस्यापी"तिपरपदे वृद्धिः। तस्य विद्या तत्प्रणीतशास्त्रं—"यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः। न स्वर्गो नापवर्गो वा नैवात्मा पारलौकिकः। नैव वर्णाश्रमादीनां क्रियाश्च फलदायिकाः" इत्यादिका हि तस्य विद्या तया, अधर्मरुचेः स्वभावादेवाधर्मरतेर्जनस्येव, अत्र सर्वथा नास्तिक्यरूपो दोषविकारोपचयः। मदिरया मद्यपानेन उन्मत्तस्येव, अत्र मत्तता-

---

হংসকে দূরে লইয়া যায়; সেইরূপ তুমি, মৃণালের ন্যায় শুভ্রবর্ণ মুক্তামালাদ্বারা অত্যন্ত লোভ জন্মাইয়া, আশা দেখাইয়া আমার কামবেগকে অত্যন্ত বর্দ্ধিত করিয়াছ।"

(ধ) আমি এই আর্য্যাটি পড়িয়া দেখিলাম, তাহাতে, দিগ্‌ভ্রমবশতঃ উৎপথগামী ব্যক্তির ন্যায়, কৃষ্ণপক্ষের রাত্রিতে অন্ধলোকের ন্যায়, জিহ্বা-চ্ছেদন করায় মূকের (বোবার) ন্যায়, ঐন্দ্রজালিকের পিছিতে স্বভাবতই ভ্রান্ত ব্যক্তির ন্যায়, জ্বরকালীন-প্রলাপের আরম্ভে স্বভাবতই অসম্বদ্ধ-ভাষীর ন্যায়, দূষিতনিদ্রাদ্বারা বিষবেগে বিকল ব্যক্তির ন্যায়, নাস্তিকের

मदिरयेवोन्मत्तस्य, दुष्टावेश-(१) क्रिययेव पिशाचग्रहस्य, दोषविकारोपचयः सुतरामक्रियत (२) स्मरातुरस्य (३) मे मनसः, (ध) येनाकुलीक्रियमाणा सरिदिव पूरेण विह्वलतामभ्यगमम् (४) (न)। तां च द्वितीयदर्शनेन कृत-महापुण्यामिव अनुभूतसुरलोकवासामिव देवताधिष्ठितामिव लब्धवरा-मिव पीतामृतामिव समासादित-त्रैलोक्य-राज्याभिषेकामिव मन्यमाना, (प)

धिक्यरूपो दोषविकारोपचयः। तथा दुष्टा विशेषदुःखजनकत्वेन दूषिता या आवेशक्रिया नाड़ीनक्षत्रेषु पापग्रहाणां प्रवेशकार्य्यं तया, पिशाचेन ग्रहो ग्रहणं यस्य तस्य पिशाचाविष्टस्य जनस्येव, अत्र विशेष-दुःखभोगो दोषविकारोपचयः। पापग्रहैर्नाड़ीनक्षत्रावेशे फलमुक्तं यथा ज्योतिषे—"देहादेहार्थहानिः स्या-ज्जन्मर्क्षे उपतापिते। कर्म्मर्क्षे कर्म्मणां हानिः पीड़ा मनसि मानसे।" इत्यादिकं। अत्र मालोपमालङ्कारः, तथा दिव्योऽभ्यास्यादिना प्रनष्टवर्त्मप्रभृतेर्दोषविकारोपचयः क्रियते मम तु अक्रियतेति कालभेदात् "काम्य-भिख्या तयोरासीत्" इत्यादिदर्पणोदाहृतवत् भग्नप्रक्रमतादोषः, स च 'यथा क्रियते दिव्योऽभ्यासात्या प्रनष्ट-वर्त्मनः,' बहुलपक्षनिशयान्धस्य...तथा अक्रियत' इति पाठेन समाधेयः।

(न) येनेति। येन दोषविकारोपचयेन आकुलीक्रियमाणा अस्थिरीक्रियमाणाहं पूरेण जलवृद्धा सरिदिव विह्वलतां अभ्यागमं सर्वतोभावेन प्राप्तवती। अत्र श्रौत्युपमालङ्कारः, तथा सरित् पूरेण विह्वलतामभिगच्छति, अहन्तु अभ्यगममिति कालभेदात् पुरुषभेदाच्च पूर्ववद्भग्नप्रक्रमतादोषः, सोऽपि च 'यथा सरित् पूरेण विह्वलतामभिगच्छति, तथाहं विह्वलतामभ्यगम'मिति पाठेन परिहरणीयः।

(प) तामिति। किञ्च, द्वितीयदर्शनेन पुण्डरीकस्य पुनरवलोकनेन हेतुना, तां तरलिकां कृतमहा-पुण्यामिव, अनुभूतः सुरलोके स्वर्गे वासो यया तामिव, कयाचिद्देवतया अधिष्ठितामाश्रितामिव, लब्धवरा-मिव, पीतामृतामिव, तथा समासादितः प्राप्तः त्रैलोक्यराज्ये अभिषेको यया तामिव च मन्यमानाहं पुनःपुनः पर्य्यपृच्छमिति परेणान्वयः। अत्र महापुण्यकरणाद्युत्प्रेक्षणात् पञ्चामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः। तथा चात्मनोऽपि महती पुनस्तद्दर्शनेच्छा व्यजात इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

বিদ্যা অভ্যাস করায় স্বভাবতই অধার্ম্মিক লোকের ন্যায়, মদ্যপানে উন্মত্তের ন্যায় এবং জন্মনক্ষত্রপ্রভৃতিতে পাপগ্রহের সঞ্চার হওয়ায় ভূতাবিষ্ট ব্যক্তির ন্যায়, আমার কামাতুর চিত্তের আরও কামবিকার বৃদ্ধি করিয়াছিল ; (ন) যাহাতে আমাকে আকুল করিয়াছিল এবং জোয়ারের জলে নদীর ন্যায় আমি বিহ্বল হইয়া পড়িয়াছিলাম। (প) তরলিকা, আর একবারও সেই মুনিকুমারকে দেখিতে পাইয়াছিল বলিয়া, সে যেন কোন মহাপুণ্য করিয়াছিল, স্বর্গলোকেই যেন বাস করিয়াছিল, কোন দেবতা যেন তাহাতে অধিষ্ঠান করিয়াছিলেন, এবং সে যেন বর পাইয়াছিল ও অমৃত পান করিয়াছিল আর ত্রিলোকের রাজত্বেই

---

(१) दुराविश···। (२) अजायत। (३) स्मरातुर स्य। (४) अभ्यागमं, अगमं।

सततसन्निहितामपि दुर्लभदर्शनामिव अतिपरिचितामप्यपूर्वामिव सादरमाभाषमाणा, (फ) पार्श्वावस्थितामपि (१) सर्वलोकस्योपर्य्यवस्थितामिव पश्यन्ती, (ब) कपोलयोरलकलताभङ्गेषु च सोपग्रहं स्पृशन्ती, (भ) विपरीतमिव परिजनस्वामिसम्बन्धमुपदर्शयन्ती, (म) 'तरलिके! कथय (२) कथं स त्वया दृष्टः, किमभिहितासि तेन, कियन्तं कालमवस्थितासि तत्र, कियदनुसरन्नस्मानसावागतः' इति पुनः पुनः पर्य्यपृच्छम् (य)। अनयैव च कथया तया सह तस्मिन्नेव प्रासादे तथैव प्रतिषिद्धाशेषपरिजनप्रवेशा दिवसमत्यवाहयम्। (र)

(फ) सततेति। दुर्लभदर्शनामिव, पुण्डरीकस्य द्वितीयदर्शनेन हेतुनेति भावः। अपूर्वामिव नूतनागतामिव, पूर्वबद्भावः। आभाषमाणा आलपन्ती। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षयोः पूर्ववत्संसृष्टिः।

(ब) पार्श्वेति। अत्रापि पुण्डरीकस्य द्वितीयदर्शनेन हेतुनेति भावः, क्रियोत्प्रेक्षा चालङ्कारः।

(भ) कपोलयोरिति। कपोलयोर्गण्डयोः. अलकलताभङ्गेषु लतावल्लम्बमानस्खलितकुञ्चितकेशकलापेषु सोपग्रहं सानुकूल्यं सादरमित्यर्थः स्पृशन्ती स्पर्शं कुर्वती। "उपग्रहः पुमान् वन्दासुपयोगेऽनुकूलने।" इति मेदिनी। अलकलताभङ्गेष्विति ग्रामे गच्छतीत्यादिवत् कर्मण्यधिकरणत्वविवक्षया सप्तमी।

(म) विपेति। परिजनस्वामिसम्बन्धं सेव्यसेवकभावं विपरीतमिव उपदर्शयन्ती, अहं सेविका सा तु सेव्या इत्यभावं प्रदर्शयन्तीत्यर्थः. तस्य द्वितीयदर्शनेन मयैव तस्या महागौरवादरकरणादिति भावः।

(य) तरेति। असौ कुमारः, अस्मान् स्वभवनमागच्छन्तीरिति शेषः, अनुसरन् कियदागतः।

(र) अनयेति। तया तरलिकया। प्रतिषिद्धः अशेषाणां सर्वेषां परिजनानां प्रवेशो यया सा।

যেন অভিষেক লাভ করিয়াছিল বলিয়া, আমি তাহাকে মনে করিতেছিলাম; (ফ) আর সর্ব্বদা নিকটে থাকিলেও তাহার দর্শন যেন দুর্ল্লভ এবং সে অত্যন্ত পরিচিত হইলেও যেন নবাগত ব্যক্তি—এইরূপ মনে করিয়া আমি আদরের সহিত তাহার সঙ্গে আলাপ করিতেছিলাম; (ব) আর সে পার্শ্বে থাকিলেও সকল লোকেরই যেন উপরে রহিয়াছে, এইরূপ দেখিতেছিলাম; (ভ) আর তাহার গণ্ডদ্বয়ের ও কুঞ্চিত কেশকলাপের উপরে আদরের সহিত স্পর্শ করিতেছিলাম; (ম) সেবা-সেবক-সম্বন্ধটাকে যেন বিপরীতভাবে দেখাইতেছিলাম (য) এবং 'তরলিকে! বল, তুমি কি ভাবে তাঁহাকে দেখিয়াছ, তিনি তোমাকে কি বলিয়াছেন, তুমি কতকাল সেখানে ছিলে এবং তিনি আমাদের অনুসরণ করিতে করিতে কতদূর আসিয়াছিলেন' এই কথা বারবার তরলিকাকে জিজ্ঞাসা করিয়াছিলাম। (র) এবং সমস্ত পরিজনবর্গকে প্রবেশ করিতে নিষেধ করিয়া, সেই অট্টালিকার ভিতরেই তরলিকার সহিত সেইভাবে সেই কথা নিয়াই সে দিন অতিবাহিত করিলাম।

---

(१) पार्श्वस्थामपि। (२) कथय कथय।

अथ मदीयेनेव हृदयेन कृतरागसंविभागे लोहितायति गगनतलोपान्तावलम्बिनि (१) रविबिम्बे, (ल) सरागदिवसकरानुरक्तायां कृतकमलशयनायामनङ्गातुरायामिव पाण्डुतां व्रजन्त्यामातपलक्ष्म्याम्, (व) गैरिकगिरिसलिलप्रपातपाटलेषु कमलवनेभ्यः समुत्थाय (२) वनगजयूथेष्विव पुञ्जीभवत्सु भास्करकिरणेषु, (श) गगनावतारविश्रामलालसानां रविरथवाजिनां हर्षहेषारवप्रतिशब्दकेन सह विशति मेरुगिरिगह्वरं वासरे, (ष) मुकुलित-रक्त-

(ल) अथेति। रविबिम्बे सूर्यमण्डले, मदीयेन हृदयेन कृतः रागसंविभागः रागोऽनुराग एव रागो रक्तिमा तस्य संविभागो विभज्य दानं यस्मै तस्मिन्निव सति. लोहितायति आरक्तीभवति, गगनतलस्य उपान्तात् प्रान्तप्रायदेशात् अवलम्बिनि पतनोन्मुखे च सति। अत्र अनुरागरक्तिम्नोर्भेदेऽपि रागपदश्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः, रागसंविभागकरणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः।

(व) सरागेति। आतपलक्ष्म्यां सूर्यालोकश्रियां, रागो रक्तिमेव रागोऽनुरागस्तेन सहेति सरागो यो दिवसकरः सूर्यस्तस्मिन्ननुरक्तायां लोहितायामनुरागिण्याञ्च सत्यां, अतएव कृतं कमले पद्मे पद्ममयशय्यायाञ्च शयनं स्थितिः स्वापश्च यया तस्यां अतएव च अनङ्गातुरायां कामार्त्तायामिव सत्यां पाण्डुतां व्रजन्त्यां सत्याम्। अत्र स्त्रीपुंलिङ्गाभ्यां श्लिष्टविशेषणसाम्याच्च आतपलक्ष्मीदिवसकरयोर्नायिकानायकव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिः, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गद्वयं गुणोत्प्रेक्षा चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(श) गैरिकेति। गैरिकं धातुविशेषस्तद्युक्तो गिरिर्गैरिकगिरिस्तस्य सलिलेषु प्रपातेन पतनेन पाटलेषु श्वेतरक्तेषु, तत्सलिलस्यापि गैरिकसंयोगेन श्वेतरक्तत्वादिति भावः, भास्करकिरणेषु वनगजयूथेष्विव कमलवनेभ्यः समुत्थाय पुञ्जीभवत्सु सत्सु, तदानीं वन्यगजयूथानामपि तथैव पुञ्जीभवनादिति भावः। अत्रोपमालङ्कारः।

(ष) गगनेति। वासरे दिवसे, गगनावतारात् आकाशमार्गे पर्यटनात् यो विश्रामस्तत्र लालसानां अभिलाषुकाणां रविरथवाजिनां सूर्यरथनियुक्तघोटकानां हर्षेण बहुपरिश्रमात् परं विश्रामलाभसम्भवादानन्देन

(ल) তাহার পর আমার হৃদয়ই যেন সূর্য্যমণ্ডলকে রাগ (অনুরাগ—রক্তিমা) বিভক্ত করিয়া দিল তাহাতে সূর্য্যমণ্ডল রক্তবর্ণ হইয়া আকাশের প্রান্তভাগ হইতে পতিত হইতে লাগিল; (ব) আলোকলক্ষ্মী, রাগান্বিত সূর্য্যের প্রতি অনুরক্ত হইয়া, পদ্মের উপর শয়ন করিয়া কামার্ত্ত হইয়াই যেন ক্রমে পাণ্ডুবর্ণ হইয়া উঠিল; (শ) গৈরিক-(গিরিমাটী) সংযুক্ত পর্ব্বতের নির্ঝর-জলের উপর পতিত হওয়ায় পাটলবর্ণ হইয়া সূর্য্যের কিরণসমূহ, বন্য হস্তিগণের ন্যায় পদ্মবন হইতে উঠিয়া একত্র পুঞ্জীভূত হইতে লাগিল; (ষ) সমস্ত আকাশ পর্য্যটন করিয়া বিশ্রাম করিতে অভিলাষী সূর্য্য-রথ-নিযুক্ত ঘোটকগণের আনন্দ-হেষারবের প্রতিধ্বনির সহিত, দিনটা যেন সুমেরু পর্ব্বতের গুহার ভিতরে যাইয়া প্রবেশ

(१) गगनतलावलम्बिनि। (२) उत्थाय।

पङ्कजपुट-प्रविष्ट-मधुकरावलीषु (१) रवि-विरह-मूर्च्छान्धकारितहृदयास्विव (२) प्रारब्धनिमीलनासु पद्मिनीषु, (ख) ग्रासीकृत-सामान्य-मृणाललता-विवर-संक्रामितानीव परस्परहृदयान्यादाय विघटमानेषु रथाङ्गनाम्नां युगलेषु, (ग) सा छत्रग्राहिणी समागत्य (३) अकथयत्—"भर्त्तृदारिके! तयोर्मुनिकुमारयो-रन्यतरो द्वारि तिष्ठति, कथयति चाक्षमालामुपयाचितुमागतोऽस्मि" इति। (घ)

यो हेषारवस्तस्य प्रतिशब्दकेन प्रतिध्वनिना सह, मेरुगिरिगह्वरं सुमेरुपर्वतगुहां विशति प्रविशतीव सति, नानाविधमहामणिकिरणैस्तद्गुहाया रात्रावपि दिवसवदालोकमयीकृतत्वात् सन्निहितसूर्य्याश्वप्रतिध्वनीनाञ्च तत्र प्रवेशसम्भवादिति भावः। अत्र प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा सहोक्तिश्चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ख) मुकुलितेति। मुकुलितेषु सूर्य्यस्यास्तगमनान्मुद्रितेषु रक्तपङ्कजपुटेषु प्रविष्टा मधुकरावली भ्रमर-श्रेणी यासां तासु तादृशीषु पद्मिनीषु, रविविरहेण या मूर्च्छा तया अन्धकारितानि सञ्जातान्धकाराणि हृदयानि यासां तासु तथोक्तास्विव सतीषु, रवेः पद्मिनीवल्लभत्वात् भ्रमराणाञ्चान्धकारवत् कृष्णवर्णत्वादिति भावः, अतएव प्रारब्धं निमीलनं मुद्रणं जड़ताप्राप्तिश्च याभिस्तासु तथाविधासु सतीषु, सूर्य्यास्ते पद्मिनीमुद्रणस्य मूर्च्छारम्भे च जड़ताप्राप्तेः स्वाभाविकत्वादिति भावः। अत्र कार्य्येण लिङ्गेन च रविपद्मिन्योर्नायकनायिकाव्यवहारसमा-रोपात् समासोक्तिरलङ्कारः, हृदयेऽन्धकारोत्पत्तिरुत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गञ्चाप्येषां तेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ग) ग्रासीति। चक्राङ्गनाम्नां युगलेषु चक्रवाकदम्पतीषु, ग्रासीकृतया कवलीकृतया उभाभ्यामिव चञ्चुपुटेन उभयप्रान्तधृतयेत्यर्थः सामान्यया एककया मृणाललतया कर्त्र्या, विवरेण आत्मच्छिद्रपथेन करणेन संक्रामितानीव परस्परयोः सञ्चारितानीव परस्परहृदयान्यादाय गृहीत्वा विघटमानेषु वियुज्यमानेषु सत्सु, चक्रवाकदम्पतीनामपि निशागमे वियोगस्य स्वाभाविकत्वात् प्रणयप्राचुर्य्याच्च परस्परहृदययोः परस्परं प्रति रात्रौ सत्त्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(घ) सेति। अन्यतरः एकः। अक्षमालामुपयाचितुमागतोऽस्मि, महाश्वेतया स्वकीयमुक्तामालां दत्त्वा तदीयाक्षमालाया आनीतत्वादिति भावः।

করিতে লাগিল; (খ) মুদ্রিতপ্রায় রক্তপদ্মের ভিতরে ভ্রমরশ্রেণী প্রবেশ করিয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, সূর্য্যের বিরহে মূর্চ্ছার অন্ধকার আসিয়া তাহাদের হৃদয়ে উপস্থিত হইতেছে, এই অবস্থায় পদ্মিনীগণ মুদ্রিত হইতে আরম্ভ করিল; (গ) চক্রবাক ও চক্রবাকীরা চঞ্চুপুটদ্বারা এক একটা মৃণালের দুই দুই দিক্ দুই দুইটাতে ধারণ করিয়াছিল, তখন সেই মৃণালই যেন স্বকীয় ছিদ্র দ্বারা তাহাদের পরস্পরের হৃদয় পরস্পরের শরীরে প্রবেশ করাইয়া দিয়াছিল, সুতরাং তাহারা পরস্পরের হৃদয় লইয়া পরস্পর বিযুক্ত হইতে লাগিল—(ঘ) এমন সময়ে আমার সেই ছত্রধারিণী পরিচারিকা আসিয়া বলিল—

---

(१) मधुकर्य्यावलीषु। (२) विरहमूर्च्छान्धकारितहृदयास्विव। (३) आगत्य।

अहन्तु मुनिकुमारनामग्रहणादेव स्थानस्थितापि गतेव द्वारदेशं समुपजात-तदागमनाशङ्का समाहूयान्यतमं कञ्चुकिनं "गच्छ, प्रवेश्यताम्" इत्यादिश्य प्राहिणवम्। (क)

अथ मुहूर्त्तादिव तं तस्य, रूपस्येव यौवनम्, यौवनस्येव मकरकेतनम्, मकरकेतनस्येव वसन्तसमयम्, वसन्तसमयस्येव दक्षिणानिलम्, अनुरूपं सखायं मुनि-(१) कुमारकं कपिञ्जलनामानं जराधवलितस्य (२) कञ्चुकिनोऽनुमार्गेण चन्द्रातपस्येव बालातपमागच्छन्तं (३) अपश्यम् (ख)। अन्तिकमुपागतस्य (४) चास्य पर्य्याकुलमिव सविषादमिव शून्यमिव अर्थिनमिव अन्तर्गताकूतं (५)

(क) अहमिति। द्वारदेशं गतेव, उत्कण्ठातिशयादिति भावः। समुपजाता तस्य प्रियतमस्य पुण्डरीकस्य आगमनाशङ्का उपस्थितिसम्भावना यस्याः सा अहम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ख) अथेति। रूपस्य सौन्दर्य्यस्य अनुरूपं सखि यौवनमिव, यौवनस्य अनुरूपं सखायं मकरकेतनं कन्दर्पमिव, मकरकेतनस्यानुरूपं सखायं वसन्तसमयमिव, वसन्तसमयस्यानुरूपं सखायं दक्षिणानिलमिव, तस्य पुण्डरीकस्य अनुरूपं स्वसदृशं सखायं, चन्द्रातपस्य प्रभातकालीनचन्द्रालोकस्य अनुमार्गेण आगच्छन्तं बालातपं नवीनसूर्य्यालोकमिव, जराधवलितस्य वार्द्धकेन शुक्लीकृतदेहस्य कञ्चुकिनः अनुमार्गेण पश्चात् पश्चा आगच्छन्तं, कपिञ्जलनामानं तं मुनिकुमारकमपश्यमित्यन्वयः। अत्र प्रथमा रशनोपमा द्वितीया च श्रौत्युपमा तयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः। मुनिकुमारकमितित्यनुकम्पायां कप्रत्ययः।

(ग) अन्तिकमिति। किञ्च। अस्य कपिञ्जलस्य। पर्य्याकुलमिव अत्यन्तव्याकुलमिव। शून्यं सर्वोद्यमरहितमिव, अर्थिनं याचकमिव। अन्तर्गतं आकूतं अभिप्रायविशेषो यस्य तम्। अत आदिमे द्व गुणोत्प्रेक्षे द्वितीये च द्वे जात्युत्प्रेक्षे तासाञ्च मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

"রাজকন্তে! সেই মুনিকুমার দুইটির মধ্যের একটি আসিয়া দ্বারদেশে অবস্থান করিতেছেন এবং বলিতেছেন যে, 'আমি জপের মালা নিতে আসিয়াছি'।"

(ক) আমি কিন্তু 'মুনিকুমার' এই নাম উচ্চারণমাত্রেই সেই স্থানে থাকিয়াও দ্বারদেশেই যেন গমন করিলাম; এবং তিনিই আসিয়াছেন বলিয়া ধারণা জন্মিল, তাই একজন কঞ্চুকীকে আহ্বান করিয়া "আপনি যা'ন, সেই মুনিকুমারকে প্রবেশ করা'ন" এইরূপ আদেশ করিয়া তাঁহাকে প্রেরণ করিলাম।

(খ) তাহার পর অল্পকালমধ্যেই, সৌন্দর্য্যের যেমন যৌবন, যৌবনের যেমন কন্দর্প, কন্দর্পের যেমন বসন্তকাল এবং বসন্তকালের যেমন দক্ষিণ বায়ু, সেইরূপ সেই প্রিয়তম মুনি-কুমারের অনুরূপ সখা কপিঞ্জল নামক সেই দ্বিতীয় মুনিকুমারকে, প্রভাতকালীন চন্দ্রালোকের পশ্চাৎ পশ্চাৎ নবীন সূর্য্যালোকের ন্যায়, বার্দ্ধক্যনিবন্ধন ধবলদেহ কঞ্চুকীর পশ্চাৎ পশ্চাৎ আসিতে দেখিলাম। (গ) তিনি আসিয়া নিকটে উপস্থিত হইলেন, তখন তাঁহার

(१) ऋषि...। (२) जराधवलस्य। (३) अनुयायिनं। (४) उपगतस्य। (५) अनुपरतामिप्रेतं।

आकारमलक्षयम् (ग)। उत्थाय च कृतप्रणामा सादरं स्वयमासनमुपाहरम् (घ)। उपविष्टस्य च बलादनिच्छतोऽपि प्रक्षाल्य चरणावुपमृज्य (१) चोत्तरीयांशुक-पल्लवेनाव्यवधानायां भूमावेव तस्यान्तिके समुपाविशम् (ङ)। अथ मुहूर्त्तमिव किमपि विवक्षुरिव स तस्यां मत्समीपोपविष्टायां (२) तरलिकायां चक्षुर-पातयत् (च)। अहन्तु विदिताभिप्राया दृष्ट्यैव 'भगवन्! अव्यतिरिक्तेयमस्म-च्छरीरात्, अशङ्कितमभिधीयताम्' इत्यवोचम्। (छ)

एवमुक्तश्च मया कपिञ्जलः प्रत्यवादीत्—"राजपुत्रि! किं ब्रवीमि, वागेव मे नाभिधेयविषयमवतरति त्रपया (ज)। क कन्दमूलफलाशी (३) शान्तो

(घ) उत्थायेति। किञ्च। कृतप्रणामा अहं। उपाहरं उपवेशनायार्पितवती।

(ङ) उपेति। अनिच्छतोऽपि मत्कर्त्तृकचरणप्रक्षालनमार्ज्जने अनभिलषतोऽपि तस्य कपिञ्जलस्य चरणौ बलात् प्रक्षाल्य उत्तरीयांशुकपल्लवेन मदीयोत्तरीयवसनप्रान्तेन उपमृज्य च अहं, अन्तिके तस्यैव समीपे, अव्यवधानायां आसनकृतव्यवधानरहितायां केवलायामित्यर्थः भूमौ समुपाविशम्।

(च) अथेति। स कपिञ्जलः किमपि विवक्षुरिव सन्। मुहूर्त्तमिव चक्षुरपातयत् तस्या अपसारणार्थ-मिति भावः।

(छ) अहमिति। दृष्ट्यैव तरलिकां प्रति तस्य तादृशदृष्टिपातभङ्ग्यैव विदितः अभिप्रायस्तरलिकाया अपगमनविषयक आशयो यया सा तादृशी सती। अव्यतिरिक्ता अभिन्ना।

(ज) एवमिति। त्रपया लज्जया। अभिधेयविषयं नावतरति वक्तव्यमर्थं वक्तुं न प्रवर्त्तते।

(झ) क्वेति। कन्दं शालुकं, मूलञ्च तदितरत्, फलञ्च अश्नातीति सः, शान्तः शमगुणान्वितः अन्तरिन्द्रिय

আকৃতিটাকে যেন অত্যন্ত ব্যাকুলের ন্যায়, বিষণ্ণের ন্যায়, শূন্যের ন্যায় এবং যাচকের ন্যায় লক্ষ্য করিলাম এবং ভিতরে যেন কোন বিশেষ অভিপ্রায় আছে বলিয়া বোধ করিলাম। (ঘ) এবং আমি উঠিয়া নমস্কার করিয়া, আদরের সহিত নিজেই একখানি আসন আনিয়া দিলাম। (ঙ) তাহাতে তিনি উপবেশন করিলেন এবং তিনি ইচ্ছা না করিলেও আমি বলপূর্ব্বক তাঁহার চরণযুগল প্রক্ষালন করিয়া, এবং নিজের উত্তরীয়-বসন-প্রান্তদ্বারা মার্জ্জনা করিয়া, তাঁহার নিকটে আসনবিহীন ভূমিতেই উপবেশন করিলাম। (চ) তাহার পর তিনি কোন বিষয় বলিতে ইচ্ছা করিয়াই যেন, আমার নিকটে উপবিষ্ট সেই তরলিকার প্রতি কিছুকাল দৃষ্টিপাত করিলেন। (ছ) আমি কিন্তু সেই দৃষ্টিপাতেই তাঁহার অভিপ্রায় বুঝিতে পারিয়া এই কথা বলিলাম—'ভগবন্! আমার শরীর হইতে এই ব্যক্তি ভিন্ন নহে; সুতরাং আপনি নিঃশঙ্কচিত্তে বলুন।'

(জ) আমি এই কথা বলিলে কপিঞ্জল প্রত্যুত্তর করিলেন—"রাজকন্যে! বলিব কি,

(१) अपमृज्य। (२) क्वचित् मदिति नास्ति। (३) क्वचित् कन्दपदं नास्ति।

वनवासनिरत: (१) मुनिजन:, क्व वाप्रशान्त-(२) जनोचितो विषयोपभोगाभिलाषकलुषो मन्मथविविधविलाससङ्कटो रागप्राय: प्रपञ्च: (झ)। सर्वमेवानुपपन्नमालोकय, किमारब्धं दैवेन (ञ)। अयत्नेनैव खलूपहासास्पदतामीश्वरो नयति जनम्। न जाने किमिदं वल्कलानां सदृशम्, उताहो जटानां समुचितम्, किं तपसोऽनुरूपम्, आहोस्विद्धर्म्मोपदेशाङ्गमिदम् (ट)। अपूर्वेयं विड़म्बना केवलम्। अवश्यकथनीयमिदम्। अपर उपायो न दृश्यते, अन्या प्रतिक्रिया

नियहशालीति यावत् "शम: अन्तरिन्द्रियनियह:" इति वेदान्तसार:। एतेनात्मनेव कामादिनिवृत्ति: सूचिता। वनवासनिरत इत्यनेन तु भोग्यपदार्थानां दर्शनादिनिबन्धनमाकर्षणमपि न सम्भवतीति ध्वनितं। अशान्तस्य अनिर्जितान्त:करणस्य जनस्य उचितो योग्य:, विषयाणां स्रक्‌चन्दनवनितादिभोग्यपदार्थानां उपभोगाभिलाषेण कलुषो मलिन:, मन्मथस्य कामस्य विविधविलासैर्नानाप्रकारचेष्टितै: सङ्कट: सङ्कीर्ण: पूर्ण:, तथा राग: सुखानुशयिता ऐहिकसुखलालसव प्रायेण बाहुल्येन यस्मिन् स:, "सुखानुशयी राग" इति पातञ्जलसूत्रात्। अयं प्रपञ्च: संसारो वा क्व। ईदृशप्रपञ्चे मुनेरासक्ति: कथमपि नोपपद्यत इति भाव:। अत्र विरूपयो: संघटनया विषमालङ्कार:। तेन च कश्चिन्मुनिरीदृशप्रपञ्चे समासक्त इति ध्वन्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनि:।

(ञ) सर्वमिति। दैवेन, किं अनिर्वचनीयस्वरूपं, एतत्सर्वमेव अनुपपन्नं अत्यन्तविरुद्धत्वादयुक्तं आरब्धं इति त्वमालोकयेत्यन्वय:। लज्जावशादसम्भवाशङ्कावशाच्च स्पष्टं नाभिधत्त इति बोध्यम्।

(ट) अयत्नेनेति। अयत्नेनैव उपहासप्राप्तौ स्वकीययत्नाभावेनैव। इदं वक्ष्यमाणं पुण्डरीकचेष्टितं, किं वल्कलानां वल्कलधारणस्येत्यर्थ: सदृशं योग्यं, इति न जाने इत्यर्थ:। कथमपि न सदृशमिति भाव:। एवमन्यत्रापि। उताहो किंवा। आहोस्वित् अथवा, धर्म्मोपदेशस्य उपदिष्टधर्म्मार्जनस्य अङ्गं प्रयोजकं।

(ठ) अपूर्वेति। इयं वक्ष्यमाणा पुण्डरीकस्य कामचेष्टा, केवलं अपूर्वा विड़म्बना सम्पूर्णनूतना दैवकर्तृकप्रतारणा। इदं वृत्तं। अपरस्तव सङ्गमाद्भिन्न:। एवमन्यत्रापि बोध्यम्। उपलभ्यते ज्ञायते। शरणं रक्षकं। गति: प्रतीकारोपायान्तरम्। गतिशब्दस्याप्युपायार्थकत्वात् अपर उपायो न दृश्यते इत्यभिधाय

लज्जावশতঃ আমার বাক্যই বক্তব্য বিষয় বলিতে প্রবৃত্ত হইতেছে না। (ঝ) ফলমূলাশী, বনবাসী এবং জিতেন্দ্রিয় মুনিজনই বা কোথায়, আর অজিতেন্দ্রিয় লোকের যোগ্য, ভোগ্যপদার্থের ভোগাভিলাষে কলুষিত, নানাবিধ কাম-চেষ্টায় পরিপূর্ণ এবং রাগবহুল এই জগৎ-সংসারই বা কোথায়। (ঞ) দেখ—বিধাতা, কি অনির্ব্বচনীয় অসঙ্গত এই সমস্ত ঘটনা আরম্ভ করিয়াছেন। (ট) লোক, স্বয়ং উপহাসের কোন কার্য্য না করিলেও, ঈশ্বরই তাহাকে উপহাসাস্পদ করিয়া থাকেন। জানি না—এটা কি বল্কলধারণের উপযুক্ত, অথবা জটাধারণের পক্ষে যোগ্য, কিংবা তপস্যার পক্ষে উচিত, অথবা গুরূপদিষ্ট-ধর্ম্মোপার্জ্জনের অঙ্গ। (ঠ) এটা, কেবল অভূতপূর্ব্ব বিড়ম্বনা। যাহা হউক, এই বৃত্তান্ত অবশ্যই বলিতে হইবে। কারণ

(१) वननिरत:। (२) अनुपशान्त...।

नोपलभ्यते, अन्यच्छरणं नालोक्यते, अन्या गतिर्नास्ति। अकथ्यमाने च महाननर्थोपनिपातो जायते। प्राणपरित्यागेनापि रक्षणीयाः सुहृदसव इति कथयामि (ठ)। अस्ति भवत्याः समक्षमेव स मया तथा निष्ठुरमुपदर्शितकोपेनाभिहितः। तथा चाभिधाय परित्यज्य तं, तस्मात् प्रदेशादुपजातमन्युरुत्सृष्टकुसुमावचयोऽन्यप्रदेशमगमम्। अपयातायाञ्च भवत्यां मुहूर्त्तमिव स्थित्वा एकाकी किमयमिदानीमाचरतीति सञ्जातवितर्कः प्रतिनिवृत्य विटपान्तरितविग्रहस्तं प्रदेशं व्यलोकयम् (ड)। यावत्तत्र तं नाद्राक्षम्, आसीच्च मे मनस्येवम्—'किन्न मदनपरायत्तचित्तवृत्तिस्तामिवानुसरन् गतो भवेत्, गतायाञ्च तस्यां लब्धचेतनो लज्जया (१) न शक्नोति मे दर्शनपथमुपगन्तुम्; आहोस्वित् कुपितः परित्यज्य मां गतः, उतान्वेषमाणो मामेव प्रदेशमन्यमितः समाश्रितः

पुनरन्या गतिर्नास्तीत्यभिधानादर्थगतपुनरुक्ततादोषः प्रसजन्नपि वक्तुर्विषादमग्नतया दोषतां नावहति, प्रत्युत गुणतामेव भजते। "कथितञ्च पदं पुनः। विहितस्यानुवाद्यत्वे विषादे विस्मये क्रुधि।" इत्यादि दर्पणोक्तेः। अनर्थोपनिपातो विपदुपस्थितिः सुहृत्प्राणनाशसम्भवादिति भावः। सुहृदोऽसवः सख्युः प्राणाः।

(ड) अस्तीति। उपदर्शितकोपेन प्रकटितक्रोधेन मया भवत्याः समक्षमेव स पुण्डरीकः तथा निष्ठुरमभिहित उक्तः अस्तीत्यन्वयः। अस्तीत्यतीतसामीप्ये वर्त्तमाना आसीदित्यर्थः। उपजातमन्युः उत्पन्नकोपः। उत्सृष्टः कोपेनैव त्यक्तः कुसुमावचयः पुष्पचयनं येन सः। अयं पुण्डरीकः। सञ्जातवितर्क उत्पन्नसंशयः। विटपान्तरितविग्रहः शाखावृतदेहः अहम्।

(ढ) यावदिति। तं पुण्डरीकं। तावदासीदित्यर्थः। मदनस्य परायत्ता अत्यन्ताधीना चित्तवृत्तिर्यस्य स तादृशः पुण्डरीकः। तां कन्यामिव। कुपितो मम भर्त्सनेन क्रुद्धः। विकल्पयन् विविधां कल्पनां कुर्वन्।

—ইহার অন্য উপায় দেখিতেছি না, অন্যরকম প্রতিকার আছে বলিয়া বুঝিতেছি না, অন্য রক্ষক দেখিতেছি না এবং অন্য কোন রকমই উপায় নাই। না বলিলেও মহাবিপদ উপস্থিত হয়। নিজের প্রাণ পরিত্যাগ করিয়াও সখার প্রাণ রক্ষা করা উচিত বলিয়া, বলিতেছি। (ড) আপনার সাক্ষাতেই আমি ক্রোধ প্রকাশ করিয়া পুণ্ডরীককে সেই ভাবে নিষ্ঠুর কথা সকল বলিয়াছিলাম, (তাহা আপনার জানা আছে)। তাহার পর আমি তাহাকে পরিত্যাগ করিয়া, ক্রোধবশতঃ পুষ্পচয়নও না করিয়া সে স্থান হইতে অন্য স্থানে চলিয়া গেলাম। আপনিও চলিয়া গেলেন, তাহার পর কিছু কাল থাকিয়া আমার মনে এইরূপ সংশয় জন্মিল যে, 'এখন পুণ্ডরীক একাকী কি আচরণ করিতেছে দেখি' তাই আমি ফিরিয়া আসিয়া শাখার অন্তরালে লুক্কায়িত থাকিয়া, সেই দিকে দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলাম। (ঢ) যখন তাহাকে সেখানে দেখিতে

---

(১) लज्जमानः।

स्यात्' इत्येवं विकल्पयन् कञ्चित्कालमतिष्ठम् (ढ)। तेन तु जन्मनः (१) प्रभृत्यनभ्यस्तेन तस्य क्षणमप्यदर्शनेन दूयमानः पुनरचिन्तयम्—'स कदाचिद्धैर्य्य-स्खलनविलक्षः किञ्चिदनिष्टमपि समाचरेत्। नहि किञ्चिन्न (२) क्रियते ह्रिया। तन्न युक्तमेनमेकाकिनं कर्त्तुम्' इत्यवधार्य्यान्वेष्टुमादरमकरवम् (ण)। अन्वेषमाणश्च यथा यथा नापश्यं तम्, तथा तथा सुहृत्स्नेहकातरेण मनसा तत्तदशोभनमाशङ्कमानस्तरुलतागहनानि, चन्दनवीथिकाः, लतामण्डपान् (३) सरःकूलानि च (४) वीक्षमाणो निपुणमितस्ततो दत्तदृष्टिः सुचिरं व्यचरम्। (त)

(ण) तेनेति। तस्य पुण्डरीकस्य। दूयमानः सन्तप्यमानः। स पुण्डरीकः, धैर्य्यस्य स्खलनेन विलोपेन विलक्षो लज्जितः सन्, कदाचित् किञ्चित् अनिष्टमपि उद्बन्धनादिकं। ननु तादृशो मनस्वी कथमनिष्टमाचरेदित्याह नहीति। ह्रिया लज्जया न क्रियते इत्यं किञ्चित् किमपि नहि अस्तीत्यर्थः। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(त) अन्वेषेति। अशोभनमनिष्टं। तरुलतानां गहनानि वनानि। चन्दनवीथिकाश्चन्दनतरुश्रेणीः। सरसः कूलानि तीराणि च, निपुणं यथा तथा वीक्षमाणः।

পাইলাম না, তখন আমার এইরূপ মনে হইতে লাগিল যে—'সম্ভবতঃ, অত্যন্ত-কামায়ত্ত-চিত্ত হইয়া সেই কন্যাটিরই পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিয়া থাকিবে, তাহার পর সেই কন্যাটি বাড়ী চলিয়া গেলে চৈতন্যলাভ করিয়া লজ্জাতে আমার দৃষ্টিপথে আসিতে পারিতেছে না; অথবা ক্রুদ্ধ হইয়া আমাকে পরিত্যাগ করিয়া চলিয়া গিয়াছে; কিংবা আমাকেই অন্বেষণ করতঃ এস্থান হইতে অন্য স্থানে গিয়াছে', এইরূপ মনে মনে নানাবিধ কল্পনা করতঃ সেই স্থানেই কিছু কাল অবস্থান করিলাম। (ণ) জন্মকাল হইতেই ক্ষণকালের জন্যও পুণ্ডরীকের সহিত সাক্ষাৎ না হওয়া আমার অনভ্যস্ত ছিল, সুতরাং তৎকালীন তাহার সেই অদর্শনে সন্তপ্ত হইয়া আমি পুনরায় চিন্তা করিতে লাগিলাম—'ধৈর্য্য-লোপ-নিবন্ধন লজ্জিত হইয়া কখনও হয় ত পুণ্ডরীক কোন অনিষ্ট আচরণও করিতে পারে; কারণ লজ্জায় করিতে না পারে—এমন কিছুই নাই। অতএব ইহাকে একাকী রাখা উচিত নহে', এইরূপ মনে মনে স্থির করিয়া তাহাকে অন্বেষণ করিবার জন্য চেষ্টা করিলাম। (ত) যখন অন্বেষণ করিয়াও তাহাকে দেখিতে পাইলাম না, তখন সুহৃৎ-স্নেহে কাতরচিত্তে নানাবিধ অমঙ্গলের আশঙ্কা করতঃ পুঙ্খানুপুঙ্খরূপে ইতস্ততঃ দৃষ্টিপাত করিয়া তরুলতাময় বন, চন্দনবৃক্ষশ্রেণী, লতামণ্ডপ এবং সরোবরের তীর দেখিতে দেখিতে বহু সময় যাবৎ বিচরণ করিলাম।

(१) जन्मतः। (२) नहि यन्न। (३) चन्दनवीथिकालतामण्डपान्,...मण्डपिकाः।
(४) सरस्तीराणि च।

अथैकस्मिन् सरःसमीपवर्त्तिनि निरन्तरतया कुसुममय इव मधुकरमय इव परभृतमय इव मयूरमय इवातिमनोहरे वसन्तजन्मभूते लतागहने कृतावस्थानम्, (थ) उत्सृष्टसकलव्यापारतया लिखितमिवोत्कीर्णमिव स्तम्भितमिवोपरतमिव प्रसुप्तमिव योगसमाधिस्थमिव, (द) निश्चलमपि स्ववृत्ताच्चलितम्, एकाकिनमपि मन्मथाधिष्ठितम्, सानुरागमपि पाण्डुतामावहन्तम्, शून्यान्तःकरणमपि हृदयनिवासिदयितम्, तूष्णीकमपि कथित-

---

(थ) अथेति। निरन्तरतया पुष्पैर्घनतया हेतुना कुसुममये पुष्पैर्निर्म्मित इव, मधुकरैर्निरन्तरतया मधुकरमय इव, परभृतैर्निरन्तरतया परभृतमये कोकिलैर्निर्म्मित इव, तथा मयूरैर्निरन्तरतया मयूरमय इव। वसन्तस्य कालस्य जन्मभूमिभूते उत्पत्तिस्थानस्वरूपे, एकस्मिन् लतागहने लतामयवने, कृतावस्थानं तमहमद्राक्षमिति परेणान्वयः। अत्र प्रस्तुतार्थे मयट्प्रत्ययाश्रतसृणामिव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(द) उत्सृष्टेति। उत्सृष्टाः परित्यक्ताः सकला व्यापारा अङ्गप्रत्यङ्गस्पन्दनादयो येन तस्य भावस्तया हेतुना, लिखितं चित्रितमिव, उत्कीर्णं पाषाणादिकं निस्तक्ष्य निर्म्मितमिव, स्तम्भितमिव केनचित् स्तब्धीकृतमिव, उपरतं मृतमिव, प्रसुप्तं निद्रितमिव, तथा योगस्य चित्तवृत्तिनिरोधस्य यः समाधिर्यरमात्मसर्थमात्रनिर्भासनरूपं तस्मिन् तिष्ठतीति तमिव। अत्रापि षण्णामिव क्रियोत्प्रेक्षाणां पूर्ववत् संसृष्टिः।

(ध) निश्चलमिति। स्ववृत्तादात्मकर्त्तव्यात् चलितं प्रभ्रष्टमिति विरोधपरिहारः। एकाकिनमसहायमपि मन्मथेन सहायेनाधिष्ठितमिति विरोध, मन्मथस्य चित्तवृत्तिमात्रत्वात् समाधानम्। अनुरागेण रक्तिम्ना सह वर्त्तत इति सानुरागस्तमपि पाण्डुतामावहन्तमिति विरोधः, सानुरागं दयितायामासक्तमपीति समाधानम्। हृदयनिवासिदयितत्वे शून्यान्तःकरणत्वाभावाद्विरोधः, शून्यं विषयान्तरवृत्तिरहितं अन्तःकरणं यस्य तमिति समाधानम्। तूष्णीं शीलमस्येति तूष्णीकः सद्य आद्यत्वान्निपातः "तूष्णींशीलस्तु तूष्णीक" इत्यमरः। तं मौनावलम्बिनमपि कथितमदनवेदनातिशयमिति मौनकथनयोरेकत्रासम्भवाद्विरोधः, कथितो गात्रसम्भादिना

(থ) তাহার পর, সরোবরের নিকটবর্ত্তী, অত্যন্ত মনোহর এবং বসন্তকালের জন্মভূমির তুল্য একটি লতাময় বনের মধ্যে তাহাকে অবস্থান করিতে দেখিলাম; ঘন ঘন পুষ্প ছিল বলিয়া সেই লতাটিকে পুষ্পনির্ম্মিতের ন্যায়, ঘন ঘন ভ্রমর ছিল বলিয়া ভ্রমর-নির্ম্মিতের ন্যায়, অসংখ্য কোকিল ছিল বলিয়া কোকিল-নির্ম্মিতের ন্যায় এবং বহুতর ময়ূর ছিল বলিয়া ময়ূর-নির্ম্মিতের ন্যায় বোধ হইতেছিল। (দ) পুণ্ডরীক, অঙ্গ-প্রত্যঙ্গের স্পন্দনপ্রভৃতি সমস্ত কার্য্যই পরিত্যাগ করিয়াছিল; সুতরাং তাহাকে চিত্রিতের ন্যায়, খোদিতের ন্যায়, স্তম্ভিতের ন্যায়, মৃতের ন্যায়, নিদ্রিতের ন্যায় এবং ধ্যানস্থের ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (ধ) এবং সে নিশ্চল হইলেও নিজের কর্ত্তব্য হইতে চলিয়াছিল, (পরিভ্রষ্ট হইয়াছিল); সহায়শূন্য হইলেও কামদেব সঙ্গে আছিলেন (কামার্ত্ত ছিল); রক্তবর্ণ হইলেও পাণ্ডুবর্ণ ধারণ করিয়াছিল (আপনার প্রতি অনুরক্ত হইয়াছিল এবং আপনারই বিরহে পাণ্ডুবর্ণ ধারণ করিয়াছিল); তাহার অন্তঃকরণ শূন্য হইলেও হৃদয়ে কোন প্রিয়জন বাস করিতেছিল (অন্তঃকরণে অন্য

मदनवेदनातिशयम्, शिलातलोपविष्टमपि मरणे व्यवस्थितम्, (ध) शापप्रदानभयादिवादत्तदर्शनेन कुसुमायुधेन सन्ताप्यमानम्, (न) अतिनिष्पन्दतया (१) हृदयनिवासिनीं प्रियां द्रष्टुमन्तःप्रविष्टैरिवासह्यसन्तापसंत्रासप्रलीनैरिव मनःक्षोभप्रकुपितैरिव उन्मुच्य गतैरिन्द्रियैः शून्यीकृतशरीरम्, (प) निष्पन्दनिमीलितेनान्तर्ज्वलन्मदनदहनधूमाकुलिताभ्यन्तरेणेव पक्ष्मान्तर-(२) विवरवान्तानेकधारमनवरतमीक्षणयुगलेन बाष्पजलदुर्दिनमुत्सृजन्तम्, (फ)

सूचितः मदनवेदनाया अतिशय आधिक्यं येन तमिति समाधानम्। शिलातले उपविष्टमपि मरणे व्यवस्थितं विशेषेणावस्थितमुपविष्टमिति विरोधः, व्यवस्थितं कृतनिश्चयमिति समाधानम्। अत्र प्रत्येकविशेषण एव विरोधाभासोऽलङ्कारः।

(न) शापेति। अदत्तदर्शनेन अदृश्यदेहेनेत्यर्थः। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

(प) अतीति। असह्यसन्तापात् यः सन्त्रासो भयं तेन प्रलीनैर्लुक्कायितैरिव, तथा मनसः क्षोभेण उद्वेलनेन असत्पथगमनेनेत्यर्थः प्रकुपितैः क्रुद्धैरिव, स्वेषां चिरादेवातिसाधुत्वादिति भावः, अतएव उन्मुच्य स्वस्वस्थानं विहाय गतैरिन्द्रियैश्चक्षुरादिभिः शून्यीकृतं परित्यक्तं शरीरं यस्य तमिव स्थितम्, अन्यथेदृशी निष्पन्दता न स्यादिति भावः। अत्र प्रथमास्तिस्रो वाच्याः क्रियोत्प्रेक्षाः, अन्त्या च शरीरशून्यीकरणोत्प्रेक्षा-दिवाद्यभावात् प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा, इत्थासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(फ) निष्पन्देति। निष्पन्दञ्च तत् निमीलितं मुद्रितञ्चेति तेन, अतएव अन्तर्ज्वलती मदनदहनस्य कामाग्नेर्धूमैराकुलितं व्याप्तमभ्यन्तरं यस्य तेनेव स्थितेन, अन्तर्धूमव्याप्तौ नयननिमीलनस्य स्वाभाविकत्वादिति भावः, ईक्षणयुगलेन नयनद्वयेन करणेन, पक्ष्मान्तरविवरेभ्यो नयनलोमान्तरालदेशेभ्यः वान्ता उद्‌गीर्णा अनेका धारा यस्य तत्, बाष्पजलदुर्दिनं अश्रुजलवृष्टिं उत्सृजन्तं वर्षन्तम्। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं मदनदहनेति निरङ्गकेवलरूपकं क्रियोत्प्रेक्षा चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

বিষয়ের চিন্তা ছিল না, কেবল আপনারই চিন্তা রহিয়াছিল); মৌনাবলম্বন করিয়া থাকিলেও অত্যন্ত কাম-বেদনা বলিতেছিল (নানাবিধ ভঙ্গীদ্বারা কামবেদনার সূচনা করিতেছিল); প্রস্তরখণ্ডের উপর বসিয়া থাকিলেও—মরণে বসিয়াছিল (কৃতনিশ্চয় হইয়াছিল)। (ন) কামদেব, শাপপ্রদানের ভয়েই যেন দর্শন-দান না করিয়া তাহাকে সন্তপ্ত করিতেছিলেন। (প) আর পুণ্ডরীক অত্যন্ত নিষ্পন্দভাবে ছিল বলিয়া তাহার ইন্দ্রিয় সকল যেন হৃদয়নিবাসিনী প্রিয়াকে দেখিবার নিমিত্ত ভিতরে প্রবেশ করিয়াছিল, অসহ্য সন্তাপের ভয়েই যেন লুক্কায়িত হইয়া রহিয়াছিল এবং মন অসৎপথে ধাবিত হইয়াছে বলিয়াই যেন ক্রুদ্ধ হইয়া স্ব স্ব স্থান ত্যাগ করিয়া চলিয়া গিয়াছিল; সুতরাং শরীরটা যেন শূন্য পড়িয়া রহিয়াছিল; (ফ) নয়নযুগল নিষ্পন্দ ও মুদ্রিত হইয়া রহিয়াছিল, তাহাতে বোধ হইয়াছিল যেন, অন্তরে প্রজ্বলিত কামানলের ধূমে সেই নয়নযুগলের অভ্যন্তর দেশ ব্যাপ্ত রহিয়াছে এবং নয়ন-

(१) अतिनिष्पन्दतया। (२) अधिपक्ष्मान्तर...।

आलोहिनीमधरप्रभामनङ्गाग्नेः प्रदहतो हृदयं (१) ऊर्द्ध्वसंसर्पिणीं शिखामिवादाय निष्पतद्भिरुच्छ्वासैस्तरलीकृतासन्नलताकुसुमकेशरम्, (ब) वामकपोलशयनीकृत करतलतया समुत्सर्पद्भिरमलैर्नखांशुभिर्विमलीकृतमच्छाच्छ-चन्दन-रस-रचित ललाटिकमिव ललाटदेशमुद्वहन्तम्, (भ) अचिरापनीत-पारिजात-कुसुम-मञ्जरी-कर्णपूरतया (२) सशेष-(३) परिमलामोद-लोभोपसर्पिणा कल-विरुतच्छलेन मदनसम्मोहनमन्त्रमिव जपता मधुकरकुलेन सनीलोत्पलमिव

(ब) आलोहिनीमिति। हृदयं प्रदहतः अनङ्गाग्नेः कामानलस्य ऊर्द्ध्वसंसर्पिणीं उपरिगामिनीं शिखामिव आलोहिनीं आरक्तां अधरप्रभामोष्ठकान्तिमादाय निष्पतद्भिर्निर्गच्छद्भिः उच्छ्वासैर्निश्वासैः करणैः, तरलीकृताः कम्पिताः आसन्नलतानां कुसुमकेशराः पुष्पकिञ्जल्का येन तम्। अत्र निरङ्गकेवलरूपकं श्रौत्युपमा च जात्युत्प्रेक्षेति केचित्, अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। आलोहिनीमिति "वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः" इति लोहितशब्दस्य तकारस्य नकारः।

(भ) वामेति। वामकपोलस्य शयनीकृतं शय्यीकृतं आधारीकृतमित्यर्थः करतलं वामपाणितलं येन तस्य भावस्तया हेतुना प्रसारितवामपाणितले वामगण्डस्थापनेन वामहस्तनखकिरणानां ललाटे सञ्चरणादित्यर्थः, समुत्सर्पद्भिर्ललाटे समुद्गच्छद्भिः नखांशुभिः नखकिरणैः, विमलीकृतं विशदीकृतं, अतएव अच्छाच्छेन नितान्तनिर्म्मलेन चन्दनरसेन रचिता निर्म्मिता ललाटिका तिलकविशेषो यत्र तमिव स्थितं ललाटदेशमुद्वहन्तम्। अत्र ललाटिकारचनोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। "पत्रपाश्या ललाटिका" इत्यमरः।

(म) अचिरेति। अचिरं अनतिपूर्व्वं अपनीतः महाश्वेतायै दानार्थमपसारितः पारिजातकुसुममञ्जरीरूपः कर्णपूरो यस्य तस्य भावस्तया हेतुना, सशेषस्तदानीमप्यवशिष्टो यः परिमलः सौरभं तस्य य आमोदस्तदनुभवजनितानन्दस्तस्य लोभेन उपसर्पिणा समीपवर्त्तिना, कलविरुतच्छलेन स्वकीयमधुरास्फुटरवव्याजेन, मदनस्य सम्मोहनमन्त्रं जपतेव स्थितेन, मधुकरकुलेन भ्रमरगणेन करणेन, सनीलोत्पलमिव सतमालपल्लवमिव

লোমের অন্তরাল হইতে বহুতর ধারা পড়িতেছিল,—এই অবস্থায় সে অবিশ্রান্ত অশ্রুবর্ষণ করিতেছিল। (ব) কামানল পুণ্ডরীকের হৃদয় দগ্ধ করিতেছিল, সুতরাং তাহার ঊর্দ্ধগামিনী শিখার ন্যায় আরক্তবর্ণ ওষ্ঠের কান্তি লইয়া নির্গত নিশ্বাসদ্বারা পুণ্ডরীক, নিকটবর্ত্তী লতার পুষ্পের কেশরগুলিকে কম্পিত করিতেছিল; (ভ) বাম-হস্তের উপরে বাম গণ্ড স্থাপন করিয়াছিল, তাহাতে ঊর্দ্ধগামী নির্ম্মল নখের কিরণে ললাটদেশ নির্ম্মল করিয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন ললাটে অত্যন্ত নির্ম্মল চন্দনের কতকগুলি টিপ দিয়া রাখা হইয়াছে,—এইরূপ ললাটদেশ সে ধারণ করিতেছিল; (ম) অনতিপূর্ব্বে পারিজাতকুসুমের মঞ্জরী-রূপ কর্ণাভরণটি খুলিয়া দেওয়া হইয়াছিল, সুতরাং তখনও কর্ণে তাহার কিছু সৌরভ অবশিষ্ট ছিল বলিয়া তাহা ভোগ করিবার আনন্দের লোভে, ভ্রমরগণ উপস্থিত হইয়া অস্পষ্ট-মধুর

---

(१) हृदयात्। (२)...कुसुमकर्णपूरतया। (३) अशेष...।

मतमालपल्लवमिव श्रवणदेशं दधानम्, (म) उत्कण्ठा-ज्वर-रोमाञ्च-व्याजेन प्रतिरोम-कूप-निपतितानां मदनशराणां कुसुमशर-शल्य-(१) शकल-निकर-मिवाङ्गलग्नं बिभ्राणम्, (य) दक्षिणकरेण च स्फुरित-किरणनिकरां (२) करतल-स्पर्शसुख-कण्टकितामिव मुक्तावलीमविनयपताकामुरसि धारयन्तम्, (र) मदनवशीकरणचूर्णेनेव कुसुमरेणुना तरुभिराहन्यमानम्, (ल) आत्मरागमिव

स्थितं मधुकरकुलस्य नीलोत्पलतमालपल्लवतुल्यतया प्रतीयमानत्वादिति भावः, श्रवणदेशं कर्णदेशं दधानम्। अत्र प्रथमा सापह्नवा क्रियोत्प्रेक्षा अपरे च द्वे गुणोत्प्रेक्षे इत्येतासां परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(य) उत्कण्ठेति। उत्कण्ठया कामोत्सुक्येन यो ज्वरः सन्तापस्तेन ये रोमाञ्चास्तेषां व्याजेन छलेन, अङ्गलग्नं, प्रतिरोमकूपनिपतितानां मदनशराणां मध्ये ये कुसुमशरास्तेषां शल्यशकलनिकरं अग्रखण्ड-समूहं बिभ्राणमिव, रोमाञ्चानां बाणाग्ररूपतया प्रतीतेरिति भावः। अत्रापि सापह्नवा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा पुष्पबाणस्य पुष्पातिरिक्तबाणासत्त्वान्मदनशराणामित्यनेनैवोपपत्तौ पुनः कुसुमशरपदोपादानादधिकपदत्वदोषः, स तु कुसुमशरपदपरित्यागेनैव परिहरणीयः।

(र) दक्षिणेति। किञ्च दक्षिणकरेण उरसि वक्षसि स्फुरितः प्रसृतः किरणनिकरो यस्यास्तां, अतएव करतलस्य स्पर्शेन यत् सुखं तेन कण्टकितां सञ्जातरोमाञ्चामिव स्थितां, किरणनिकरस्य रोमाञ्चवत् प्रतीतेरिति भावः, तथा अविनयस्य कामाविष्टरूपदुराचारस्य पताकां वैजयन्तीमिव स्थितां मुक्तावलीं त्वदीयं हारं धारयन्तम्। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं तथा प्रथमा वाच्या क्रियोत्प्रेक्षा द्वितीया च प्रतीयमाना जात्युत्प्रेक्षा इत्येतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ल) मदनेति। तरुभिः कर्तृभिः, मदनस्य वशीकरणचूर्णेनेव लोकवश्यतासाधकचूर्णेनेव कुसुमरेणुना करणेन आहन्यमानं देहोपरि निक्षिप्यमाणमानमिव। अत्र प्रथमा वाच्या जात्युत्प्रेक्षा द्वितीया च प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा तयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

ধ্বনির ছলে যেন কামদেবের সম্মোহন-মন্ত্র জপ করিতেছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, সেই কর্ণদেশ, নীলোৎপল-সংযুক্ত অথবা তমালপল্লব-সংযুক্ত হইয়া রহিয়াছে; (য) উৎ-কণ্ঠার সন্তাপে শরীরে যে সকল রোমাঞ্চ জন্মিয়াছিল, তাহার ছলে পুণ্ডরীক, প্রতিরোমকূপে নিপতিত মদন-শরের অগ্রখণ্ড-সমূহই যেন অঙ্গে ধারণ করিতেছিল; (র) বক্ষের উপরে দক্ষিণ-হস্তদ্বারা আপনার সেই মুক্তাময় হার ছড়াকে ধারণ করিয়াছিল, চতুর্দ্দিকে তাহার কিরণ ছড়াইয়া পড়িয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, করতল-সংস্পর্শের সুখে সেই হার ছড়া রোমাঞ্চিত হইয়াছে এবং সেই হার ছড়াকে অন্যায় আচরণের পতাকার ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (ল) বৃক্ষসমূহ, কামদেবের বশীকরণচূর্ণের ন্যায় আপনাদের পুষ্পরেণুদ্বারা

---

(१) कुसुमशरकिशरशल्य...। (२) स्फुरितनखकिरण।

संक्रामयद्भिरासन्नैरनिलचलितैः (१) अशोकपल्लवैः स्पृश्यमानम्, (व) सुरताभिषेकसलिलैरिवाभिनवपुष्पस्तवकमधुशीकरैर्वनश्रियाभिषिच्यमानम्, (श) अलिनिवह-निपीयमान-परिमलैरुपरि पतद्भिश्चम्पककुड्मलैस्तप्तशरशल्यकैरिव (२) सधूमैः कुसुमशरेण ताड्यमानम्, (ष) अतिबहल-वनामोद-मत्त-मधुकर-निकर-झङ्कार-निस्वनैः (३) हुङ्कारैरिव दक्षिणानिलेन निर्भर्त्स्यमानम्, (स) मद-कल कोकिल-कुल-कोलाहलैर्वसन्त-जय-शब्द-कलकलैरिव मधुमासेनाकुली-

---

(व) आसन्नेति। आसन्नैर्निकटवर्त्तिभिः, अनिलचलितैर्वायुकम्पितैः, आत्मरागं स्वलौहित्यमिव रागमनुरागं संक्रामयद्भिः पुण्डरीके सञ्चारयद्भिरिव स्थितैः अशोकपल्लवैः स्पृश्यमानम्। अत्र लौहित्यानुरागयोर्भेदेऽपि श्लेषाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(श) सुरतेति। वनश्रिया कर्त्र्या, सुरताभिषेकसलिलैरिव रतिराज्याभिषेकजलैरिव, अभिनवानां पुष्पस्तवकानां मधुशीकरैर्मकरन्दबिन्दुभिः करणैः, अभिषिच्यमानमिव। अत्र प्रथमा वाच्या जात्युत्प्रेक्षा द्वितीया तु प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा, अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ष) अलीति। कुसुमशरेण मदनेन कर्त्रा, सधूमैरग्निसमतप्तत्वाद्धूमान्वितैः कुड्मलोपरिस्थभ्रमरसाम्यप्रतिपादनार्थमेतद्विशेषणम्, तप्तशरशल्यकैरिव अग्निसंयुक्तस्वकीयबाणाग्रैरिव स्थितैः, चम्पककुड्मलपीतत्वसाम्यप्रतिपादनार्थं तप्तपदम्, अलिनिवहेन भ्रमरसमूहेन निपीयमानाः सादरमनुभूयमानाः परिमलाः सौरभाणि येषां तैः, पुण्डरीकस्यैव उपरि पतद्भिः चम्पककुड्मलैस्ताड्यमानमिव। अत्रापि प्रथमा वाच्या जात्युत्प्रेक्षा द्वितीया च प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(स) अतीति। दक्षिणानिलेन कर्त्रा, हुङ्कारैरिव भर्त्सनसूचकस्वकीयहुंशब्दैरिव, अतिबहलेन अत्यन्तप्रचुरेण वनामोदेन वन्यसौरभेण मत्तस्य मधुकरनिकरस्य भ्रमरगणस्य झङ्कारनिस्वनैः करणैः निर्भर्त्स्यमानमिव। अत्र हुङ्काराणां शब्दत्वेन गुणत्वात् प्रथमा वाच्या गुणोत्प्रेक्षा परा च प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा अनयोरपि पूर्ववत् सङ्करः।

(ह) मदेति। मधुमासेन चैत्रेण कर्त्रा, वसन्तस्य कालस्य जयशब्दकलकलैरिव मदकलस्य मदमत्तस्य कोकिलकुलस्य कोलाहलैः करणैः, आकुलीक्रियमाणं अधीरीक्रियमाणम्। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

যেন পুণ্ডরীককে আঘাত করিতেছিল ; (ব) নিকটবর্ত্তী বায়ুকম্পিত অশোক-পল্লবগুলি যেন পুণ্ডরীকের দেহে আপনাদের রাগ সঞ্চারিত করিতে করিতেই তাঁহাকে স্পর্শ করিতেছিল ; (শ) বনলক্ষ্মী, রতি-রাজ্যে অভিষেক করিবার জলের ন্যায় নূতন পুষ্পগুচ্ছের মধুবিন্দুদ্বারা পুণ্ডরীককে যেন অভিষিক্ত করিতেছিলেন ; (ষ) কামদেব, ধূমসংযুক্ত অগ্নিময় স্বকীয় বাণখণ্ডদ্বারা পুণ্ডরীককে যেন তাড়ন করিতেছিলেন ; কারণ—তাঁহার দেহের উপরে চাঁপাফুলের কলিকা পড়িতেছিল ; সেগুলির উপরে আবার সৌরভ-লোভে ভ্রমরগণ বসিয়াছিল ; (স) দক্ষিণ বায়ু, স্বকীয় হুঙ্কারের ন্যায় প্রচুর বন্য-সৌরভ-মত্ত ভ্রমরগণের ঝঙ্কারশব্দে যেন

---

(१)...वलितैः। (२) तप्तशल्यकैरिव। (३)...निःस्वनैः।

क्रियमाणम्, (ङ) प्रभातचन्द्रमिव पाण्डुतया परिगृहीतम्, निदाघगङ्गा-प्रवाहमिव कृशिमानमागतम्, अन्तर्गतानलं चन्दनविटपमिव म्लायन्तम्, (च) अन्यमिव, अदृष्टपूर्वमिव, अपरिचितमिव, जन्मान्तरमिवोपगतम्, (१) रूपान्तरेणेव परिणतम्, (क) आविष्टमिव महाभूताधिष्ठितमिव ग्रहगृहीतमिवोन्मत्तमिव छलितमिवान्धमिव बधिरमिव मूकमिव विलासमयमिव मदनमयमिव, (ख) परायत्तचित्तवृत्तिं, परां कोटिमधिरूढं मन्मथावेशस्य, (२) अनभिज्ञेयपूर्वाकारं तमहमद्राक्षम्। (ग)

(च) प्रभातेति। परिगृहीतं शरीरे आश्रितम्। निदाघे ग्रीष्मकाले यो गङ्गायाः प्रवाहस्तमिव, कृशिमानं कृशत्वम्। निदाघकाले सर्वासामेव नदीनां प्रवाहकार्श्यादत्र केवलगङ्गापदोपादानादविशेषे विशेषाख्यदोषः, स तु गङ्गेत्यत्र नदीति पाठेन समाधेयः। अन्तर्गतः अनलो वह्निः कामानलश्च यस्य तं, चन्दनविटपमिव चन्दनशाखामिव, म्लायन्तं म्लानतां गच्छन्तम्। अत्र प्रत्येकविशेषण एव पूर्णोपमालङ्कारः।

(क) अन्यमिति। अत्र प्रथमास्त्रिषु आत्यूत्प्रेक्षा। जन्मान्तरमुपगतं प्राप्तमिव, तथा रूपान्तरेण परिणतमिव। अनयोस्तु प्रत्येकं क्रियोत्प्रेक्षा।

(ख) आविष्टमिति। आविष्टं डाकिन्यादिभिराश्रितमिव, महाभूतैर्वेतालैः अधिष्ठितमिव, ग्रहैः पूतनादिभिर्दुष्टग्रहैः गृहीतं धृतमिव। अत्र प्रत्येकविशेषण एव क्रियोत्प्रेक्षा। उन्मत्तं उन्मादरोगविकारवन्तमिव। अत्र गुणोत्प्रेक्षा। छलितं केनचित् प्रतारितमिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा। अन्धमिवेत्यादिषु त्रिषु प्रत्येकं गुणोत्प्रेक्षा। विलासमयं विभ्रमव्याप्तमिव, तथा मदनमयं कामव्याप्तमिव। अनयोस्तु प्रत्येकं क्रियोत्प्रेक्षा।

(ग) परेति। परस्य जनस्य मदनस्य आयत्ता इत्यर्थः आयत्ता अधीना चित्तवृत्तिर्यस्य तम्। मन्मथावेशस्य

পুণ্ডরীককে ভৎর্সনা করিতেছিল; (ঙ) এবং চৈত্রমাস, বসন্তকালের জয়ধ্বনির কোলাহলের ন্যায় মদমত্ত কোকিলগণের কোলাহলে পুণ্ডরীককে আকুল করিয়া তুলিয়াছিল; (ক) আর তখন পুণ্ডরীককে প্রভাতকালীন চন্দ্ররেখার ন্যায় পাণ্ডুবর্ণ দেখা যাইতেছিল এবং সে গ্রীষ্মকালীয় গঙ্গাপ্রবাহের ন্যায় কৃশতা প্রাপ্ত হইয়াছিল, আর অন্তরে অগ্নি প্রবেশ করিলে চন্দনবৃক্ষের শাখার ন্যায় পুণ্ডরীক ক্রমেই ম্লান হইতেছিল; (ক) তাহাকে দেখিয়া অপরের ন্যায়, পূর্ব্বে যাহাকে কখনও দেখি নাই, সেইরূপ ব্যক্তির ন্যায় এবং অপরিচিতের ন্যায় বোধ হইতেছিল এবং সে যেন জন্মান্তর লাভ করিয়াছিল ও রূপান্তরে পরিণত হইয়াছিল; (খ) এবং তাহাকে যেন ডাকিনীতে পাইয়াছিল, কোন বড় ভূতেই যেন ধরিয়াছিল এবং পূতনাপ্রভৃতি কোন দুষ্ট গ্রহেই যেন আশ্রয় করিয়াছিল আর তাহাকে তখন উন্মত্তের ন্যায়, প্রতারিতের ন্যায়, অন্ধের ন্যায়, বধিরের ন্যায়, মূকের ন্যায় এবং বিলাসিতাময় ও কামময়ের

---

(१) उपगतं। (२) मदनावेशस्य।

अपगतनिमेषेण चक्षुषा तदवस्थं चिरमुद्वीक्ष्य समुपजातविषादो वेपमानेन हृदयेनाचिन्तयम्—'एवं नामायमतिदुर्विषहवेगः (१) मकरकेतुः, येनानेन क्षणेनायमीदृशमवस्थान्तरं (२) अप्रतीकारमुपनीतः (घ)। कथमेवमेकपदे व्यर्थीभवेदेवंविधो ज्ञानराशिः। अहो वत महच्चित्रम्, तथा नामायमाशैशवाद्धीरप्रकृतिरस्खलितवृत्तिः (३) मम चान्येषाञ्च मुनिकुमारकाणां स्पृहणीयचरित आसीत् (ङ)। अद्य तु (४) इतर इव परिभूय ज्ञानं, अवगणय्य तपःप्रभावं, उन्मूल्य गाम्भीर्य्यं, मन्मथेन जड़ीकृतः। सर्वथा दुर्लभं यौवनमस्खलितमिति। (च)

कामाविष्टस्य परां कोटिं चरमां दशां अधिरूढ़मारूढ़ं। अनभिज्ञेय इदन्तया अभिज्ञातुमशक्यः पूर्व्वाकारो यस्य तम्। तं पुण्डरीकम्।

(घ) अपेति। अपगतनिमेषेण निर्निमेषेण। सा तादृशी वर्णितरूपा अवस्था यस्य तं। वेपमानेन भयात् कम्पमानेन। एवं नाम इत्यम्भूतः, अतिदुर्विषहो वेगो यस्य सः, मकरकेतुर्मदनः। येन हेतुना, अनेन मकरकेतुना, क्षणेनैव अयं पुण्डरीकः। उपनीतः प्रापितः।

(ङ) उक्तवैपरीत्ये असम्भवमाह कथमिति। एवमनेन प्रकारेण। एकपदे सहसा "तत्क्षणैकपदे तुल्ये" इति हलायुधः। अहोवतेत्येकमेव विस्मयविषादसूचकमव्ययम्। महत् चित्रमाश्चर्य्यम्। अस्खलितवृत्तिः सत्पथादपरिभ्रष्टचरितः।

(च) अद्येति। तु किन्तु, अद्य मन्मथेन ज्ञानं परिभूय विजित्य, तपःप्रभावं अवगणय्य अवज्ञाय, तथा गाम्भीर्य्यं अनन्यथाकरणीयस्वभावं उन्मूल्य उच्छेद्य, इतरः प्राकृतलोक इव जड़ीकृतो मूढ़तां प्रापितः। येन हि, सर्व्वथा अस्खलितं सत्पथादपरिभ्रष्टं यौवनं लोके दुर्ल्लभं, अतएव मन्मथेनैवं कर्त्तुं शक्यत इति भावः। इतिशब्दस्य अचिन्तयमित्यनेनान्वयः। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

ন্যায় বোধ হইতেছিল ; (গ) তাহার মন তখন পরের অধীন হইয়া গিয়াছিল, এবং সে, কামাবেশের চরমদশায় উঠিয়াছিল, আর তাহার সেই পূর্ব্বের আকৃতি চেনা যাইতেছিল না।

(ঘ) নির্নিমেষ-নয়নে বহুকাল যাবৎ সেই অবস্থায় তাহাকে দেখিয়া আমার বিষাদ জন্মিল এবং হৃদয় কাঁপিতে লাগিল ; তখন আমি চিন্তা করিতে লাগিলাম—'এই কন্দর্প, এইরূপই অত্যন্ত-অসহ্য-বেগশালী হইবেন ; যেহেতু, ইনি ক্ষণকালমধ্যেই পুণ্ডরীককে এইরূপ প্রতীকারবিহীন অবস্থান্তরে উপনীত করিয়াছেন। (ঙ) না হইলে এইরূপ জ্ঞানরাশি, সহসাই এই ভাবে ব্যর্থ হইয়া যাইবে কেন ? হায় ! বড়ই আশ্চর্য্য ! বাল্যকাল হইতে সেইরূপ ধীরপ্রকৃতি ও অস্খলিতচরিত্র এই পুণ্ডরীকের স্বভাব, আমার ও অন্যান্য মুনিকুমারদিগের বাঞ্ছনীয় ছিল। (চ) কিন্তু আজ কন্দর্প, সে জ্ঞানকে পরাজিত করিয়া, তপস্যার প্রভাবকে অবজ্ঞা করিয়া এবং সে গাম্ভীর্য্য নষ্ট করিয়া ইতর লোকের ন্যায় ইহাকে মোহাচ্ছন্ন করিয়া

(१) अतिदुर्विषयवेगः। (२) अवस्थान्तरप्रकारं। (३)...स्थिरवृत्तिः। (४) अत्र तु।

उपसृत्य च तस्मिन्नेव शिलातलैकपार्श्वे समुपविश्य अंसदेशावसक्तपाणिः (१) तमनुन्मीलित-(२) लोचनमेव 'सखे! पुण्डरीक! कथय किमिदम्' इत्यपृच्छम् (झ)। अथ सुचिरसम्मीलनात् लग्नमिव (३) कथमपि प्रयत्नेन अनवरतरोदनवशात् समुपजातारुण-(४) भावमश्रुजलपूर-(५) प्लावितं उत्कुपितमिव सवेदनमिव स्वच्छांशुकान्तरितरक्तकमलवनच्छायं चक्षुरुन्मील्य मन्थरमन्थरया (६) दृष्ट्या सुचिरं विलोक्य मां आयततरं निश्वस्य (७) लज्जाविशीर्य्यमाणविरलाक्षरं "सखे! कपिञ्जल! विदितवृत्तान्तोऽपि किं मां पृच्छसि"

(झ) उपेति। क्रियाहम्। अंसदेशे पुण्डरीकस्य स्कन्धदेशे अवसक्तः संलग्नः पाणिर्यस्य स तादृशः सन्। अनुन्मीलितलोचनमेव मुद्रितनयनमेव तं पुण्डरीकं।

(ञ) अथेति। सुचिरसम्मीलनात् बहुसमयं यावन्मुद्रणात् लग्नमिव परस्परसंसक्तावरणद्वयमिव, कष्टेनोन्मीलनादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। समुपजातः अरुणभावो रक्तिमा यस्य तत्, अश्रुजलस्य पूरेण ओघेन प्लावितं, उत्कुपितमिव उत्कोपो नेत्ररोगविशेषस्तद्विशिष्टमिव, आरक्तत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा। सवेदनमिव सव्यथमिव, कष्टेनोन्मीलनादिति भावः। अत्र गुणोत्प्रेक्षा। स्वच्छांशुकेन निर्म्मलसूक्ष्मवसनेन अन्तरितं आवृतं यत् रक्तकमलवनं तस्य छाया इव छाया कान्तिर्यस्य तत् तथोक्तं चक्षुः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। अश्रुजलपूरप्लावनसाम्यप्रतिपादनार्थं स्वच्छांशुकान्तरितेनेति विशेषणं। किन्तु वनपदोपादानेन उपमानगतप्रमाणाधिक्यात् "स्तनावद्रिसमानौ ते" इति दर्पणोदाहृतवदनुचितार्थत्वदोषः, स तु वनपदपरित्यागेनैव परिहरणीयः। कथमपि प्रयत्नेन उन्मील्य। मन्थरमन्थरया अत्यन्तालसया। आयततरं

ফেলিয়াছে। কারণ—সকল প্রকারেই সৎপথ হইতে পরিভ্রষ্ট না হইয়াছে, এইরূপ যৌবন, জগতে দুর্লভ। :: : : :

(ছ) তাহার পর আমি পুণ্ডরীকের নিকটে যাইয়া সেই প্রস্তরখণ্ডেরই এক পার্শ্বে উপবেশন করিয়া, তাহার স্কন্ধদেশে করতল সংস্থাপনপূর্ব্বক, মুদ্রিত-নয়ন অবস্থাতেই তাহাকে জিজ্ঞাসা করিলাম—'সখে! পুণ্ডরীক! এই ঘটনাটা কি; বল।' (জ) তাহার পর, বহুকাল যাবৎ নয়নযুগল মুদ্রিত করিয়া রাখায় তাহার উপরের চর্ম্মাবরণ দুইটা যেন পরস্পর সংলগ্ন হইয়া গিয়াছিল, অবিশ্রান্ত রোদন করায় নয়নযুগল রক্তবর্ণ হইয়াছিল, এবং অশ্রুজলের প্রবাহে প্লাবিত করিয়াছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে—সেই চোক দুইটা যেন উঠিয়াছিল (উধাইয়াছিল—খড়াইয়াছিল), ব্যথা পাইতেছিল এবং নির্ম্মল সূক্ষ্মবস্ত্রে আবৃত রক্তবর্ণ পদ্মবনের ন্যায় সৌন্দর্য্য-সম্পন্ন হইয়াছিল; পুণ্ডরীক, কোন প্রকারে যত্নপূর্ব্বক সেই নয়নযুগল উন্মীলিত করিয়া, অত্যন্ত মন্থর দৃষ্টিতে, বহুকাল যাবৎ আমাকে দর্শন করিয়া এবং অত্যন্ত দীর্ঘনিশ্বাস পরিত্যাগ করিয়া, লজ্জাবশতঃ অস্পষ্ট ও অল্পাক্ষরে "সখে! কপিঞ্জল! তুমি

(१) अंसावसक्तपाणितलं। (२) अद्यमसमुन्मीलित···। (३) आलग्नमिव।
(४) उपजातारुणभावं। (५)···पटल···। (६) क्वचिद्विहसिन्नीस्ति। (७) निःश्वस्य।

इति कृच्छ्रेण शनैः शनैः (१) अवदत् (ज)। अहन्तु तदाकर्ण्य तदवस्थयैवाप्रतीकारविकारोऽयं, तथापि सुहृदा सुहृदसन्मार्गप्रवृत्तो यावच्छक्तिनः सर्वात्मना निवारणीय इति मनसावधार्य्याब्रवम् (झ) 'सखे! पुण्डरीक! सुविदितमेतत् (२) मम, केवलमिदमेव पृच्छामि—यदेतदारब्धं भवता, किमिदं गुरुभिरुपदिष्टम्, उत धर्म्मशास्त्रेषु पठितम्, उत धर्म्मार्जनोपायोऽयम्, उतापरस्तपसां प्रकारः, उत स्वर्गगमनमार्गोऽयम्, उत व्रतरहस्यमिदम्, उत मोक्षप्राप्तियुक्तिरियम्, (३) आहोस्विदन्यो नियमप्रकारः (ञ)। कथमेतद्युक्तं भवतो मनसापि चिन्तयितुम्, किं पुनराख्यातुमीक्षितुं वा? (ट)। कथय

अतिदीर्घं यथा स्यात्तथा लज्जया विशीर्य्यमाणानि अस्पष्टमुच्चार्य्यमाणानि विरलानि अल्पानि च अक्षराणि यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा। कृच्छ्रेण कष्टेन।

(झ) अहमिति। आदौ यद्यपीति पूरणीयम्। अयं पुण्डरीको यद्यपि तदवस्थयैव केवलेन ममोपदेशेनैव वाञ्छनीयां रसणीमन्तरेणेत्यर्थः, न विद्यते प्रतीकार उपशमो यस्य स तादृशो विकारो यस्य स तथोक्तः संवृत्तः। असन्मार्गप्रवृत्तः कुपथचलितः सुहृत्। यावच्छक्तितः यथाशक्ति, सर्वात्मना सर्वप्रयत्नेन। "आत्मा यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्ष्म च।" इत्यमरः।

(ञ) सखे इति। व्रतरहस्यं आरब्धव्रतविषये गोपनीयो नियमविशेषः। मोक्षप्राप्तौ युक्तिर्योगविशेषः। अन्यः अस्माभिरविदितः, नियमप्रकारो व्रताचरणभेदः। कपिञ्जलेन पूर्वमप्येवम्प्रायमेवोपदिष्टम्।

(ट) कथमिति। एतत् स्त्रीसंसर्गरूपमाचरणं मनसापि चिन्तयितुं भवतः कथं युक्तमुचितं, अपि तु

বৃত্তান্ত জানিয়াও কেন আমাকে জিজ্ঞাসা করিতেছ" এই কথাটি কষ্টক্রমে ধীরে ধীরে আমাকে বলিল। (ঝ) আমি কিন্তু সেই কথা শুনিয়া মনে মনে স্থির করিলাম যে, যদিও, কেবল আমার উপদেশেই পুণ্ডরীকের এই বিকারের উপশম হইবে না; তথাপি এক সুহৃৎ, অসৎপথে গমন করিতে প্রবৃত্ত হইলে, অপর সুহৃদের পক্ষে শক্তি-অনুসারে সর্ব্বপ্রকারে তাহাকে নিবৃত্তি করা উচিত, এইরূপ স্থির করিয়া বলিলাম —(ঞ) সখে! পুণ্ডরীক! এ বৃত্তান্ত আমার বেশ জানা আছে, তথাপি কেবল এই কথাই জিজ্ঞাসা করিতেছি যে, তুমি এই যে ঘটনা আরম্ভ করিয়াছ, গুরুরা কি ইহার উপদেশ দিয়াছেন? না ধর্ম্মশাস্ত্রে পড়িয়াছ? না এই একটা ধর্ম্ম-উপার্জ্জনের উপায়? কিংবা তপস্যারই আর একটা রকম? অথবা এইটা স্বর্গে যাইবার পথ? কিংবা এইটা আরব্ধ ব্রতের কোন গোপনীয় নিয়ম? অথবা মুক্তিলাভের জন্য এই এক প্রকার যোগ? কিংবা অন্য একপ্রকার ব্রত? (ট) তোমার পক্ষে এ বিষয় মনে চিন্তা করাও কি উচিত? স্ত্রীলোকের সহিত আলাপ করার কিংবা স্ত্রীলোক দেখার

(१) क्वचित् शिवशक्तिर्नास्ति। (२) सुविदितं सर्व्वमेतन्मम। (३) क्वचित् इयमिति नास्ति।

किम् (१) अप्रबुद्ध इवानेन मन्मथहतकेनोपहासास्पदतां नीयमानमात्मानं नावबुध्यसे ? मूढो हि मदनेनायास्यते (ठ)। का वा सुखाशा साधुजननिन्दितेष्वेवंविधेषु प्राकृतजनबहुमतेषु विषयेषु भवतः ? (ड)। स खलु धर्मबुद्ध्या विषलतावनं (२) सिञ्चति, कुवलयमालेति निस्त्रिंशलतामालिङ्गति, कृष्णागुरुधूमलेखेति कृष्णसर्पमवगूहते, (३) रत्नमिति (४) ज्वलन्तमङ्गारमभिस्पृशति, मृणालमिति

कथमपि नेत्यर्थः आख्यातुं कामतः स्त्रियं तद्विषयं वा आलपितुं, ईक्षितुं कामतः स्त्रियं द्रष्टुं, किं पुनर्वक्तव्यं अपि तु किमपि नेत्यर्थः, सर्वत्र ब्रह्मचारित्वादिति भावः।

(ठ) कथयेति। अप्रबुद्ध इव अज्ञानीव। मन्मथहतकेन दुराचारेण मदनेन। अथ मदनपीडया बुद्धिलोपादहं नावबुध्ये इति चेदुच्यते तत्राह मूढ इति। हि निश्चितं। आयास्यते पीड्यते। न पुनर्भवादृशो ज्ञानीति भावः।

(ड) केति। प्राकृतजनैर्मूढलोकैः बहुमतेषु आदृतेषु, विषयेषु कामिन्यादिभोग्येषु, भवतः का वा सुखाशा अपि तु कापि नेत्यर्थः, तत्सुखस्य क्षणभङ्गुरत्वेन परमपुरुषार्थत्वाभावादिति भावः।

(ढ) स इति। यो मूढो हिताहितविवेकहीनो जनः, अनिष्टानुबन्धिषु पापदुःखाद्यनर्थजनकेषु विषयोपभोगेषु स्रक्चन्दनवनितादिसम्भोगेषु सुखबुद्धिं सुखजनकताज्ञानं आरोपयति करोति, स खलु जनः धर्मबुद्ध्या इदं पुण्यकार्य्यमिति मत्वा विषलतावनं सिञ्चति जलेनेति शेषः। कुवलयमाला नीलोत्पलस्रक् इति बुद्ध्या, निर्गतस्त्रिंशतः अङ्गुलीभ्यः त्रिंशदङ्गुलीभ्योऽधिकपरिमाण इति निस्त्रिंशस्तरवारिः स लतेव लम्बमानत्वात् तामालिङ्गति। कृष्णागुरोर्धूमलेखा इति बुद्ध्या कृष्णसर्पं दुरन्तविषधरविशेषं अवगूहते आलिङ्गति। रत्नमिति बुद्ध्या ज्वलन्तमङ्गारं वह्नियुक्तं काष्ठं अभिस्पृशति आदत्ते। तथा मृणालमिति बुद्ध्या दुष्टवारणस्य अशिक्षितकुञ्जरस्य दन्तमुषलमुन्मूलयति उन्मूलयितुं प्रवर्त्तते। वस्तुतोऽनिष्टजनकेषु विषयोपभोगेषु सुखजनकतया ज्ञानारोपणं धर्म्मश्रमेण विषलतावनसेचनमिव परिणामे भयङ्करदुःखजनकमित्थं सर्वत्र भावः। अत्र उक्तप्रकारं बिम्बप्रतिबिम्बभावारोपणं विना वाक्यार्थसम्बन्धासम्भवात् मालारूपा निदर्शनालङ्कारः। तथा यच्छब्दान्वित-

বিষয়ে আর বলিবার কি আছে। (ঠ) বল দেখি, এই দুরাচার কন্দর্প, তোমার মনকে লোকের উপহাসাস্পদ করিয়া তুলিতেছে, তুমি অজ্ঞানীর ন্যায় তাহা বুঝিতেছ না কেন? কন্দর্প, মূঢ় ব্যক্তিকেই কষ্ট দিয়া থাকে। (ড) সাধুলোকেরা এই জাতীয় বিষয় সকলকে নিন্দা করিয়া থাকেন, আর মূঢ় লোকেরাই আদর করিয়া থাকে; সুতরাং তোমার ইহাতে সুখের আশাই বা কি আছে? (ঢ) যে মূঢ় ব্যক্তি পরিণামে দুঃখজনক বিষয়-সম্ভোগকে সুখজনক বলিয়া জ্ঞান করে, সে নিশ্চয়ই ধর্মভ্রমে বিষলতার বনকে সিক্ত করে, নীলোৎপলের মালা মনে করিয়া তরবারি আলিঙ্গন করে, কৃষ্ণাগুরুর ধূমের রেখা মনে করিয়া ভয়ঙ্কর সর্পকে

(१) क्वचित् 'कथय किं'मित्यपि न दृश्यते।

(२) विषलतां। (३) अवगूहति। (४) महारत्नमिति।

दुष्टवारणदन्तमुषलं (१) उन्मूलयति, मूढो विषयोपभोगेष्वनिष्टानुबन्धिषु यः (२) सुखबुद्धिमारोपयति (ढ)। अधिगतविषयतत्त्वोऽपि कस्मात् खद्योत इव ज्योतिर्निर्वीर्य्यमिदं (३) ज्ञानमुद्वहसि, (ण) यतो न निवारयसि प्रबल-रजःप्रसरकलुषितानि स्रोतांसीवोन्मार्गप्रस्थितानीन्द्रियाणि, न नियमयसि वा क्षुभितं मनः (त)। कोऽयमनङ्गो नाम, धैर्य्यमवलम्ब्य निर्भर्त्सयतामयं दुराचारः' इत्येवं वदत एव मे वचनमाक्षिप्य प्रतिपक्ष्मान्तरालप्रवृत्तवाष्पवेणिकं प्रमृज्य चक्षुः करतलेन पाणौ (४) मामवलम्ब्यावोचत् (थ)

वाक्यस्य परपाठात "न्यक्कारो ह्ययमेव मे यदरयः" इत्यादिदर्पणोदाहृतवद्वाक्यगतविधेयाविमर्शदोषः, स तु यच्छब्दा-न्वितवाक्यस्य प्राक् पाठात् समाधेयः। एतदनुरूपभावश्लोको यथा साहित्यदर्पणे—

"क्षिपसि शुकं वृषदंशकवदने मृगमर्पयसि मृगादनरदने।
वितरसि तुरगं महिषविषाणे निदधच्चेतो भोगवितानै॥"

(ण) अधीति। अधिगतं ज्ञातं विषयतत्त्वं भोग्यपदार्थस्वभावो येन स तादृशः सन्नपि त्वं, कस्माद्धेतोः, खद्योतो ज्योतिस्तदीयं तेज इव निर्वीर्य्यं सामर्थ्यहीनं मनोविकारदूरीकरणासमर्थं इदं ज्ञानं उद्वहसि। अत्र श्रौत्युपमालङ्कारः, तथा खद्योत उद्वहति त्वन्तु उद्वहसीति पुरुषभेदाद्भग्नप्रक्रमतादोषः "लतेव राजसे तन्वि!" इति दर्पणोदाहृतवत्, स च खद्योतो यथोद्वहति ज्योतिस्तथोद्वहसीति पाठेन समाधेयः।

(त) ननु कथं निर्वीर्य्यमिदं ज्ञानमित्याह यत इति। प्रबलस्य रजसो रजोगुणसम्भूतस्य कामस्य प्रसरेण वेगेन कलुषितानि दूषितानि, अन्यत्र तु प्रबलस्य रजसो धूलेः प्रसरेण विस्तारेण कलुषितानि आविलीकृतानि। न निवारयसि निवारयितुं शक्नोषि। क्षुभितं कामोद्वेलितं मनः न वा नियमयसि नियमयितुं निरोद्धुं शक्नोषि। अतएव तव निर्वीर्य्यमिदं ज्ञानमिति भावः। अत्र पूर्ववाक्ये पूर्णोपमालङ्कारः। कामस्य रजोगुणजन्यत्वमुक्तं भगवद्गीतायां—

"काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।"

(थ)* कोऽयमिति। कोऽयमनङ्गो नाम अतितुच्छ इति भावः। आक्षिप्य आक्रम्य स्ववाक्यं न

জড়াইয়া ধরে, রত্ন জ্ঞান করিয়া জ্বলন্ত কাষ্ঠ গ্রহণ করে, মৃণাল মনে করিয়া দুষ্ট হস্তীর দন্তমুষল উৎপাটন করিতে প্রবৃত্ত হয়। (ণ) তুমি সমস্ত বিষয়ের তত্ত্বই বুঝিয়াছ, তথাপি জোনাকী পোকা যেমন নিজের দুর্ব্বল তেজ বহন করে, তুমিও সেইরূপ-দুর্ব্বল এই জ্ঞান বহন করিতেছ; (ত) যেহেতু—প্রবল-রজোগুণ-জনিত কামবেগে দূষিত এবং স্রোতের ন্যায় উৎপথগামী নিজের ইন্দ্রিয়গুলিকে দমন করিতে পারিতেছ না এবং ক্ষুভিত চিত্তকেও নিরুদ্ধ করিতে পারিতেছ না। (থ) বল দেখি, এই কন্দর্পটা কে!! সুতরাং ধৈর্য্য অবলম্বন করিয়া এই দুরাচারকে ভৎর্সনা কর', আমি এইরূপ বলিতেছিলাম, এই অবস্থায়ই পুণ্ডরীক আমার বাক্যে বাধা দিয়া, নয়নের প্রত্যেক লোমের অন্তরাল হইতে অশ্রুধারা

---

(१)···मुसलं। (२) परिणतिविरसेषु। (३) निवार्य्यमिदं। (४) क्वचित् पाणाविति नास्ति।

"सखे! किं बहुनोक्तेन, (१) सर्वथा सुस्थोऽसि (२)। आशीविषविषवेग-विषमाणामेषां कुसुमचापसायकानां पतितोऽसि न गोचरे, सुखमुपदिश्यति परस्य (द)। यस्य चेन्द्रियाणि सन्ति मनो वा वर्त्तते, (३) यः पश्यति वा शृणोति वा श्रुतमवधारयति वा, यो वा शुभमिदं न शुभमिदमिति विवेक्तुमलं, स खलूपदेशमर्हति। मम तु सर्वमेवेदमतिदूरापेतम् (ध)। अवष्टम्भो ज्ञानं

प्रतिबध्येत्यर्थः। प्रतिपक्ष्मान्तराले प्रत्येकलोममध्ये प्रवृत्ता प्रसृता वाष्पवेणिका अश्रुप्रवाहो यस्य तादृशं चक्षुः प्रमृज्य, करतलेन पाणी मामवलम्ब्य मम पाणिं धृत्वेत्यर्थः।

(द) सख इति। सर्वथा सुस्थोऽसि सर्वप्रकारोत्पातरहितोऽसि, सुतरां धन्यस्त्वमिति भावः। तथा येन हि, आश्यां तालुगतदंष्ट्रायां विषमस्येति आशीविषो विजातीयो भयङ्करः सर्पः, तथा च विषविद्यायां "आशी तालुगता दंष्ट्रा तया दष्टो न जीवति।" तस्य विषवेगवत् विषमाणां दुःसहानां कुसुमचापस्य मदनस्य सायकानां गोचरे विषये न पतितोऽसि, अतएव त्वया परस्य जनस्य सम्बन्धे सुखमनायासं यथा स्यात्तथा उपदिश्यति उपदेष्टुं शक्यते, अन्यथा ममैवावस्था स्यादिति भावः। अत्र वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं छेकानुप्रासयानयोः संसृष्टिः।

(ध) इह खलु चतुर्विधावस्थाः सम्भवन्ति लोकाः केचित् समर्थसर्वेन्द्रियशालिनः, केचित् संसारभाव-वैषम्येण रोगादिना वा किञ्चिद्विकलेन्द्रियाः, केचित् सन्देहाकुलाः, केचिच्च संसारभावातिवैषम्यात् रोगादेर्वा अत्यन्ताकर्म्मण्येन्द्रियाः, तत्राद्ये त्रये उपदेशयोग्यत्वं अन्त्ये तु सर्वथैवोपदेशायोग्यत्वमिति विभज्य प्रति-पादयितुमाह यस्येति। इन्द्रियाणि स्वस्वविषयग्रहणसमर्थानि मनो वा सुस्थमिति च भावः। एतेन समर्थ-सर्वेन्द्रियशालित्वमुक्तं। यो वा जनः पश्यति, उद्वेगेन पित्तदोषादिना वा चक्षुषि किञ्चिद्विकले सत्यपि यथाकथञ्चिद्द्रष्टुं शक्नोति, शृणोति वा उद्वेगेन मलादिना वा कर्णे किञ्चिद्विकले सत्यपि कथञ्चित् श्रोतुमर्हति, श्रुतमवधारयति वा उद्वेगेन व्यापारान्तरेण वा मनसि किञ्चिद्विकले सत्यपि आकर्णितं विषयं अवधारयितुं शक्नोति। एतेन किञ्चिद्विकलेन्द्रियशालित्वमुक्तं। यो वा जनः, इदं कार्य्यं शुभं अथवा इदं न शुभं इति विवेक्तुं विवेचनं कर्त्तुं अलं समर्थः, सन्देहात् परं कस्यचिदुपदेशे सतीति भावः। एतेन सन्देहाकुलत्वमुक्तं। स खलु उक्तत्रिविध एव जनः, उपदेशमर्हति तत्फलसम्भवादिति भावः। तु किन्तु मम इदं इन्द्रियसत्तादिकं

বহিত হইতেছিল; তাই সেই নয়নযুগল মার্জ্জনা করিয়া, হস্তদ্বারা আমার হস্তধারণ করিয়া কহিল।

(ধ) "সখে! অধিক বলিবার প্রয়োজন কি। তুমি সকল রকমেই সুস্থ আছ। বিশেষতঃ, ভয়ঙ্কর সর্পের বিষবেগের ন্যায় অসহ্য এই সকল কাম-বাণের লক্ষ্যে পড় নাই; সেই জন্যই অনায়াসে অন্যকে উপদেশ দিতে পারিতেছ। যাহার ইন্দ্রিয় রহিয়াছে, মনও আছে এবং যে দেখিতে পায় ও শুনিতে পায় অথবা শুনিয়া বুঝিতে পারে, কিংবা যে,

(१) बहुक्तेन। (२) स्वस्थोऽसि। (३) क्वचित् 'मनो वा' इतिमात्रः पाठः, क्वचित् विद्यत इति।

धैर्य्यं प्रतिसंख्यानमित्यस्तमितैषा कथा, कथमप्येवमेवायमविधृतास्तिष्ठन्त्यसवः, दूरातीतः खलूपदेशकालः, समतिक्रान्तो धैर्य्यावसरः, गता प्रतिसंख्यानवेला, अतीतो ज्ञानावष्टम्भसमयः (न)। केन वाऽन्येनास्मिन् समये भवन्तमपहायोपदेष्टव्यम्, उन्मार्गप्रवृत्तिनिवारणं वा करणीयम्, कस्यान्यस्य वचसि मया स्थातव्यम्, को वाऽपरस्त्वत्समो मे जगति बन्धुः (प)। किं करोमि यन्न शक्नोमि निवारयितुमात्मानम्, इयमनेनैव क्षणेन भवता दृष्टा दुष्टावस्था, (१) तद्गत इदानीमुपदेशकालः (फ)। यावत् प्राणिमि तावदस्य कल्पान्तोदित-द्वादश-दिनकर-किरणातप-तीव्रस्य मदनसन्तापस्य प्रतिक्रियां क्रियमाणामि-

---

विवेचनान्तं सर्वमेव, अतिदूरादेतं अतिदूरं गतं, कामावेशादत्यन्ताकर्म्मण्येन्द्रियतया तत्सत्तादिफलाभावादिति भावः। एतेनात्मनश्चतुर्थविधत्व सूक्तम्।

(न) तत्फलमाह अवेति। अवष्टम्भः सतप्रवृत्त्याश्रयः। "अवादौर्ग्रन्थिकटाश्रयेष्विति" स्तम्भः षत्वम्। प्रतिसंख्यानं सदसद्विवेचनम्। अयमविधृता रक्षणप्रवृत्त्यभावेऽपि स्वयमवस्थिताः, असवः प्राणास्तिष्ठन्ति मम देहे विद्यन्ते। एतेनेदानीं प्राणगमनेऽपि न क्षतिरिति सूचितम्। धैर्य्यस्य अवसरः अवलम्बनकालः। प्रतिसंख्यानवेला सदसद्विवेचनसमयः। ज्ञानस्य अवष्टम्भसमयः अवलम्बनकालः।

(प) केनेति वचसि स्थातव्यं वाक्यानुसारेण प्रवर्त्तितव्यं। तत्र हेतुमाह क इत्यादि।

(फ) किमिति। दुष्टावस्था दुर्दशा कामावेशवशादचेतनवन्निष्पन्दमवस्थानम्।

(ब) यावदिति। प्राणिमि जीवामि। कल्पान्ते प्रलयकाले उदिता ये द्वादश दिनकराः सूर्य्यास्तेषां किरणातपवत् मयूखसन्तापवत् तीव्रस्य। प्रतिक्रियामुपशमं क्रियमाणां त्वयैव विधीयमानां। अन्यथा न प्राणिमीति भावः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

'এই বিষয়টা শুভ না অশুভ' ইহা উপদেশ পাইয়া বিবেচনা করিতে পারে, সেই ব্যক্তিই উপদেশের যোগ্য ; কিন্তু আমার এই সমস্তই, অতিদূরে চলিয়া গিয়াছে। (ন) অতএব সৎপথ অবলম্বন করা, জ্ঞান, ধৈর্য্য ও সদসৎ বিবেচনা করা—এই সমস্তের প্রস্তাবই আমার অস্তমিত হইয়াছে ; প্রাণ রাখিবার জন্য যত্ন করিতেছি না, তথাপি কোন প্রকারে এই ভাবেই সে প্রাণ রহিয়া যাইতেছে ; উপদেশের সময়, অতিপূর্ব্বেই চলিয়া গিয়াছে ; ধৈর্য্য-অবলম্বন করিবার সময়ও অতিক্রম করিয়াছে ; সদসৎ বিবেচনা করিবার কালও গিয়াছে এবং জ্ঞান-অবলম্বন করিবার সময়ও অতীত হইয়াছে। (প) এ সময়ে তুমি ভিন্ন অন্য কোন্ ব্যক্তি আমাকে উপদেশ দিবে ? কেই বা অসৎপথ-প্রবৃত্তি হইতে নিবারণ করিবে ? আমিই বা অন্য কাহার বাক্যের অধীন থাকিব ? এই জগতে তোমার তুল্য অন্য বন্ধু আমার কে আছে ? (ফ) কি করিব, কিছুতেই যে মনকে নিবারণ করিতে পারিতেছি না ; এখনই ত তুমি আমার এই দুরবস্থা দেখিয়াছ ; সুতরাং এখন উপদেশের সময় গিয়াছে। (ব) সুতরাং

---

(১) দুষ্টাবস্থা, অবস্থা দুষ্টা।

च्छामि (ब)। पच्यन्त इव मेऽङ्गानि, उत्क्वाथ्यत इव हृदयम्, प्लुष्यत इव दृष्टिः, ज्वलतीव शरीरम् (भ)। अत्र यत् प्राप्तकालं तत् करोतु भवान्" इत्यभिधाय तूष्णीमभवत्। (म)

एवमुक्तोऽपि (१) अहमेनं प्राबोधयं पुनः पुनः। यदा शास्त्रोपदेशविशदैः सनिदर्शनैः सेतिहासैश्च वचोभिः सानुनयं सोपग्रहञ्चाभिधीयमानोऽपि नाकरोत् कर्णे, तदाहमचिन्तयम्—'अतिभूमिमयं गतो न शक्यते निवर्त्तयितुमिति (२) इदानीं निरर्थकाः खलूपदेशाः, तत्प्राणपरिरक्षणेऽपि तावदस्य यत्नमाचरामि'—इति कृतमतिरुत्थाय गत्वा तस्मात् सरसः सरसा मृणालिकाः समुद्धृत्य, कमलिनी-पलाशानि जल-लव-लाञ्छितान्यादाय, (३) गर्भ-धूलि-कषाय-परिमल-मनोहराणि

(भ) तीव्रतापसम्पर्के हि वस्तूनां पाकक्वाथदाहज्वलनाख्याश्चतस्रोऽवस्थाः सम्भवन्ति, मदनतीव्रतापेन क्रमादात्मनस्ताः सर्वा एव प्रदर्शयितुमाह पच्यन्त इत्यादि। प्लुष्यते दह्यते। सर्वत्र मदनतापेनेति योज्यम्।

(म) अत्रेति। प्राप्त उपस्थितः कालो यस्य तत् प्राप्तकालं एतत्कालोचितम्।

(य) एवमिति। शास्त्रोपदेशेन विशदैर्निर्म्मलैः। सनिदर्शनैर्दृष्टान्तसहितैः। सोपग्रहं सानुकूल्यञ्च। अतिभूमिं कामस्य चरमां दशां गतः, अतएव उपदेशमात्रेण निवर्त्तयितुं न शक्यते, इति हेतोः। कृतमतिः कृतधीरहम्। तस्मात् सरसः अच्छोदसरोवरात्। सरसा नूतनत्वादाभ्यन्तरिकद्रवसहिताः जलस्य लवैः कणैः लाञ्छितानि चिह्नितानि व्याप्तानि, अतएव विशिष्टशीतलानीति भावः, कमलिनीपलाशानि पद्मिनीपत्राणि आदाय। गर्भे अभ्यन्तरे या धूलयः परागास्तासां कषायपरिमलैः सुरभिगन्धैर्मनोहराणि, कुसुदानि

যতকাল বাঁচিয়া আছি, তাহার মধ্যে, প্রলয়কালীন উদিত দ্বাদশ সূর্য্যের কিরণ-সন্তাপের ন্যায় অত্যন্ত তীব্র এই মদন-সন্তাপের প্রতীকার কর, আমি তাহাই ইচ্ছা করি। (ভ) মদন-সন্তাপে, আমার অঙ্গগুলি যেন পাক পাইতেছে, হৃদয় হইতে যেন কাথ বাহির হইতেছে, চোখ যেন দগ্ধ হইতেছে এবং শরীর যেন জ্বলিতেছে। (ম) অতএব এখন যাহা উচিত, তুমি তাহাই কর" এই কথা বলিয়া পুণ্ডরীক নীরব হইল।

(য) কিন্তু এইরূপ বলিলেও আমি উহাকে বারবার প্রবোধ দিলাম। যখন শাস্ত্রীয় উপদেশে নির্ম্মল, দৃষ্টান্ত-সমন্বিত ও ইতিহাসসংযুক্ত বাক্যদ্বারা অনুনয় ও আনুকূল্যের সহিত বলিলেও, পুণ্ডরীক তাহা কাণেই তুলিল না; তখন আমি চিন্তা করিলাম—'এ কামের চরম দশায় উপস্থিত হইয়াছে, সুতরাং কেবল উপদেশে ইহাকে নিবৃত্তি করান যাইবে না; অতএব এখন উপদেশ দেওয়া নিরর্থক' এইরূপ স্থির করিয়া উঠিয়া যাইয়া সেই সরোবর হইতে সরস মৃণাল তুলিয়া জল-কণা-ব্যাপ্ত পদ্মপত্র লইয়া এবং অভ্যন্তরস্থ রেণুর তৃপ্তিকর

(१) उक्तोऽपि। (२) क्वचित् इति शब्दो नास्ति। (३) आदाय।

च कुमुद-कुवलय-कमलानि गृहीत्वागत्य तस्मिन्नेव लतागृह-शिलातले शयन-मस्याकल्पयम् (य)। तत्र च सुखनिषण्णस्य प्रत्यासन्नवर्त्तिनां चन्दनविटपिनां (१) मृदूनि किसलयानि निष्पीड्य तेन स्वभावसुरभिणा तुषारशिशिरेण रसेन ललाटिकामकल्पयम्, आचरणादङ्गचर्च्चाञ्चारचयम् (र)। अभ्यर्ण-पादप-स्फुटित-वल्कल-विवर-शीर्णेन च करमञ्चूर्णितेन (२) कर्पूररेणुना स्वेदप्रतीकारं (३) अकरवम् (ल)। उरोनिहितचन्दनद्रवार्द्रवल्कलस्य स्वच्छसलिल-शीकरस्राविणा कदलीदलेन व्यजनक्रियामन्वतिष्ठम् (व)। एवञ्च मुहुर्मुहु-

---

श्वेतोत्पलानि कुवलयानि नीलोत्पलानि कमलानि पद्मानि च तानि। अस्य पुण्डरीकस्य निमित्तं। शयनं शय्याम्।

(र) तत्रेति। किञ्च, प्रत्यासन्नवर्त्तिनां समीपस्थानां चन्दनविटपिनां चन्दनतरूणां। स्वभावेनैव सुरभिणा सौरभवता, तुषारवत् हिमवत् शिशिरेण शीतलेन रसेन निर्य्यासेन करणेन, तत्र मत्कल्पित-शय्यायां सुखनिषण्णस्य सुस्थभावेन स्थितस्य पुण्डरीकस्य ललाटिकां ललाटे तिलकविशेषं। आचरणात् पादादारभ्य अङ्गचर्च्चां गात्रलेपनञ्च अरचयं अकरवम्, शैत्यार्थमिति भावः। अत्र तुषारशिशिरशब्दयोः पर्य्यायतया आपाततः पुनरुक्तताप्रतीतिः परन्तु तुषारवत् शिशिर इत्यर्थपर्य्यवसानात् पुनरुक्तवदाभासोऽलङ्कारः।

(ल) अभ्यर्णेति। अभ्यर्णस्य निकटवर्त्तिनः पादपस्य कर्पूरवृक्षस्य स्फुटितानि स्वयं विदीर्णानि यानि वल्कलानि तेषां विवरेभ्यः शीर्णेन निर्गतेन कराभ्यां पाणिभ्यां सञ्चूर्णितेन निष्पिष्टेन कर्पूररेणुना, स्वेदप्रतीकारं घर्म्मशोषणञ्च अकरवम्।

(व) उर इति। उरसि निहितेन वक्षसि दत्तेन चन्दनद्रवेण आर्द्रं वल्कलं उत्तरीयवल्कलं यस्य तस्य तादृशस्य पुण्डरीकस्याङ्गेष्वित्यर्थः, स्वच्छसलिलशीकरस्राविणा निर्म्मलजलविन्दुवर्षिणा कदलीदलेन, व्यजनक्रियां वायुसञ्चालनं।

সৌরভে মনোহর কতকগুলি শ্বেতোৎপল, নীলোৎপল ও পদ্ম নিয়া ফিরিয়া আসিয়া, লতা-মণ্ডপ-স্থিত সেই প্রস্তর-খণ্ডের উপরেই পুণ্ডরীকের জন্য শয্যা নির্ম্মাণ করিলাম। (র) পুণ্ডরীক তাহার উপরে সুস্থ হইয়া অবস্থান করিতে লাগিল; তখন আমি, নিকটবর্ত্তী চন্দনবৃক্ষের কতকগুলি কোমল পল্লব নিষ্পীড়িত করিয়া, স্বভাবতই সুগন্ধি ও হিমের ন্যায় শীতল সেই রসে পুণ্ডরীকের ললাটে একটি টিপ করিয়া দিলাম এবং চরণ হইতে সমস্ত অঙ্গে সেই রস লেপন করিয়া দিলাম। (ল) এবং নিকটবর্ত্তী কর্পূর-বৃক্ষের বিদীর্ণ বল্কলগুলির ছিদ্র হইতে নির্গত কর্পূরের রেণুগুলিকে হস্তে নিষ্পেষিত করিয়া তাহা দ্বারা পুণ্ডরীকের ঘর্ম্ম শোষণ করিতে লাগিলাম। (ব) পুণ্ডরীকের বুকের উপরে চন্দনের রস লেপিয়া দিয়াছিলাম, তাহাতে উহার উত্তরীয় বল্কলখানা আর্দ্র হইয়া গিয়াছিল, সেই অবস্থায় আবার

---

(१) चन्दनविटपादीनां। (२) करसम्पुटचूर्णितेन। (३) स्वेदप्रतिक्रिया।

रन्यदन्यन्नलिनीदलशयनमुपकल्पयतः, मुहुर्मुहुश्चन्दनचर्च्चामारचयतः, मुहुर्मुहुश्च स्वेदप्रतिक्रियां कुर्वतः, कदलीदलेन चानवरतं वीजयतः समुदभून्मे मनसि चिन्ता—(श) 'नास्ति खल्वसाध्यं नाम भगवतो मनोभुवः। क्वायं हरिण इव वनवासनिरतः स्वभावमुग्धो जनः, क्व च विविध-विलास-रस-राशिर्गन्धर्वराजपुत्री महाश्वेता (ष)। सर्वथा नहि किञ्चिदस्य दुर्घटं दुष्करमनायत्तमकर्त्तव्यं वा जगति। दुरुपपादेष्वप्यर्थेषु (१) अयमवज्ञया विचरति। न चायं केनापि (२) प्रतिकूलयितुं शक्यते (स)। का वा गणना सचेतनेषु, अपगतचेतनान्यपि सङ्घटयितुमलं; (३) यद्यस्मै रोचते, कुमुदिन्यपि दिनकरकरानुरागिणी भवति,

(श) एवमिति। किञ्च, एवमनेन प्रकारेण अन्यदन्यत्, शरीरतापेन पूर्वपूर्वस्य म्लानत्वादिति भावः। नलिनीदलशयनं पद्मिनीपत्रशय्याम्। आरचयतः कुर्वतः, शरीरतापेन पूर्वपूर्वस्याः शुष्कत्वादिति भावः। स्वेद-प्रतिक्रियां घर्म्मशोषणम्।

(ष) नास्तीति। मनोभुवो मदनस्य। स्वभावेनैव मुग्धः सरलचेताः, अयं जनः पुण्डरीकः। विविधानां विलासरसानां विभ्रमभावानां राशिरिव सा तादृशी महाश्वेता च क्व। अत्यन्तविभिन्नप्रकृतिकयोरनयोरपि परस्परभावावेशजननान्मनोभुवः किमप्यसाध्यं नास्तीति भावः। अत्र विरूपयोः सङ्घटनया विषमालङ्कारः श्रौतोपमया सङ्कीर्य्यते।

(स) सर्वथेति। अस्य मनोभुवः। अनायत्तं अनधीनं। अयं मनोभूः, दुरुपपादेष्वपि अन्यै-र्दुष्करेष्वपि, अर्थेषु विषयेषु अवज्ञया अतीवसुकरत्वबोधादवहेलया विचरति प्रवर्त्तते; प्रतिकूलयितुं प्रतिरोद्धुम्।

(ह) केति। सचेतनेषु मनुष्यादिषु। सङ्घटयितुं संयोजयितुं अलं समर्थः, अयं मनोभूरिति शेषः। यदि चेत् अस्मै मनोभुवे रोचते सङ्घटयितुं रुचिर्भवति, तदा कुमुदिन्यपि दिनकरकरानुरागिणी सूर्य्यकिरणानु-

निर्म्मल जलबिन्दুবর্ষী কদলীপত্রদ্বারা ব্যজন করিতেছিলাম। (শ) এই ভাবে, বারংবার নূতন নূতন পদ্মপত্রের শয্যা করিয়া দিতেছিলাম, বারংবার চন্দন লেপিয়া দিতেছিলাম, বারংবার ঘর্ম্মের প্রতীকার করিতেছিলাম এবং কদলীপত্রদ্বারা অনবরত ব্যজন করিতে-ছিলাম—তখন আমার মনে এই চিন্তা উৎপন্ন হইল—(ষ) এই জগতে, ভগবান্ কামদেবের অসাধ্য কিছুই নাই; না হইলে, হরিণের ন্যায় বনবাসে নিরত এবং স্বভাবতই সরল-চিত্ত এই ব্যক্তিই বা কোথায়, আর নানাবিধ বিলাস ও হাব-ভাব-সম্পন্না গন্ধর্ব্বরাজকন্যা মহাশ্বেতাই বা কোথায়। (স) এই জগতে কামদেবের পক্ষে দুর্ঘট, দুষ্কর, অনধীন ও ও অকর্ত্তব্য—এমন কিছুই নাই। ইনি, অন্যের দুষ্কর কার্য্যেও অবজ্ঞাপূর্ব্বক প্রবৃত্ত হইয়া থাকেন। ইঁহাকে কিন্তু কেহই প্রতিরোধ করিতে পারে না। (হ) সচেতন পদার্থের

(१) दुरुपपादेष्वर्थेषु। (२) केनचित्। (३) सङ्घटयितुमलं।

कमलिन्यपि शशिकरद्वेषमुज्झति, निशापि वासरेण सह मिश्रतामेति, ज्योत्स्नाप्यन्धकारमनुवर्त्तते, छायापि प्रदीपाभिमुखमवतिष्ठते, तड़िदपि जलदे स्थिरतां व्रजति, जरापि यौवनेन सञ्चारिणी भवति (ङ)। किंवा तस्य दुःसाध्यमपरम्, एवंविधो येनायमगाधगाम्भीर्य्यसागरस्तृणवल्लघुतां (१) उपनीतः (च)। क्व तत्तपः क्वेयमवस्था। सर्वथा निष्प्रतीकारेयमापदुपस्थिता। किमिदानीं कर्त्तव्यम्, किंवा चेष्टितव्यम्, (२) कां दिशं (३) गन्तव्यम्, किं शरणम्, को वा (४) उपायः, कः सहायः, कः प्रकारः, का युक्तिः, कः समाश्रयः, येनास्यासवः सन्धार्य्यन्ते, (५) (छ)। केन वा कौशलेन, कत-

रक्ता भवतीत्यादि योज्यम्। जरा वार्द्धकमपि यौवनेन सह सञ्चारिणी भवतीत्यर्थः। तथा च एतान्यस्मै न रोचन्ते अतएव कुमुदिन्यादयो दिनकरकरानुरागिण्यादिरूपा न भवन्तीति भावः।

(च) किमिति। येन मनोभुवा एवंविधः अगाधगाम्भीर्य्यसागरः अयं पुण्डरीकः तृणवत् लघुतामुपनीतः प्रापितः, तस्य मनोभुवः अपरं इतोऽन्यत् किं वा दुःसाध्यमस्तीत्यन्वयः, अपि तु किमपि नास्तीत्यर्थः। अतएवार्थापत्तिरलङ्कारः, तथा यच्छब्दान्वितवाक्यस्य परपाठाद्वाक्यगतविधेयाविमर्शदोषः, स च तस्य प्राक्पाठेनैव समाधेयः।

(छ) क्वेति। इयं दृश्यमाना अवस्था अत्यन्तविह्वला दशा। गन्तव्यमिति भावे तव्यप्रत्ययः। कां दिशमिति तु "न कर्त्तृकर्म्मप्राप्ता"विति षष्ठीनिषेधात् कर्म्मणि सामान्यविहिता द्वितीयैव "वैशरोधं न कर्त्तव्यमन्यत्र क्रोधवेगतः" इत्याह्निकतत्त्वोदाहृतवत्। श्रीपतिनाप्युक्तमूर्वे इदमेवोदाहृतं यथा—"आलस्यं यामसुनेनेत्यपि मतं नः। तथा चैन्द्रीं दिशं गन्तव्यमिति।" शरणं रक्षकं। प्रकार एतदापत्प्रतीकारस्य पन्थाः। युक्तिरेतत्प्रतीकाराय मनसि पर्य्यालोचना। समाश्रयः अवलम्बनम्। येन अस्य पुण्डरीकस्य असवः प्राणाः सन्धार्य्यन्ते अवस्थाप्यन्ते मया रक्ष्यन्त इत्यर्थः।

আর কথা কি আছে, অচেতন পদার্থকেও ইনি পরস্পর সংযোজিত করিতে পারেন ; যদি ইঁহার অভিপ্রায় হয়, তাহা হইলে কুমুদিনীও সূর্য্যকিরণের অনুরাগিণী হইতে পারে, পদ্মিনীও চন্দ্রকিরণের প্রতি বিদ্বেষ পরিত্যাগ করিতে পারে, রাত্রিও দিনের সঙ্গে মিশিতে পারে, জ্যোৎস্নাও অন্ধকারের অনুগামী হইতে পারে, ছায়াও প্রদীপের সম্মুখে থাকিতে পারে, বিদ্যুৎও মেঘের উপরে স্থায়িত্ব লাভ করিতে পারে এবং বার্দ্ধক্যও যৌবনের সহচর হইতে পারে। (ক) যিনি, এইরূপ অগাধ গাম্ভীর্য্যের সাগর পুণ্ডরীককে তৃণের ন্যায় লঘু করিয়া তুলিয়াছেন, সেই কামদেবের অন্যই বা অসাধ্য কি আছে। (ক) সেই তপস্যাই বা কোথায়, আর এই অবস্থাই বা কোথায়। সকল প্রকারেই প্রতীকারবিহীন এই বিপদ

(१) तृणलववल्लघुतां। (२) किञ्चाचेष्टितव्यं। (३) दिशं।
(४) कश्च। (५) धार्य्यन्ते।

मया वा युक्त्या, कतरेण वा प्रकारेण, केन वावष्टम्भेन, कया प्रज्ञया, कतमेन वा समाश्वासनेनायं जीवेत्' इत्येतेि चान्ये च मे विषण्णहृदयस्य सङ्कल्पाः प्रादुरासन् (ख)। पुनश्चाचिन्तयम्—'किमनया अत्यन्तायतया (१) निष्प्रयोजनया चिन्तया। प्राणास्तावदस्य येन केनचिदुपायेन शुभेनाशुभेन वा रक्षणीयाः (ग)। तेषाञ्च तत्समागममेकमपहाय नास्त्यपरः संरक्षणोपायः (घ)। बालभावादप्रगल्भतया च तपोविरुद्धमनुचितमुपहासमिव (२) आत्मनो मदनव्यतिकरं मन्यमानो नियतमेकोच्छ्वासावशेषजीवितोऽपि नायं तस्याः स्वयमभिगमनेन पूरयति

(ख) केनेति। युक्त्या पर्य्यालोचनया। प्रकारेण पथा। अवष्टम्भेन उपायावलम्बनेन। प्रज्ञया उद्भावितया बुद्ध्या सङ्कल्पा वितर्काः। प्रादुरासन् आविर्बभूवुः।

(ग) पुनरिति। अत्यन्तायतया अपारत्वादतिदीर्घया। अथ तर्हि विश्रम्यतामित्याह प्राणा इति। रक्षणीया मयेति शेषः। सुतरां तदर्थमुद्यमः कर्त्तव्य इति भावः।

(घ) ननु त्वया कः खलूपायः सम्भाव्यत इत्याह तेषामिति। किञ्च, तस्या महाश्वेतायाः समागमं सङ्गमरूपमेकमुपायमपहाय अपरस्तेषां प्राणानां रक्षणोपायो नास्तीत्यन्वयः।

(ङ) तर्हि पुण्डरीकेन स्वयमेव गत्वा महाश्वेतया सङ्गम्यतामित्याह बालेति। एकएव उच्छ्वासो निश्वासोऽवशेषो यस्य एतादृशं जीवितं यस्य सः गमनोद्यतजीवनोऽपीत्यर्थः, अयं पुण्डरीकः, तपोविरुद्धं अतएव अनुचितं सुतरामेव च उपहासमिव आत्मनः स्वस्य मदनव्यतिकरं इमं कामावेशं मन्यमानः सन् लज्जाकरत्वादिति भावः, बालभावात् शिशुत्वेन पूर्वाभ्यस्तचातुर्य्याभावात्, अप्रगल्भतया प्रत्युत्पन्नधृष्टताभावेन च मुनित्वानूतनरमणीरमणोपयोगिचातुर्य्याभावेन च हेतुनेत्यर्थः, स्वयमात्मनैव गत्वा तस्या महाश्वेताया अभिगमनेन सङ्गमेन मनोरथं न पूरयति न पूरयितुं शक्नोति इति नियतं निश्चितं सुतरामस्य जीवनसंशय एव संवृत्त इति भावः।

উপস্থিত হইয়াছে। এখন আমি কি করি, কিসের চেষ্টা করি, কোন্ দিকে যাই, কাহার শরণ লই, উপায়ই বা কি, সহায়ই বা কে, প্রতীকারের পথই বা কি, কোন্ যুক্তি অবলম্বন করি এবং কাহারই বা আশ্রয় লই ; যাহাতে ইহার প্রাণ রক্ষা করিতে পারি। (খ) কোন্ কৌশলে, কোন্ যুক্তিতে, কোন্ প্রকারে কি অবলম্বনে, কোন্ বুদ্ধিতে এবং কোন্ আশ্বাসে, এ, রক্ষা পাইবে' এই রকম ও অন্যান্য অনেক রকম চিন্তা আমার বিষণ্ণচিত্তে উপস্থিত হইতে লাগিল। (গ) এবং পুনরায় চিন্তা করিতে লাগিলাম—অত্যন্ত দীর্ঘ অথচ নিষ্প্রয়োজন এই চিন্তা করিয়া লাভ কি ?। শুভই হউক বা অশুভই হউক, যে কোন উপায়ে ইহার প্রাণরক্ষা করিতেই হইবে। (ঘ) কিন্তু একমাত্র মহাশ্বেতার সম্মিলন ব্যতীত ইহার প্রাণরক্ষার অন্য উপায় নাই। (ঙ) একটি নিশ্বাস পরিত্যাগ মাত্র ইহার জীবনের অবশিষ্ট

(१) ध्यातया। (२) उपनतमुपहासमिव।

मनोरथम् (ङ)। अकालान्तरक्षमश्चायमस्य मदनविकारः (च)। सततमतिगर्हितेनाकृत्येनापि (१) रक्षणीयान् (२) मन्यन्ते सुहृदसून् साधवः। तदतिह्रेपणमकर्त्तव्यमप्येतदस्माकमवश्यकर्त्तव्यतामापतितम् (छ)। किञ्चान्यत् क्रियते, का चान्या गतिः, सर्वथा प्रयामि तस्याः सकाशम्, आवेदयाम्येतामवस्थाम्' इति चिन्तयित्वा च (३) कदाचिदनुचितप्रवृत्तं मां विज्ञाय सञ्जातलज्जो निवारयेदित्यनिवेद्यैव तस्मै तत्प्रदेशात् सव्याजमुत्थायागतोऽहम् (ज)। तदेवमवस्थिते यदत्रावसरप्राप्तम् ईदृशस्य चानुरागस्य सदृशम्, अस्मदागमनस्य

(च) अथ काले सर्वस्यैव लोपदर्शनात् कञ्चित् कालं प्रतीक्षतां स्वयमेवेयं मदनवेदना लोपं यास्यतीत्याह अकालेति। अकालान्तरक्षमः कालविलम्बासहः। सुतरामविलम्बमेवास्य प्रतीकाराय मया यतितव्यमिति भावः। एतदनुरूपं वाक्यं यथा शाकुन्तले—"दूरगतमन्मथा अक्षमेयं कालहरणस्य।"

(छ) इदानीं प्रतीकारायात्मन एव प्रवर्त्तनमुचितमित्यभिधातुं तत्र साधुसम्मतिमाह सततमिति। अकृत्येन अतिगर्हितत्वादेव अकर्त्तव्येन कर्म्मणा नापि उपायेन। तत्तस्मात्, अतिह्रेपणं अत्यन्तलज्जाकरं अकर्त्तव्यमपि मुनित्वादिति भावः, एतत् महाश्वेतया सह पुण्डरीकस्य सङ्गमनं। आपतितं प्राप्तम्।

(ज) किञ्चेति। तस्याः महाश्वेतायाः। अनुचिते कर्म्मणि प्रवृत्तः स तथोक्तस्तं। सञ्जातलज्जः पुण्डरीक इति शेषः, निवारयेत् भवत्या अन्तिकमागन्तुं निषेधेत्, इति हेतोः। तस्मै पुण्डरीकाय। सव्याजं पुष्पाहरणादिव्याजसहितं यथा स्यात्तथा।

(झ) तदिति। तत्तस्मात् एवमवस्थिते इत्यम्भूते वृत्तान्ते। अवसरप्राप्तं एतत्कालोचितम्। ईदृशस्य

রহিয়াছে তথাপি এ, তপস্থার বিরুদ্ধ বলিয়া অনুচিত নিজের কামবিকারকে উপহাসের ন্যায় মনে করিয়া, বালকতাবশতঃ ও চতুরতা নাই বলিয়া, নিজেই যাইয়া মহাশ্বেতার সহিত মিলিত হইয়া নিশ্চয়ই অভিলাষ পূর্ণ করিতে পারিবে না। (চ) অথচ ইহার এই কামবিকার আর বিলম্ব সহিতে পারিতেছে না। (ছ) অত্যন্ত গর্হিত এবং অকর্ত্তব্য হইলেও যে কোন উপায়ে বন্ধুর প্রাণরক্ষা করা উচিত—সাধুগণ এইরূপ মনে করিয়া থাকেন; অতএব অত্যন্ত লজ্জাকর এবং অকর্ত্তব্য হইলেও এই কার্য্য আমার অবশ্যই করিতে হইবে। (জ) অন্য আর কি করিব, অন্য উপায়ই বা কি আছে; নিশ্চয়ই মহাশ্বেতার নিকটেই যাই, যাইয়া এই অবস্থা জানাই' এইরূপ চিন্তা করিয়া আবার ভাবিলাম—'আমি অসঙ্গত কার্য্যে প্রবৃত্ত হইয়াছি, ইহা জানিয়া হয় ত পুণ্ডরীক, আমাকে আসিতে নিষেধ করিবে; এই জন্য তাহাকে না জানাইয়াই আমি কোন ছল করিয়া সে স্থান হইতে উঠিয়া আসিয়াছি। (ঝ) অতএব এইরূপ ঘটনায় এখন যাহা উচিত, এই জাতীয় অনুরাগের যাহা যোগ্য, আমার আগমনের পক্ষে যাহা সঙ্গত এবং নিজেরও যাহা উচিত, আপনি তাহাই করিতে পারেন" এই

(१) कृत्येनापि। (२) परिरक्षणीयान्। (३) क्वचित् चकारो नास्ति।

चानुरूपम्, आत्मनो वा समुचितम्, तत्र प्रभवति भवती” इत्यभिधाय किमियं वच्यतीति मन्मुखासक्तदृष्टिस्तूष्णीमासीत्। (झ)

अहन्तु तदाकर्ण्य सुखामृतमये ह्रद इव निमग्ना, रतिरसमयमुदधिमिवावतीर्णा, सर्वानन्दानामुपरि वर्त्तमाना, सर्वमनोरथानामग्रमिवाधिरूढ़ा, सर्वोत्सवानामतिभूमिमिवाधिशयाना, तत्कालोपजातया लज्जया किञ्चिदवनम्यमानवदनत्वादस्पृष्टकपोलोदरैः ग्रथितैरिवोपर्य्युपरि पतनानुबन्धदर्शितमालाक्रमैः, अप्राप्तपक्ष्मसंश्लेषतया उपजातप्रथिमभरैरमलैरानन्दवाष्पजलबिन्दुभिः स्रवद्भिराविर्भूयमानप्रहर्षप्रसरा, (१) तत्क्षणमचिन्तयम् (ञ)। ‘दिष्ट्या तावदयमनङ्गो मामिव

परां काष्ठां गतस्येत्यर्थः। सदृशं योग्यं। तत्र कार्य्ये भवती त्वं प्रभवति समर्था भवति, इच्छा चेत् तत् कर्त्तुमर्हतीत्यर्थः। एतेन भवत्यैव गत्वा पुण्डरीकेण सह सङ्गम्यतामिति व्यज्यत इति वस्तुना वस्तुध्वनिः।

(ञ) अहमिति। सुखमेव अमृतं पीयूषं तन्मये ह्रदे निमग्नेव। अत्र निरङ्गकेवलरूपकक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। रतिरनुराग एव रसो जलं तन्मयमुदधिं अवतीर्णेव, तस्यापि तादृशानुरागश्रवणेन ममानुरागस्य शतधा प्रज्वलनादिति भावः। अत्रापि पूर्ववदलङ्कारः, तथा शृङ्गारस्थायिभावस्य रतेः स्वशब्देनैवोपादानात् स्थायिनः स्वशब्दवाच्यतादोषः, स च आह्लादमयमिति पाठेन समाधेयः। वर्त्तमाना विद्यमानेव। अत्र प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। अग्रमधिरूढ़ेव। अत्र वाच्या क्रियोत्प्रेक्षा। अतिभूमिं सर्वोपरिस्थानं अधिशयाना अधितिष्ठन्तीव। वाच्या क्रियोत्प्रेक्षा। किञ्चिदवनम्यमानं वदनं यस्यास्तस्या भावस्तत्त्वं तस्माद्धेतोः न स्पृष्टे कपोलयोरुदरे मध्यभागौ यैस्तैः, पतनानुबन्धेन पूर्वपूर्वस्य परपरवर्त्तिनः अविच्छिन्नपतनानुसरणेन दर्शितो मालायाः क्रमः परस्परसंलग्नतारूपा परिपाटी यैस्तैः, अतएव उपर्य्युपरि ग्रथितैरिव स्थितैः। अत्र वाच्या क्रियोत्प्रेक्षा। न प्राप्तः मुखस्यावनततया सरलाधःपतनात् न लब्धः पक्ष्मसु नेत्रलोमसु संश्लेषः संयोगो यैस्तेषां भावस्तया हेतुना, उपजातः प्रथिमभरः स्थूलतातिशयो येषां तैः, अन्यत्र तु अश्रुबिन्दूनां पक्ष्मभिर्विभक्ततया क्षुद्रत्वं स्यादिति भावः। आविर्भूयमानः रूप्यमानः प्रहर्षप्रसरः प्रकृष्टानन्दातिशयो यस्याः सा।

কথা বলিয়া কপিঞ্জল, ‘ইনি কি বলেন’ এই জন্য আমার মুখে দৃষ্টি সংলগ্ন করিয়া নীরব হইয়া রহিলেন।

(ঞ) কিন্তু আমি সেই সকল কথা শুনিয়া, সুখরূপ অমৃতের হ্রদেই যেন নিমগ্ন হইলাম, অনুরাগরূপ জলের সমুদ্রেই যেন অবগাহন করিলাম, সকল প্রকার আনন্দের উপরেই যেন অবস্থান করিতে লাগিলাম, সকল আশার উপরেই যেন আরোহণ করিলাম এবং সকল উৎসবের চরম সীমায়ই যেন অধিষ্ঠান করিতে লাগিলাম; তখন লজ্জা উৎপন্ন হইয়া আমার মুখমণ্ডলকে ঈষৎ অবনত করিয়া দিল; সেই জন্য, নির্ম্মল আনন্দাশ্রু-বিন্দুগুলি, কপোলযুগলের মধ্যভাগ স্পর্শ না করিয়া, অবিচ্ছিন্ন-পতন-অনুসারে মালার পরিপাটী দেখাইয়া, পর পর যেন গ্রথিত হইয়া এবং নয়নের লোমে সংযুক্ত না হওয়ায় অত্যন্ত স্থূল হইয়া পড়িতে লাগিল;

---

(१)…प्रसन्ना।

तमप्यनुबध्नाति, यत्सत्यमनेन (१) मे सन्तापयताप्यंशेन (२) दर्शितानु-कूलता (ट)। यदि च सत्यमेव तस्येदृशी दशा वर्त्तते, (३) ततः किमिव नोपकृतमनेन, किं वा नोपपादितम्, को वानेनापरः समानो बन्धुः (ठ)। कथं वा कपिञ्जलस्य स्वप्नेऽपि वितथा भारती प्रशान्ताकृतेरस्माद्वदनान्नि-ष्क्रामति (ड)। इत्थम्भूते किं मयापि प्रतिपत्तव्यम्? तस्य वा पुरः किमभि-धातव्यम्?' इत्येवं विचारयन्त्या एव प्रविश्य ससम्भ्रमा प्रतीहारी मामकथयत्—"भर्त्तृदारिके! त्वमसुस्थशरीरेति (४) परिजनादुपलभ्य महादेवी प्राप्ता" इति (ढ)। तच्च श्रुत्वा कपिञ्जलो महाजनसम्मर्द्दभीरुः सत्वरमुत्थाय

(ट) दिष्ट्येति। दिष्ट्या भाग्येन। तं पुण्डरीकमपि अनुबध्नाति अनुसरति आविशतीत्यर्थः। अतएव मां सन्तापयतापि अनेन मदनेन मे मम अंशेन यत् सत्यं अनुकूलता दर्शिता, नतु साकल्येन, अथापि सङ्गमाभावादिति भावः। यत्सत्यमित्येकमेव पदं दर्शितेति क्रियाया विशेषणम्।

(ठ) यदीति। तस्य पुण्डरीकस्य ईदृशी कपिञ्जलोक्तप्रकारा। अनेन मदनेन। उपपादितं सम्पादितं। अनेन मदनेन समानः अपरः को वा मम बन्धुः, अपि तु कोऽपि नेत्यर्थः, अनेनैव मनाशायाः पूरितप्रायत्वादिति भावः।

(ड) ननु कपिञ्जलवचनस्य सत्यत्वे किं प्रमाणमित्याह कथमिति। प्रशान्ताकृतेः अवतारणानुचक्र-सौम्यमूर्त्तेः कपिञ्जलस्य अस्माद्वदनात् स्वप्नेऽपि कथं वितथा मिथ्या भारती निष्क्रामति कथमपि नेत्यर्थः। अस्य प्रशान्ताकृतिरेव वाक्यस्य सत्यत्वे प्रमाणं, ईदृशाकृतेः कदाचिदपि मिथ्यावचनाश्रवणादिति भावः।

(ढ) इत्थमिति। इत्थम्भूते वृत्तान्ते इति शेषः। प्रतिपत्तव्यं अङ्गीकर्त्तव्यम्। तस्य पुरो वा पुण्डरी-कस्य समीपे वा किमभिधातव्यं गत्वा वक्तव्यं, अथवा वाचिकं प्रेषयितव्यम्। इत्येवं विचारयन्त्या एव मम गृहे इति शेषः। उपलभ्य ज्ञात्वा। महादेवी गन्धर्वराजमहिषी महाश्वेताया माता।

সুতরাং সেই অশ্রুবিন্দুগুলি, আমার অত্যন্ত আনন্দের সূচনা করিতেছিল—এই অবস্থায় তখন আমি চিন্তা করিতে লাগিলাম। (ট) সৌভাগ্যবশতই এই কন্দর্প, আমার ন্যায় তাঁহারও অনুসরণ করিতেছেন; অতএব সত্যই ইনি, আমাকে সন্তপ্ত করিয়াও, কোন অংশে আমার আনুকূল্য দেখাইয়াছেন। (ঠ) যদি সত্যই, তাঁহার এইরূপ অবস্থা হইয়া থাকে, তবে কামদেব আমার কোন্ উপকার না করিলেন, কোন্ কার্য্যই বা সম্পাদন না করিলেন এবং কামদেবের তুল্য অন্য বন্ধুই বা আমার কে আছে? (ড) শান্তমূর্ত্তি কপিঞ্জলের মুখ হইতে স্বপ্নেই বা মিথ্যা বাক্য নির্গত হইবে কেন? (ঢ) এই জাতীয় ঘটনায় আমিই বা কি অঙ্গীকার করি? তাঁহার নিকটেই বা কি বলিয়া পাঠাই? আমি মনে মনে এইরূপ বিতর্ক

(१) एतेन। (२) क्रियताप्यंशेन। (३) क्वचित् वर्त्तते इति नास्ति।
(४) अस्वस्थशरीरेति।

"राजपुत्रि ! महानयमुपस्थितः कालातिपातः । भगवांश्च भुवनत्रयचूडामणिरस्तमुपगच्छति दिवसकरः । तद्गच्छामि । सर्वथाभिमत-सुहृत्-प्राण-रक्षा-दक्षिणार्थमयमुपरचितोऽञ्जलिः, एष मे परमो विभवः" इत्यभिधाय प्रतिवचनकालमप्रतीक्ष्यैव पुरोयायिना अम्बायाः प्रविशता कनकवेत्रलताकरेण प्रतीहारीजनेन काञ्चुकिलोकेन गृहीत-(१) ताम्बूल कुसुम-पटवासाङ्गरागेण चामरव्यग्रपाणिना कुब्ज-किरात-बधिर-वामन-वर्षवर-(२) विकलमूकानुगतेन (३) परिजनेन सर्वतः संरुद्धे द्वारदेशे कथमप्यवाप्तनिर्गमः प्रययौ (ण)। अम्बा तु मत्-

(ण) सर्वेति। महतो जनसम्मर्दात् महादेव्या सहागतानां लोकानां अत्यन्तात् सङ्घर्षात् भीरुधर्मशीलः, वनेषु प्रायेणैकाकिन एवावस्थानादिति भावः। कालातिपातः समयविलम्बः, तव तत्र गन्तुमिच्छायां सत्यामपि महादेव्यामप्रस्थितायां तदसम्भवादिति भावः। सर्वथैव अभिमतस्य मनोमतस्य सुहृदः प्राणरक्षाया दक्षिणार्थं अयमञ्जलिः उपरचितः कृतः। एष अञ्जलिरचनारूप एव मे मम परमो विभवः सम्पत्तिः, इत उत्कृष्टं तपस्विनो मे धनं नास्ति यत्तुभ्यं दातव्यमिति भावः। अम्बायाः पुरोयायिना अग्रगामिना सता प्रविशतेत्यर्थः। कनकवेत्रलता स्वर्णखचिता वेत्रयष्टिः करे यस्य तेन। गृहीताः ताम्बूलं कुसुमं पटवासः पिष्टातकः अङ्गरागः अङ्गविलेपनद्रव्यञ्च ते येन तेन, चामरेण व्यग्रो व्यासक्तः पाणिर्यस्य तेन। कुब्जा वक्रदेहाः, किराताः कृशदेहाः, बधिराः श्रवणशक्तिहीनाः, वामनाः खर्वाकृतयः, वर्षवराः क्लीबाः, विकला विकृताङ्गाः, मूका वाक्शक्तिविहीनाश्च जनास्तैरनुगतेन। कथमपि कष्टेन अवाप्तो लब्धः निर्गमो निर्गमनमार्गो येन स तादृशः कपिञ्जलः। एतेन जनसङ्घर्षबाहुल्यान्निर्गच्छन्तमपि कपिञ्जलं कोऽपि न ज्ञातवानिति सूचितम्।

করিতেছিলাম—এমন সময়ে প্রতিহারী আমার গৃহমধ্যে তাড়াতাড়ি প্রবেশ করিয়া আসিয়া আমাকে কহিল—রাজকন্যে! আপনার শরীর অসুস্থ হইয়াছে, ইহা পরিজনবর্গের নিকট জানিয়া মহারাণী উপস্থিত হইয়াছেন।' (ণ) এই কথা শুনিয়া কপিঞ্জল, অত্যন্ত লোক-সঙ্ঘর্ষের ভয়ে তাড়াতাড়ি উঠিয়া বলিলেন—"রাজকন্যে! এই গুরুতর কালবিলম্ব উপস্থিত হইয়াছে। এদিকে, ত্রিভুবনের চূড়ামণি ভগবান্ সূর্য্যও, অস্তে যাইতেছেন। অতএব আমি চলিলাম। সর্ব্বপ্রকারে মনোমত বন্ধুর প্রাণ-রক্ষার দক্ষিণার জন্য এই হাত জোড় করিতেছি; এইমাত্রই আমার পরম ধন" এই কথা বলিয়া, প্রত্যুত্তরের সময় প্রতীক্ষা না করিয়াই তিনি দ্বারদেশে কোনপ্রকারে নির্গমনের পথ পাইয়া চলিয়া গেলেন; কারণ, স্বর্ণখচিত বেত্রযষ্টিধারী প্রতীহারিগণ, কঞ্চুকিগণ এবং তাম্বূল, পুষ্প, আবীর ও অঙ্গলেপনদ্রব্য লইয়া চামরহস্ত পরিজনবর্গ, মাতৃদেবীর অগ্রে অগ্রে প্রবেশ করিতেছিল এবং তাহাদের পশ্চাৎ পশ্চাৎ কুব্জ, কৃশদেহ, বধির, বামনবীর, নপুংসক, বিকলাঙ্গ ও মূকগণ আসিতেছিল; তাহাতে

(१) आगृहीत...। (२)...वर्षर...। (३)...कलमूकानुवीतेन।